





अजन्ता गुफा



सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)
जुलाई-सितम्बर, 2019

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली



अतुल्य भारत

जुलाई-सितम्बर, 2019



अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

- संरक्षक : श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- संपादक : श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा),
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रबंध-संपादक : श्री मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय
- अन्य सहयोगी : श्री राज कुमार

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं।
पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,

कमरा नं. 18, सी-1 हटमेंट्स,

दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011

ई-मेल— editor.atulyabharat@gmail.com

दूरभाष 011-23015594

डॉलफिन प्रिन्टो-ग्राफिक्स

झण्डेवालान एक्सटेंशन

नई दिल्ली से मुद्रित

011-23593541-42

पर्यटन से संबंधित सूचनाओं के प्रसार हेतु निःशुल्क वितरण

अब की बार पढ़िए...

वर्ष 5 अंक 17
जुलाई-सितम्बर, 2019

संपादक की
कलम से...



05

चेट्टिनाड : मालामाल गांव

07



भोजेश्वर मंदिर

23



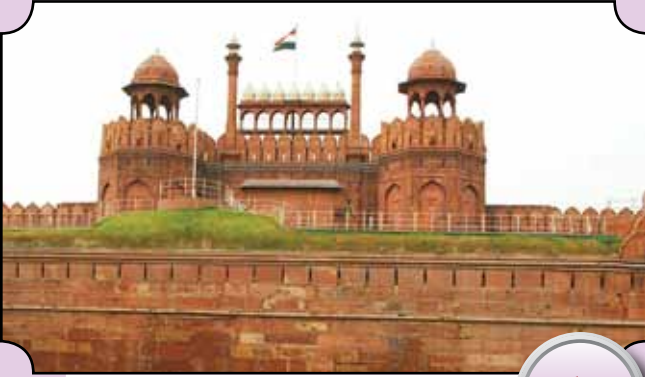
भारत का पहला
चिरासत नगर

30

हुमायूँ का मकबरा

45





दिल्ली का लाल किला

53



एलीफेन्टा

60



द्रविड़ वास्तुकला के अवशेष :
मामल्लापुरम

65



मानसरोवर यात्रा

72



आतिथ्य क्षेत्र को चाहिए
एक बड़ा प्रोत्साहन

79

याद इन्हें भी कर लें

81



पर्यटन मंत्रालय की सचित्र
गतिविधियाँ एवं समाचार

85



परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...



हम सब के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'अतुल्य भारत' अब पांचवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। किसी सरकारी पत्रिका के लिए यह वास्तव में ही एक गर्व की बात है। 'अतुल्य भारत' का 17वां अंक विरासत पर्यटन के अंक के रूप में आपके सामने हैं। पर्यटन मंत्रालय द्वारा देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों में "अतुल्य भारत" पत्रिका भी एक कड़ी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। इस प्रयास में कई जाने माने लेखक तथा ब्लॉगर इस पत्रिका से जुड़ कर भारतीय पर्यटन को एक नई दिशा प्रदान करने में अपना योगदान कर हैं। इसके अलावा हम मंत्रालय के उन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के भी आभारी हैं जो इस क्षेत्र में भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए अपनी लेखन प्रतिभा प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस अंक में श्री के.दिनाकरण ने अपने लेख 'मालामाल : चेट्टिनाड' के माध्यम से तमिलनाडु के कारैक्कुडि में स्थित चेट्टिनाड की विरासती परम्पराओं, उसकी वास्तुकला, खानपान और भारतीय फिल्म उद्योग द्वारा वहां के विरासती स्थानों का उपयोग करने के बारे में मनोरंजक जानकारी प्रदान की है।

देश के पंसदीदा पर्यटन स्थलों में भोपाल का अपना अलग ही महत्व है। शहर के दिलचस्प इतिहास और पर्यटन स्थलों के मॉडर्न आउटलुक मिश्रण के बारे में आपने पिछले अंक में पढ़ा था। इस कड़ी में अब की बार श्री कृष्ण वीर सिंह सिकरवार ने अपने आलेख 'भोपाल-2 निकटवर्ती पर्यटन स्थल' के द्वारा भोपाल के आस पास के कुछ कम ज्ञात कुछ खास विरासती और ऐतिहासिक स्थलों, अभयारण्यों जैसे पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों को जाने के लिए प्रेरित करते हुए, तथ्यात्मक जानकारी प्रस्तुत की है।

गुजरात का 600 साल से भी अधिक पुराना ऐतिहासिक शहर अहमदाबाद अब विश्व विरासत शहर है। एक लम्बे समय से जारी मेहनत आखिरकार शनिवार 8 जुलाई, 2017 को रंग लाई और पोलैंड के क्रेको शहर में 'वर्ल्ड हैरिटेज कमेटी' (WHC) ने अपनी 41वीं बैठक में अहमदाबाद को "वर्ल्ड हैरिटेज सिटी" का दर्जा प्रदान करते हुए इसे भारत का पहला विश्व धरोहर शहर घोषित किया था। ऐसे पर्यटक जो एक समृद्ध इतिहास की खोज में रहते हैं उनके लिए इस शहर के ऐतिहासिक स्मारक आकर्षण के बड़े केन्द्र हैं। सुश्री सन्तोष सिल्योकर ने अपने लेख 'भारत का विरासत नगर-अहमदाबाद' में इसकी जानकारी दी है।

देश के इतिहास और संस्कृति में द्रविड़ सभ्यता का विशेष उल्लेख पाया जाता है। तमिलनाडु में मामल्लापुरम को अपनी परंपरा, समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। सुरम्य समुद्र तट पर एक समृद्ध वास्तुकला को समेटे देश के विरासती प्राचीन मंदिर इस स्थान को पर्यटकों के लिए एक





महत्वपूर्ण गंतव्य बनाते हैं। इस दिलचस्प पर्यटन स्थल के बारे में अनिरुद्ध सिंह ने अपने लेख 'द्रविड़ वास्तुकला के अवशेष : मामल्लापुरम' के माध्यम इस विरासत के बारे में जानकारी दी है।

देश की आर्थिक राजधानी कहे जाने वाले शहर मुम्बई से समुद्र में लगभग 11 कि.मी. उत्तर पूर्व की ओर एक छोटा सा द्वीप है। यहां स्थित एलिफेंटा की गुफाएं पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण केन्द्र हैं। एलिफेंटा की गुफाएं पौराणिक देवताओं की अत्यन्त भव्य मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें विश्व विरासत की श्रेणी में रखा गया है। एलिफेंटा की इन गुफाओं के इस महत्वपूर्ण पर्यटन गंतव्य के बारे में श्री विजय कुमार ने जानकारी प्रदान की है।

देश की राजधानी दिल्ली में विश्व विरासत स्थलों में हुमायूं का मकबरा और लाल किला दो महत्वपूर्ण स्मारक हैं। इतिहास के मध्य काल में बनी दोनों इमारतों का कोई सानी नहीं है। अपनी विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध हुमायूं के मकबरा के बारे में श्री राजेन्द्र सिंह मनराल और लाल किला के बारे में श्री भोपाल सिंह ने जानकारी प्रस्तुत की है।

कैलाश मानसरोवर की यात्रा एक दुर्गम यात्रा मानी जाती है। अपनी मानसरोवर यात्रा के बारे में श्री विनीत सोनी ने तथ्यात्मक जानकारी प्रदान की है। आपको उनका लेख दो अंकों में पढ़ने का अवसर मिलेगा। पर्यटन के क्षेत्र में आतिथ्य का अपना अलग महत्व है। इस विषय पर श्री रितेश अग्रवाल का एक लेख भी शामिल किया गया है।

इनके अलावा कीर्ति दीक्षित तथा डॉ. विश्वरंजन द्वारा लिखित दो कविताएं भी इस अंक में शामिल की गई हैं। इस तिमाही में काल के क्रूर हाथों ने देश के कुछ प्रसिद्ध नेताओं और कलाकारों को हमसे दूर कर दिया। इस अंक में सुषमा स्वराज, अरुण जेटली, संगीतकार खय्याम के साथ कलाकार विद्या सिंहा और वीजू खोटे को इस अंक में याद किया गया है।

इनके अलावा, इसमें पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और समाचार भी प्रस्तुत किए गए हैं। पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और "अतुल्य भारत" पत्रिका निश्चित रूप से इसमें अपना योगदान दे रही है।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहित करने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं जिनके प्रोत्साहन और विचारों से हमें हर बार एक नई उर्जा मिलती है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।।

मैं उन सभी लेखकों, सुधि पाठकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद करते हुए प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। मुझे आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक



चेट्टीनाड : मालामाल गांव

—के.दिनाकरण

आज फिल्में हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गई हैं। पर्यटन के रूप में आजकल एक और नया ट्रेंड चल निकला है कि लोग फिल्मों के शूटिंग स्थलों को देखने के लिए आने लगे हैं। हम इसे film tourism का नाम दे सकते हैं। फिल्में बनाना कोई इतना आसान काम नहीं है। चूंकि फिल्म मनोरंजन का साधन है। इसलिए फिल्में बनाते समय कई बातों का ध्यान रखना होता है, जैसे फिल्म गांव पर बनी है तो वहां नदी झरने, पहाड़ वगैरह यानि सुन्दर दृश्य दिखाने जरूरी होते हैं। एक फिल्म बनाने में पर्दे के पीछे एक बहुत बड़ी टीम काम करती है। इस में एक और व्यक्ति होता है जिसे लोकेशन मैनेजर कहा जाता है। फिल्म आइए हम आपको एक कामेडी फिल्म मालामाल वीकली के शूटिंग स्थानों के बारे में बताते हैं। यह पूरी फिल्म तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के एक शहर चेट्टीनाड और उसके आसपास शूट की गई थी। आज मैं “अतुल्य भारत” के पाठकों को चेट्टीनाड के पर्यटन के बारे में बता रहा हूं। सबसे पहले बात करते हैं “मालामाल वीकली” की और उसके बाद.. चेट्टीनाड की विरासत की बात करेंगे...

फिल्म मालामाल वीकली लाहौली नाम के एक गांव की कहानी की है, जिसमें ज्यादातर ग्रामीणों के घर स्थानीय ठाकुरानी करमकली (सुधा चन्द्रन) के पास गिरवी है। लीलाराम (परेश रावल) ही गांव का अकेला पढ़ा-लिखा आदमी है। वह लॉटरी बेचने का काम करता है और जब किसी की लॉटरी लगती है तो उसे कमीशन मिलता है। एक दिन लॉटरियों के नम्बर देखते हुए, उसे पता लगता है कि उसकी बेची

टिकटों में किसी को एक करोड़ का इनाम मिला है। अब वह इनाम पाने वाले का पता लगाने के लिए अपनी पत्नी के पालतू बकरे को गिरवी रख कर दावत देता है। गांव के सभी लोग आते हैं लेकिन एक व्यक्ति एंथोनी नहीं आता है। वह उसके घर आता है और देखता है कि एंथोनी नशे में है और वह टिकट हाथ में लिए मुस्करा रहा है। उसे पता लगता है कि एंथोनी मर चुका है। लीलाराम एंथोनी की उंगलियों से टिकट निकालने की कोशिश में हाथ में चाकू उठाता है कि उसी समय गांव का दूध वाला बल्लू (ओम पुरी) आ जाता है और समझता है कि लीला ने एंथोनी को मार डाला है। लीला बल्लू को सच्चाई बताकर लॉटरी का इनाम आपस में बांट लेने के बदले में चुप रहने को राजी कर लेता है।

लेकिन एंथोनी की मृत्यु होने से पहले ही उसने लॉटरी आफिस को फोन करके अपना नाम और पता बता दिया था। इस बात का पूरे गांव को पता लग जाता है। इस बात को गुप्त रखने के लिए लीला बल्लू को एंथोनी बना देता है। लॉटरी इंस्पेक्टर (अरबाज खान) एंथोनी के टिकट की जांच करने आता है और बल्लू को एंथोनी जानकर संतुष्ट हो जाता है। उधर ठाकुरानी के भाई बाजे (राजपाल यादव) को एंथोनी की मृत्यु और गांव वालों की गुप्त योजना का पता लग जाता है। कुछ दिनों के बाद लॉटरी इंस्पेक्टर गांव में आकर बल्लू को एक करोड़ रुपए का डिमांड ड्राफ्ट देता है। जब वह वापस जाता है, तो ठाकुरानी और बाजे हकीकत बताने के लिए उसके पीछे भागते हैं। अचानक लॉटरी इंस्पेक्टर की कार ठाकुरानी की



मोटर साइकिल से टकराती है और ठाकुरानी नदी में गिरकर मर जाती है। गांव के लोग इंस्पेक्टर को एक शर्त पर जाने देते हैं कि वह यह बात किसी को नहीं

बताएगा और दोबारा कभी इस गांव की तरफ नहीं आएगा। फिल्म के अंत में सभी मालामाल हो जाते हैं।



इसे लीला का घर दिखाया गया है



एंथनी के घर का आंगन/इस स्थान पर बल्लू छत से गिरता है



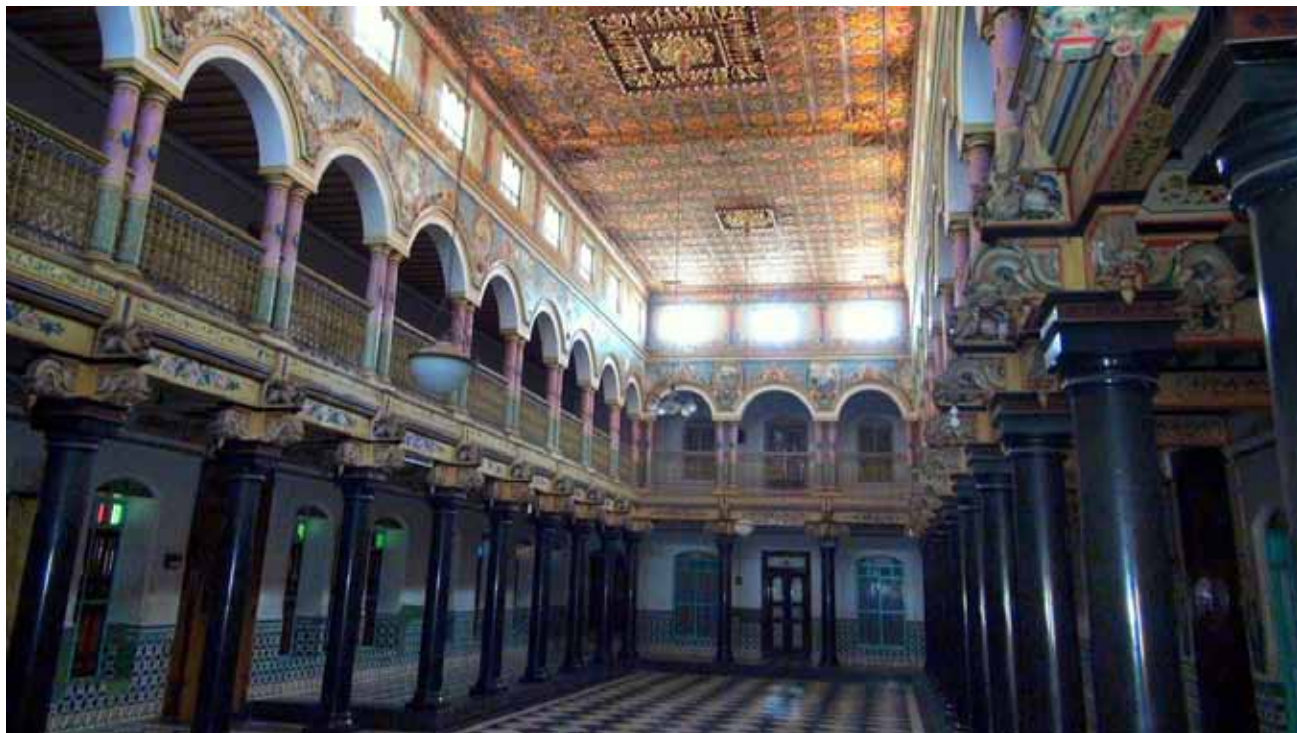


ठकुरानी की हवेली



इसी हवेली में ठकुरानी का दरबार





अथंगुडी पैलेस का मुख्य हॉल जिसे एंथनी का घर दिखाया गया है।



एंथनी के घर में गांव के लोग





एंथनी के घर का बरामदा, जहां गांव के लोग पैसे के इंतजार में बैठे होते हैं ।



अथंगुडी पैलेस के अंदर का दरवाजा





चेट्टिनाड की सड़क पर

दक्षिणी तमिलनाडु में चेट्टीनाड एक शुष्क और धूल भरा क्षेत्र है। चेट्टीनाड, कारैक्कुडि रियासत की राजधानी होता था जिसमें 70 गांव थे। यह चेट्टियार जैसे समृद्ध बैंकिंग और व्यापारिक समुदाय की जन्मभूमि है। चेट्टियार ज्यादातर मणि और मोती का व्यापार करते थे। चोल राजाओं के समय में उन्हें साहुकार कहा जाता था। उन लोगों ने अपनी परंपरा को जारी रखते हुए भारत के अलावा बर्मा, मलेशिया, इंडोनेशिया और सिंगापुर तक में अपना काम फैलाया। जहां जहां उनके व्यापारिक हित दिखाई दिए चेट्टियार गए। उद्यमी, चेट्टियारों ने अपनी कड़ी मेहनत से कमाए धन को चेट्टीनाड के आलीशान घरों पर लगाया। जैसे-जैसे चेट्टियारों का धन बढ़ता गया, वैसे-वैसे उनकी विरासत भी बढ़ती गई और आज, आप इन शानदार हवेलियों को देखने के लिए चेट्टीनाड आकर कुछ दिन यहां के नजारों का आनंद ले सकते हैं। चेट्टीनाड के कुछ बहुत ही चटपटे मसालेदार व्यंजनों का आनंद लीजिए, स्थानीय शिल्प देखिए और एक

ग्रामीण परंपरा में जिंदगी जीएं, जो आजकल दुर्लभ है।

लोकेशन मैनेजर के बारे में :

लोकेशन मैनेजर, फिल्म निर्माण दल का एक ऐसा सदस्य होता है जिसका मुख्य कार्य फिल्म शूटिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले नए स्थानों, खासकर आउटडोर स्थानों, को खोजकर निदेशक की सहायता करना होता है। आजकल किसी स्थान पर शूटिंग करने के लिए सरकारी अनुमति, पुलिस से अनुमति एवं व्यवस्था, क्षेत्र के दमकल केन्द्र से अनुमति लेना तथा उस लोकेशन तक टीम के आने-जाने की व्यवस्था और समन्वय करना भी लोकेशन मैनेजर का दायित्व है।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि चेट्टियार परिवारों ने कारैक्कुडि को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आज भी, शहर की आबादी में चेट्टियार समुदाय ही है। चेट्टियार समुदाय ने शहर को नया आकार देने में मदद की



है और शहर में शैक्षिक संस्थानों की स्थापना, बैंकों के वित्तपोषण, मंदिरों के निर्माण और पारंपरिक तरीकों से त्यौहारों को मनाने में प्रमुखता से भाग लिया है।

इंडियन ओवरसीज बैंक की स्थापना 10 फरवरी 1937 को एम. चिदंबरम चेट्टियार ने कराईकुडी में ही की थी। श्री के.सोमसुंदरम, सोमसुंदरम टेक्सटाइल मिल्स प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक तथा कला और फिल्मों के महान संरक्षक थे।

पद्म भूषण डॉ. आर.एम. अलगप्पा चेट्टियार ने 'अलगप्पा विश्वविद्यालय' की स्थापना की थी। मई, 1985 में तमिलनाडु राज्य सरकार के एक विशेष अधिनियम द्वारा स्थापित, अलगप्पा विश्वविद्यालय की एक अच्छी राष्ट्रव्यापी रैंकिंग है। विश्वविद्यालय को देश के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग कालेजों में माना जाता है। इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के अलावा, यहां कला, ललित कला, विज्ञान के साथ-साथ मानविकी के पाठ्यक्रम भी हैं।

कारैक्कुडि के बारे में...

कारैक्कुडि तमिलनाडु राज्य के शिवगंगा जिले का एक प्रसिद्ध और सबसे बड़ा शहर है। इस दक्षिणी राज्य में चेट्टीनाड मुख्य रूप से घरों की एक विशिष्ट शैली के कारण प्रसिद्ध है। इस शहर में घरों के निर्माण में चूना पत्थर का उपयोग किया जाता था, जिसे स्थानीय भाषा में "करई वेडु" कहा जाता है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि इस स्थान पर बड़ी मात्रा में पाए जाने वाले करई के पौधे के कारण ही इस शहर को कर नाम करईकुडि पड़ा जो कालांतर में तमिल उच्चारण से कारैक्कुडि हो गया। प्राचीन साहित्य में भी इस पौधे का उल्लेख मिलता है। यहां की सबसे पुरानी ज्ञात संरचना कोप्पुदैय्या नायगी अम्मा मंदिर है।

कैसे पहुँचे

सड़क मार्ग : तमिलनाडु रोडवेज की बसें ही कारैक्कुडि के लिए परिवहन का प्रमुख साधन है।

वायु मार्ग : कारैक्कुडि आने के लिए निकटतम हवाई अड्डा तिरुचिरापल्ली यहां से लगभग 95 कि. मी. है और मदुरै अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा सौ कि.मी. दूर है। इन हवाई अड्डों पर कारैक्कुडि आने हेतु निजी टैक्सियां आसानी से उपलब्ध रहती हैं।

शहर का अपना रेलवे स्टेशन है जो प्रमुख दक्षिण भारतीय शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

संयोगवश, कारैक्कुडि के इतिहास के बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन कुछ इतिहासकारों का मानना है कि 18 वीं शताब्दी में इस शहर की स्थापना की गई थी। प्राचीनतम मंदिरों के लिए भी प्रसिद्ध यह शहर पहले रामनाथपुरम जिले का हिस्सा था और 1928 में इसे नगरपालिका का दर्जा प्राप्त था।

दक्षिण के फिल्म निर्माताओं के बीच भी कारैक्कुडि एक लोकप्रिय स्थान है। आज की पीढ़ी के बच्चों को तो शायद पता नहीं होगा कि एक समय में दक्षिण भारत के जाने माने फिल्म निर्माताओं में श्री ए.वी. मयप्पन का बड़ा नाम था। उन्होंने तमिल, तेलुगू और हिंदी फिल्में बनाई थीं। उन्होंने भी इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता और शान शौकत देखते हुए यहां 'एवीएम' का एक स्टूडियो खोला था, जिसका आम तौर पर 'आउट-डोर' शूटिंग करने के लिए उपयोग किया जाता था। उसके बाद ही अनेक दक्षिण भारतीय फिल्मों की शूटिंग इस शहर में हुई और दक्षिण भारत की कुछ बेहतरीन फिल्में कारैक्कुडि में शूट की गई हैं। आज भी यहां किसी न किसी इलाके में किसी फिल्म की शूटिंग चलती रहती है।



किसी फिल्म की शूटिंग देखने के अलावा, पर्यटक कारैक्कुडि के स्थानीय मनभावन व्यंजनों का स्वाद लेने के लिए भी इस ओर आकर्षित होते हैं। चेट्टीनाड व्यंजनों को 'कारैक्कुडि डिशेज' भी कहा जाता है। यह इतने स्वादिष्ट होते हैं कि देखते ही मुंह में पानी भर आए। स्थानीय व्यंजनों को प्रसिद्ध करने में 'चेट्टियार किंग्स' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कारैक्कुडि एक समतल क्षेत्र है। कारैक्कुडि शहर के आसपास का पूरा इलाका चट्टानी है। चट्टानों के ढलान शहर के पश्चिमी हिस्से की ओर अधिक है। यहां मिट्टी कठोर लाल रंग की होती है और खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है। औसत अधिकतम तापमान लगभग 30° डिग्री रहता है। थेनर नदी दक्षिण कराईकुडी के पास से होकर बहती है।

स्थानीय लोग चेट्टीनाड के व्यंजनों को "अची सामायल" के रूप में पकाने का उल्लेख करते हैं। विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों के साथ मसाले मिला कर तैयार किए गए इन व्यंजनों को पकाने की विधि भी कुछ अलग ही है। यहां आने के बाद चीयम, कंधारप्पम, मसाला पनियारम, वलीम पनियारम और थलीचा इडियप्पम का स्वाद जरूर लें। पर्यटकों को यहां के स्थानीय व्यंजनों जैसे कि मुरुक्कुरवदई, सीपु थाताई, पोरुलविलंगा, उरुंदई, करुप्पत्ति पनियारम, कुंझल, बीजाइकाई, अधिरसम और वृंदाई जैसे स्नैक्स भी चखने चाहिए। कई स्थानीय दुकानों के साथ-साथ, रेस्तरां भी स्थानीय रूप से तैयार सूखे स्नैक्स रखते हैं जो बड़े ही स्वादिष्ट होते हैं।

कारैक्कुडि का मौसम कारैक्कुडि में कुछ गर्मियां, मध्यम वर्षा और ठंडी सर्दियाँ होती हैं।

अथंगुडी टाइलें

यहां के हस्तशिल्प उद्योग का स्रोत, अथंगुडी गांव पास में ही है। पर्यटक यह प्रसिद्ध हस्तनिर्मित अथंगुडी टाइल्स बनाने वाले कारखानों को देखने जरूर जाते हैं। प्रशिक्षित शिल्पकारों द्वारा बनाई गई यह रंगीन टाइलें न सिर्फ यहां के भव्य घरों को सजाने में काम आती हैं, बल्कि देश-विदेश में भी निर्यात की जाती हैं। अथंगुडी टाइलें मूल रूप से सीमेंट की टाइलें हैं जिनका आज के समय में भी आधुनिक महलनुमा घरों के निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है।

चेट्टीनाड में कोट्टन क्षेत्र की महिलाओं द्वारा बुने गए ताड़ के पत्तों की टोकरियां प्रसिद्ध हैं।

चेट्टीनाड साड़ी

चेट्टीनाड कॉटन को अपनी अनूठी शैली और रंगों के लिए जाना जाता है और यहां बनाई जाने वाली चेट्टीनाडु कंडांगी साड़ी (जो प्रायः लोकनृत्य करते समय पहनी जाती है) पूरे दक्षिण भारत में लोकप्रिय साड़ी हैं। अब तो इस साड़ी का साधारण रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। कारैक्कुडि के बाहर, बुनकरों की बस्ती में हथकरघे पर चेट्टीनाड कॉटन की साड़ियां बनती हैं। एक साड़ी की कीमत 250 रुपए से शुरू होकर 50,000 रुपए तक होती है।

चेट्टीनाड संग्रहालय

चेट्टीनाड अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों के लिए जाना जाता है। कारैक्कुडि ने मई 2009 में जीवंत विरासत की सूची में एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। भारतीय शहरों में विरासत के नेटवर्क का निर्माण और प्रबंधन यूनेस्को द्वारा किया जाता है। कारैक्कुडी चेट्टीनाड हेरिटेज संग्रहालय, उत्साही पर्यटकों के लिए एक जैसी यात्रा है। यह



शहर के विकास में एक अभिन्न भूमिका निभाता है।

2007 में स्थानीय बुद्धिजीवियों ने चेट्टीनाड शहर को विकसित करने के लिए एक समिति बनाई। यूनेस्को के सहयोग से कारैक्कुडि में एक तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। चेट्टीनाड की स्थानीय विरासत के संरक्षण को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला में विभिन्न रणनीतियों पर विचार किया गया। इसमें "विरासत घर" के माध्यम से यहां की संस्कृति का प्रदर्शन भी एक मुद्दा था। 2009 में हेरिटेज हाउस प्रस्तावित किया गया था। हालांकि, बाद में उस वर्ष, यूनेस्को ने कारैक्कुडि में एक शानदार चेट्टीनाड विरासत संग्रहालय स्थापित करने की पेशकश की।

यूनेस्को के अनुसार, चेट्टीनाड विरासत संग्रहालय के माध्यम से चेट्टियार समुदाय की अनूठी जीवन शैली और उनकी समृद्ध संस्कृति के संयोजन को दर्शाना है। संग्रहालय, चेट्टीनाड के अद्वितीय वास्तुशिल्प को मान्यता देते हुए, यहां के लोगों की शुरुआती जीवन शैली पर प्रकाश डालता है। संग्रहालय में विभिन्न प्रकार के दुर्लभ आभूषण, अनूठे कपड़े, अनाज रखने के विशाल डिब्बे, तांबे के जलपात्र और कई अन्य अविस्मरणीय कलाकृतियों का इस्तेमाल किया गया है। यहां रखी कलाकृतियां चेट्टियारों की समृद्ध और शानदार जीवन शैली को दर्शाती हैं। इसके अलावा, इस संग्रहालय में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि चेट्टियार घर से बाहर कुछ भी खाने के सख्त खिलाफ थे।

चेट्टीनाड के कुछ घरों को भी इस संग्रहालय का हिस्सा बनाया गया है। इन घरों का उपयोग चेट्टीनाड शहर की प्रीतिभोज, वैवाहिक तथा धार्मिक रस्मों की विरासत, विभिन्न अनुष्ठान, कला, शिल्प और लकड़ी पर की गई नक्काशी को दिखाने के लिए

किया गया है। चेट्टीनाड संग्रहालय घूमने के लिए सबसे अच्छा समय फरवरी से मार्च या फिर अक्टूबर से दिसंबर है, क्योंकि इस दौरान यहां मौसम बड़ा सुहावना रहता है।

चेट्टीनाड पैलेस : एक विरासत

कारैक्कुडि शहर के बाहर कनाडुकथन गांव में स्थित, यह महल पारंपरिक चेट्टीनाड वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। आगंतुकों के स्वागत के लिए प्रवेश द्वार पर एक बरामदा बनाया गया था/है। लकड़ी के भारी नक्काशीदार दरवाजों पर हाथीदांत का भी काम किया गया है। मुख्य हॉल को हाथीदांत से बनी कलाकृतियों, प्राचीन फर्नीचर और परिवार के सदस्यों के चित्रों से सजाया गया है। इतालवी संगमरमर, बर्मा टीक, अभिरंजित (सना) ग्लास और रंग और अलंकृत गढ़ा लोहा, हाथ से बनी टाइलें और लकड़ी के काम का संयोजन, इस घर को एक अलग ही अंदाज प्रदान करते हैं। पैलेस के तीन आंगनों को इस प्रकार बनाया गया था कि प्रवेश द्वार से ही आप सीधे घर के अन्दर तक देख सकते हैं।

चेट्टीनाड हवेली

यह एक शताब्दी पहले बनाया गया था, एकदम ठेठ चेट्टियार फैशन में, कई आंगनों, हॉलों और खंभे वाले गलियारों के साथ, यह भव्य हवेली अपने मालिकों की समृद्धि को दर्शाती है। यह चेट्टीनाड पैलेस के पास में ही है।

विशालम

यहां के एक चेट्टियार व्यवसायी ने अपनी बेटी के लिए बनवाया था। लेकिन स्थानीय लोगों के अनुसार उसकी बेटी ने शायद ही इस विशाल हवेली का उपयोग किया हो। आजकल यह भवन शादियों और त्यौहारों के लिए किराए पर दिया जाता है। इसे





कुछ साल ही पहले नवीनीकृत कर लकजरी सुविधाओं के साथ एक होटल के रूप में खोला गया। यह अपने पारंपरिक शिल्प कौशल को बरकरार रखे हुए है। कनाडुकथन स्थित विशालम में दो व्यक्तियों के एक रात ठहरने की शुरुआती दर रु. 9,000/— है जिसमें दो समय का भोजन तथा अगले दिन के नाश्ता के साथ बिना किसी सीमा के काफी/चाय भी दी जाती है। (इस दर में परिवर्तन हो सकता है।)

तमिलनाडु में चेटीनाड यानि ऐसा स्थान जहां चेटीयारों ने अपनी सुंदर हवेलियों, उनमें लगे बर्मी टीक, बेल्जियन ग्लास, खास प्रकार की पारंपरिक अथंगुडी टाइलें, झाड़ फानुसों से सजे कमरों और बड़े बड़े घर के साथ, एक भव्य ज़िंदगी बिताई, ऐसी ज़िंदगी शायद राजाओं को मिल पाई होगी। आज, इनमें से अधिकांश हवेलियां खाली पड़ी हैं। लेकिन उस जीवन का अनुभव करने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। चेटीनाड के अधिकांश विशाल घरों को अब मैरिज हॉल में बदल दिया गया है। तमिलनाडु सरकार ने चेटीनाड को विरासत शहर के रूप में घोषित किया गया है। यहां चेटीयारों के कई घरों को पैतृक विरासती होटलों का रूप देकर संरक्षित किया गया है।

बंगला ने 'बंगले' के लिए तमिल शब्द का नामकरण किया। यह घर सन् 1900 में बनाया गया था। इसके 25 कमरों में एक अलग सजावट है और अब इसे हेरिटेज होटल बनाया गया है। इसमें सभी मानक लकजरी सुविधाएं उपलब्ध हैं। यूं तो सभी विरासती होटल एक प्रामाणिक चेटीनाड संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं, लेकिन बंगला में एक अलग ही सजावट है। दोपहर का भोजन या रात का खाना, प्रति व्यक्ति रु. 600/— प्रति व्यक्ति की दर पर आपको 'असीमित' मल्टीपल-कोर्स भोजन मिलता है, जिसमें चिकन कोजाम्बु (एक तरह की टैंगी चिकन करी), अनार पचड़ी (रायता) और पायसम (चावल का हलवा) जैसे चेटीनाड के सभी विशेष व्यंजन शामिल होते हैं।

शहर के आसपास के कुछ प्रमुख मंदिर:

श्री शण्मुगनाथ पेरुमल मंदिर, कुंद्राकुडी शहर से आठ कि.मी. दूर है। यह 200 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित एक हजार साल पुराना मंदिर है। भगवान सुब्रमण्य को यहां श्री शण्मुगनाथम् पेरुमल कहा जाता है क्योंकि वह यहां छह मुखों (शण्मुख) के साथ दिखाई देते हैं। यहां गर्भगृह का मार्ग काफी संकरा है। मंदिर में शिव, गणेश, नटराज और नवग्रहों की मूर्तियां भी स्थापित हैं। अन्य मंदिरों की तरह, यहां स्थापित नवग्रह मूर्तियों के मुख विभिन्न दिशाओं में नहीं होकर केवल एक ही दिशा में इस प्रकार स्थापित किए गए हैं कि सभी के मुख भगवान सुब्रमण्यम् की ओर हैं।

आस पास के लोग यहां विवाह के आयोजन करते हैं, या फिर विवाह के पश्चात तुरंत ही दर्शन करने आते हैं। लोगों की मान्यता है कि यहां पूजा-अर्चना कराने से बीमारी और चिंताओं से छुटकारा मिलता है। कहा जाता है कि भक्तों को अच्छी संतानें प्राप्त होती हैं। मंदिर का प्रबंध कुंद्राकुडी मठ द्वारा किया जाता है।

पहाड़ी पर चढ़ने से पहले ही नीचे भगवान सुब्रमण्य और उनके भाई गणेश के मंदिर हैं। उन्हें थाई पूनम (जनवरी) के दौरान हर साल पलानी के प्रसिद्ध श्री दंडायुधपाणी मंदिर में ले जाते हैं। पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर भगवान शिव को समर्पित तीन गुफाएँ हैं जिन्हें 11 वीं शताब्दी की बताया जाता है। कुंद्राकुडी पिल्लईरपट्टी से सिर्फ तीन कि.मी. दूर है।

अरियाकुडी तिरुवेंगडम उदयन मंदिर

कारैक्कुडि से पांच कि.मी. दूर अरियाकुडी में दक्षिण तिरुपति के नाम से लोकप्रिय यह चेटीनाड का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर है। यह लगभग 500 वर्ष पुराना मंदिर है।



किवदंती: अरियाकुडी के सेवुकन चेट्टियार सपरिवार, पुरुतासी (अक्टूबर से नवंबर) के महीने में तिरुवेणम के शुभ दिन भक्तों के एक समूह के साथ तिरुपति के दर्शन हेतु जा रहे थे। यहां के लोगों का मानना है कि उस समय तिरुपति बालाजी जाने में वृद्ध और बिमार भक्तों को बहुत कठिनाई होती थी। उनके वृद्ध पिता उदयन, जो चलने में असमर्थ होने पर इसी स्थान पर बैठकर उपवास करते हुए भगवान की आराधना करने लगे और उसने यही से उसकी विनती सुनने की प्रार्थना की। कहते हैं कि एक आकाशवाणी (अदृश्य आवाज) सुनाई दी कि भगवान स्वयं इस स्थान पर भक्तों को दर्शन देंगे। कुछ समय बाद गांव वालों ने इस स्थान पर मंदिर बनाया। इस मंदिर के लिए श्रीरंगम रंगनाथ मंदिर से श्री रामानुजाचार्य द्वारा पूजित मूर्तियां लाई गईं। तिरुपति बालाजी मंदिर से चरण पादुका लाई गईं और तिरुम्यम सत्यमूर्ति मंदिर से अग्नि लाई गई।



तिरुपति के तिरुवेंगड़म उदयन मंदिर

इसे दक्षिण तिरुपति भी कहा जाता है। आसपास के क्षेत्रों के जो लोग तिरुपति जाने में असमर्थ होते हैं, वे वैकल्पिक रूप से अरियाकुडी तिरुपति आते हैं।

यहां तिरुवेंगड़म उदयन (भगवान पेरुमल श्रीनिवास), अलरमेलमंगई थयार (देवी लक्ष्मी), आंडाल (देवी कोट्टई), भगवान गरुड़ की मूर्तियां भी स्थापित हैं।

पिल्लईरपट्टी करपगावीनगर मंदिर

कारैक्कुडि से 10 कि.मी. दूर पिल्लईरपट्टी के पास, पिल्लईरपट्टी करपगावीनगर मंदिर प्रसिद्ध श्री विनायक का लोकप्रिय मंदिर है। यह पिल्लईर (गणेश) मंदिर पूरे तमिलनाडु से भक्तों को तिरुपत्थुर गांव में आने के लिए आकर्षित करता है। इसकी खासियत यह है कि श्री गणेश की मूर्ति एक ही चट्टान को तराश कर बनाई गई है। श्री गणेश की यह मूर्ति दक्षिण भारत में सबसे प्राचीन विद्यमान मूर्ति मानी जाती है। किवदंती है कि श्रीविनायक, पास की एक पहाड़ी से एक चट्टान से निकले थे। लगभग छह फीट लंबी और पांच फीट चौड़ी उनकी प्रतिमा पद्मासन (अर्ध-कमल) मुद्रा में है। सुबह अभिषेकम के बाद, उन्हें एक स्वर्ण कवचम में लपेटा जाता है। श्री गणेश को एक गुफा में स्थापित किया गया है। उन्हें दक्षिणाभिमुखी (दाईं ओर मुड़ी हुई) सूंड़ तथा दो भुजाओं के साथ चित्रित किया गया है। तमिल में ओम लिखे जाने के तरीके, वालमपुरी, में विनायक की उपस्थिति है। इस प्रसिद्ध मंदिर में देश विदेश से प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं। गांव का नाम मंदिर से मिलता है। श्री गणेश को कर्पगा विनयगर वैलमपूरी मुद्रा, कहा जाता है। अगस्त-सितंबर के दौरान गणेश चतुर्थी त्योहार मंदिर का मुख्य त्यौहार है। हर महीने संक्रांती हरि चतुर्थी त्यौहार के रूप में मनाई जाती है।

1,600 साल पुराने इस मंदिर का निर्माण पांड्यन राजाओं ने करवाया था। यहां 14 शिलालेख हैं, जिनमें 400 से 1238 ई. तक के कुछ शासकों के नामों का उल्लेख मिलता है। यह तमिलनाडु के सबसे पुराने



मंदिरों में से एक है, हालांकि वर्तमान में इसकी बाहरी संरचना को आधुनिक रूप दिया गया है। स्तम्भों में श्रीविनायक की छवि उकेरी गई है। पुरातत्ववेत्ता इसे पूर्व पल्लवन युग का मंदिर मानते हैं। इस तथ्य को देखकर इसमें कोई शंका नहीं रह जाती है कि पल्लव काल में बड़ी चट्टानों को तराश कर (रॉक-कट) मूर्तियां बनाने की समृद्ध कला मौजूद थी। पुरातत्विदों के अनुसार, जहां अधिकांश पल्लव मंदिर सातवीं शताब्दी ई. में बनाए गए थे, वहीं पिल्लईरपट्टी मंदिर चौथी शताब्दी से पहले का प्रतीत होता है।

सात-स्तरीय राजगोपुरम द्वारा सबसे ऊपर है। एक छोटे से गोपुरम के साथ मुख्य प्रवेश द्वार है। जो विनायक मंदिर की ओर जाता है। मरुधु वृक्ष होने के कारण, यहां शिव की मुरुधेश्वर के रूप में भी आराधना की जाती है। विनायक की मूर्ति की तरह ही शिवलिंगम को भी एक ही चट्टान से तराश कर बनाया गया है। शिव लिंगम के साथ ही, तिरुवेसर और श्री शिवगामी अम्मां, श्री सौंदर्यानायकी अम्मां और श्री वडामलार मँगई की भी पूजा की जाती है। इस मंदिर में धन के देवता श्री कुबेर की भी पूजा की जाती है।



कैसे पहुंचें: पिल्लईरपट्टी शिवगंगा जिले में है। यह दक्षिण-पश्चिम, तिरुप्पत्तूर, (10 किमी) या दक्षिण-पूर्व से, कारैक्कुडि से 20 किमी दूर है। कारैक्कुडि जंक्शन चेन्नई-रामेश्वरम रेल मार्ग पर है।

कहां ठहरें : पिल्लईरपट्टी में अच्छे गैस्ट हाउस हैं। बहुत से अच्छे होटल और रेस्तरां हैं।

यहां की अनेक मूर्तियों में से एक शिवलिंग पर दूध की धार बहाने वाली गाय की मूर्ति भी है। लिंगम पर पांच सिर वाला नाग स्थापित है। कहा जाता है कि पाँच सिर पाँच इंद्रियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि लिंगम सर्वोच्चता का प्रतीक है।

यहां मान्यता है कि विनायक मनोकामना पूर्ण करने वाले देव है, इसलिए स्वर्ग लोक में पाए गए करपगा (कल्पवृक्ष) के वृक्ष के बाद, वह करपागा विनायक कहलाए हैं। कहा जाता है कि आकाशीय वृक्ष उसी गुण के अधिकारी हैं। लोग यहां बाधाओं को हटाने के लिए विनायक से प्रार्थना करने आते हैं, फिर धन्यवाद देने के लिए आते हैं। मंदिर के सामने एक बड़ा, सुव्यवस्थित तालाब है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर : इसे पूरे देश में सबसे अच्छा मंदिर कहा है। इस मंदिर को शुरू में कुलशेखर पांड्यन ने बनवाया था। मगर एक आपदा में ध्वस्त हो गया था। बाद में इस मंदिर का पुर्ननिर्माण विश्वनाथ नायकर ने 16वीं सदी में शुरू करवाया और तिरुमल नायकर के समय में यह पूरा हो पाया था। वर्तमान में इस मंदिर को संगमरमर की सुंदर संरचना के रूप में देखा जा सकता है। इस मंदिर को उस काल के हिसाब से उत्तम वास्तुकला में बनाया गया था। मंदिर परिसर में 12 बड़े गोपुरम बने हैं, जिनमें से चार तो काफी सुंदर हैं। इस मंदिर के स्तम्भों पर बेहद सुंदर नक्काशी से कलाकृतियां बनाई गई हैं। हरेक स्तम्भ पर अलग-अलग संगीत नोट लिखे हुए

हैं। यहां बने तालाब में काफी मात्रा में कमल के फूल खिलते हैं। भगवान सुंदरेश्वर को समर्पित यह मंदिर असल में पार्वती और शिव का मंदिर है।

शिव मंदिर, कदानुर : यहां से सात किमी. दूर है। इस मंदिर के लिए मुख्य शहर से नियमित रूप से बसें मिलती हैं। कदानुर में यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर में माता पार्वती की पूजा भी की जाती है। इस मंदिर की बहुत धार्मिक मान्यता है। यहां होने वाले उत्सवों में भाग लेने बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। इस मंदिर में विवाह समारोह भी किए जाते हैं। यह मंदिर खुली जगह में बना हुआ है जहां मन को शांति मिलती है। यहां आकर कुछ समय बिताएं। इस मंदिर में आराम से पूजा और दर्शन करने का समय मिल जाता है

कृष्णमूर्ति पेरुमल कोविल (मंदिर) : भगवान शिव और विष्णु को समर्पित यह मंदिर कारैक्कुडि शहर में ही है। श्रीविष्णु को स्थानीय लोग तिरुमलई भी कहते हैं। भगवान तिरुमलई, विष्णु जी का ही अवतार है। हिंदू धर्म की पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु को सृष्टि का कर्ताधर्ता माना जाता है जबकि भगवान शिव को विध्वंसक माना जाता है। लोगों की मान्यता है कि दोनों ही देव इस मंदिर में भ्रमण के लिए आते हैं। इसके अलावा, विशेष बात यह है कि यहां माता पार्वती और लक्ष्मी की पूजा नहीं की जाती है। जब भी कारैक्कुडि आएंगे तो यहां जरूर दर्शन करें।

शहर में दो बस टर्मिनल हैं जिनका नाम "ओल्ड बस-स्टैंड" और "न्यू बस-स्टैंड" है। आस-पास के गांवों और छोटे शहरों को जोड़ने वाली बसें ओल्ड बस-स्टैंड पर समाप्त हो जाती हैं। राज्य परिवहन निगम (STC) न्यू बस-स्टैंड से बसें चलाता है।

कारैक्कुडि जंक्शन रेलवे स्टेशन शहर का प्रमुख रेलवे स्टेशन है। त्रिची-रामेश्वरम राजमार्ग कारैक्कुडि से होकर गुजरता है।





कविरासर कण्णदासन मणि मंडपम एक छोटा भवन है जिसे तमिल कवि कण्णदासन की याद में बनवाया गया है। यह उनका जन्म स्थान भी है। वह ऐसे कवि थे जिन्होंने तमिल साहित्य की रूप रेखा ही बदल दी है। उन्होंने न केवल तमिल साहित्य में बल्कि तमिल फिल्म उद्योग में भी अपना काफी सहयोग दिया है। उनके लेखन को पूरे तमिल में श्रेष्ठ माना जाता है। वह राजनीतिक हास्य और कविताएं भी लिखा करते थे। उन्होंने आम आदमी की आवाज उठाई। उनके असाधारण सहयोग के लिए कविरासर कण्णदासन मणि मंडपम की स्थापना की गई है।

मदर तमिल के लिए पहला मंदिर कारैक्कुडि में 1993 में स्थापित किया गया था। तमिल थाई कोविल एक मंदिर है जिसमें तमिल देवी तमिल भाषा का प्रतिनिधित्व करती हैं। भाषा को देवी के रूप स्थापित करने वाला दुनिया का एकमात्र मंदिर है।

यह मंदिर कंबन मणि मंडपम के अंदर स्थित है और जिस गली में मंदिर स्थित है उसे तमिल थाई (माता) कोविल स्ट्रीट नाम दिया गया है। इस मंदिर की स्थापना का विचार कम्बन आदिपोदी गणेशन ने किया था। 1993 में तमिल थाई मंदिर का उद्घाटन (स्व.) करुणानिधि द्वारा किया गया था। मंदिर में मुख्य मूर्ति तमिल थाई की है। मुख्य मंदिर के बाहर देवी सरस्वती और अक्षरा देवी स्थापित की गई हैं। लेकिन इस मंदिर में अन्य मंदिरों की भांति पूजा आदि नहीं की जाती है।

कारैक्कुडि में और आसपास के पर्यटन स्थल

कुंडराकुडी: कराइकुडी के बाहरी इलाके में कुंडराकुडी शणमुगनाथर मंदिर है। 130 फीट ऊंची

पहाड़ी की चोटी पर छह मुख और 12 हाथों वाले शनमुगनाथर देव, विचित्र रूप से खड़े हैं। यह मंदिर 15 वीं शताब्दी का माना जाता है। कुंड्रम का अर्थ है हिलक और कुडी का अर्थ है गांव। इसलिए इस गांव को कुंडराकुडी कहा जाता है। यह भगवान मुरुगन का निवास है, जिन्हे "चेनुगा" कहा जाता है, इनके छह मुख हैं। यहां के मुख्य त्यौहार हैं: थाई पोसोम (जन.-फर.), पनुनुनी उथिरम (मार्च-अप्रैल), विसाकम (मई), आदि कीर्तिगै (जुलाई-अगस्त), स्कंद सती (अक्तूबर-नवम्बरे)। यह मंदिर पूरे वर्ष बड़ी संख्या में तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। तमिल संत कुंडराकुडी अदिगलर यहीं रह कर धर्म तथा समाज की सेवा करते थे। यहां उनकी समाधि भी है।



थायमंगलम : यह शिवगंगा से 20 कि.मी. दूर है। इस शहर में एक मंदिर है जिसे मुत्थुरी अम्मा कोविल के नाम से जाना जाता है। यहां ग्रहों के कुप्रभावों से मुक्ति पाने के लिए मंत्रोच्चार नहीं किया जाता बल्कि कोलारु पद्मम् की कविताएं गाते हुए भगवान और देवी की पूजा की जाती है।





मुत्थरी अम्मां मंदिर



चेट्टीनाड: यह विरासत और भक्ति की भूमि है। यह समृद्ध बैंकिंग और व्यापारिक समुदाय, नट्टुकोटई चेट्टियार की भूमि है। यह स्थान अपने विशेष व्यंजनों, वास्तुकला, और मंदिरों के लिए भी जाना जाता है। आज भी, चेट्टीनाड की बहुत सारी गतिविधियां मंदिर

के उत्सवों के आसपास केंद्रित हैं। वैरवान कोविल, इरानीयूर, करप्पा विनायक, कुंडराकुडी मुरुगन, कोट्टायूर सिवन और कंडनुर सिवन मंदिर इस क्षेत्र के कुछ महत्वपूर्ण मंदिर हैं





सरुगानी में चर्च

सरुगानी में चर्च

मैरी एंड जीसस रोमन कैथोलिक चर्च को भारत का पहला चर्च माना जाता है। इसका निर्माण 1753 में किया गया था। इटली से एक मिशनरी जेम्स थॉमस डे रॉसी 1736 में इस क्षेत्र में आए और यहां के लोगो की सेवा की। स्थानीय लोगों में वह “चिन्ना सेवरियार” के रूप में लोकप्रिय हुए। एक बार उन्होंने चिन्ना मरुडु को अंग्रेजों से बचाया था। तब मरुडु ने उनको एक

गांव दे दिया था। प्रतिवर्ष 21 मार्च को सरगनी में पर्व मनाया जाता है। इस दिन यहां विभिन्न धर्मों के लोग एकत्रित होते हैं।

श्री के.दिनाकरण, 1990 में सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर राजश्री प्राडक्शन से जुड़े, बाद में प्रसाद प्राडक्शन के साथ काम किया और आजकल अपनी कम्पनी ‘लोकेशनस एण्ड लाजिस्टिक्स प्रा.लि.’ के माध्यम से फिल्मोद्योग को अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

शुभकामनाएं

इस तिमाही में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी जुलाई-सितम्बर, 2019

क्र.सं.	नाम	पद	माह
1.	श्रीमती इला बासु	निजी सचिव	जुलाई, 2019
2.	श्रीमती इन्दु शर्मा	सहायक	सितम्बर, 2019

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

—अतुल्य भारत

भोजेश्वर मंदिर

—कृष्ण वीर सिंह सिकरवार

भोजपुर शिवमंदिर:

भगवान शिव को समर्पित, प्रसिद्ध प्राचीन भोजेश्वर मंदिर भोपाल शहर से करीब 28 कि.मी. दूर है। इस प्राचीन नगर को उत्तर भारत का सोमनाथ भी कहा जाता है। भगवान शिव के शानदार मंदिर और बांध के लिए प्रसिद्ध, यह मंदिर एक ऊंचे चबूतरे पर बना है जिसके गर्भगृह में लगभग 18 फीट लंबा शिवलिंग स्थापित है जिसकी भारत के विशाल शिवलिंगों में गिनती की जाती है। भोजेश्वर मंदिर की सुंदर सजावट की गई है। भोजपुर गांव में शिव को समर्पित, भोजेश्वर मंदिर एक अधूरा हिंदू है। माना जाता है कि मंदिर का निर्माण 11 वीं शताब्दी में परमार राजा भोज के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था। आसपास की चट्टानों पर उत्कीर्ण वास्तु आयोजना के साथ अज्ञात कारणों से निर्माण को छोड़ दिया गया था। यह मंदिर पूरा क्यों नहीं हो सका, इस बारे में कोई प्रमाणित साक्ष्य अथवा शिलालेख उपलब्ध नहीं है। इस स्थल पर छोड़ी गई अधूरी सामग्री, चट्टानों पर नक्काशीदार वास्तुकला के चित्र और राजमिस्त्रीयों के कार्य को देख कर ही विद्वानों को 11वीं शताब्दी के इस मंदिर निर्माण की तकनीकों को समझने में मदद मिली है। मंदिर को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा राष्ट्रीय महत्व के स्मारक के रूप में संरक्षित किया गया है।

भोजेश्वर मंदिरके बारे में....

इस मंदिर के आसपास के क्षेत्र में उस समय के

तीन बांध और एक जलाशय थे। इतने बड़े शिव मंदिर के साथ बांध और जलाशय का निर्माण कोई शक्तिशाली शासक ही कर सकता था। उन्हें भोजपुर की स्थापना और क्षेत्र में (अब टूटे हुए) बांधों के निर्माण का भी श्रेय दिया जाता है। यह सभी साक्ष्य उस पारंपरिक मान्यता की पुष्टि करते हैं जो इस मंदिर को राजा भोज द्वारा स्थापित किया गया मानते हैं। पुरातत्वविद् प्रोफेसर किरीट मनकोडी के अनुसार भोज के शासनकाल के लगभग 11वीं शताब्दी के मध्य के बाद के भाग में मंदिर की स्थापना की गई थी।

देश के पसंदीदा पर्यटन स्थलों में भोपाल भी एक गंतव्य है और प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक यहां सैर करने आते हैं। शहर का दिलचस्प इतिहास और मॉडर्न आउटलुक का मिश्रण, पर्यटकों को यहां आने के लिए प्रेरित करता है। पिछले अंक में हमने आपको भोपाल शहर के बारे में जानकारी दी थी, इस बार पढ़िए भोपाल के आस पास के कुछ कम ज्ञात कुछ खास ऐतिहासिक स्थलों, अभयारण्यों आदि जैसे पर्यटन स्थलों बारे में।

भोजेश्वर मंदिर को देखने से भारत के प्राचीन शिल्प कौशल की उत्कृष्टता का भी पता चलता है। समृद्ध रूप से उत्कीर्ण और तीन खंडों में विभाजित शानदार गुंबद को जटिल रूप से नक्काशीदार चार स्तंभों पर रखा गया है। दो शानदार मूर्तियों के साथ दोनों तरफ खड़े, जटिल नक्काशीदार द्वार यहां की भव्यता को दर्शाते हैं। एक विशाल मंच पर स्थापित और

*संकाय सदस्य, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल



तीन अतिरंजित चूना पत्थर ब्लॉकों से बना, शिवलिंग उस समय की समृद्ध स्थापत्यकला और वैभव की एक अनूठी कहानी बताता है। मंदिर कभी पूरा नहीं हुआ था और मिट्टी के रैंप जो इसे गुंबद-स्तर तक बढ़ाते थे, अभी भी बने हुए हैं। भोजेश्वर मंदिर अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया मंदिर है। यह मंदिर देखने में अधूरा लगता है लेकिन यह सौंदर्य और भव्यता में अधूरा नहीं है। यहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

जैन मंदिर : आप यहां भोजेश्वर मंदिर के पास ही एक अधूरी आयताकार संरचना जैन मंदिर को देख सकते हैं। इस अधूरी संरचना में भी, भोजेश्वर मंदिर के समान ही पत्थरों की जड़ाई का काम दिखाई पड़ता

है। यह मंदिर भी पत्थर की बड़ी-बड़ी शिलाओं से बना है। मंदिर में तीर्थंकरों की तीन मूर्तियां हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है लगभग 20 फीट ऊंची भगवान महावीर की एक विशाल प्रतिमा। शेष दो प्रतिमाएं पार्श्वनाथ की हैं। इन प्रतिमाओं में से एक के आधार पर एक शिलालेख भी है। शिलालेख का ऐतिहासिक साक्ष्य यह पुष्टि करता है कि वर्ष 1035 राजा भोज का शासनकाल था। इसी मंदिर के परिसर में आचार्य मेरुतुंगा का मंदिर भी है जिन्होंने लोकप्रिय 'भक्तामर स्त्रोत' लिखा था। मध्यप्रदेश सरकार ने अभी हाल ही में इसका जीर्णोद्धार करवाया है। भोजपुर के जैन मंदिर और शिव मंदिर को देखने से उनके राज-मिस्रियों के कार्यों में एक पूरी समानता दिखाई देती है।





भगवान महावीर की प्रतिमा

भीमबेटका (भीम बैठका)

राष्ट्रीय धरोहर के रूप में स्वीकृत भीमबेटका भोपाल से 46 कि.मी. दूर रायसेन जिले में स्थित है। भीमबेटका की गुफाएं प्रागैतिहासिक काल की चित्रकारियों के लिए प्रसिद्ध लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। वास्तव में, इस स्थान का नाम महाभारत काल में अपने असीम बल के लिए प्रसिद्ध, वीरश्रेष्ठ भीम से जुड़ा है। भीमबेटका शब्द मूलतः भीमबैठका यानि भीम के बैठने का स्थान से बना है।

पुरातत्वविदों के अनुसार, यहां की सबसे प्राचीन चित्रकारी 12 हजार वर्ष पूर्व की मानी जाती है। इनका संबंध नवपाषाण काल से माना जाता है। इन गुफाओं के अंदर बने चित्र गुफाओं में रहने वाले लोगों के प्रागैतिहासिक काल के जीवन का विवरण प्रस्तुत करते हैं। यह गुफाएं चारों ओर विंध्य पर्वतमालाओं से घिरी हुई हैं।



भित्तिचित्र

भीमबेटका के शैलाश्रयों और गुफाओं में कई दिलचस्प भित्तिचित्र देखे जा सकते हैं जो गुफाओं में रहने वाले लोगों के जीवन और समय को दर्शाते हैं। इन भित्तिचित्रों में बच्चे का जन्म, सामुहिक नृत्य-संगीत, खानपान और धार्मिक संस्कार आदि के साथ-साथ प्राकृतिक वातावरण के दृश्य, जिनमें शिकार, घोड़े और हाथी पर सवार लोगों की लड़ाई आदि के चित्रण मिलते हैं। इन्हें देखकर लगता है कि यह उन दिनों की रोजमर्रा की घटनाओं से ली गई होगी। कुछ गुफाओं में बाघ, शेर, जंगली सूअर, हाथी, मृग, कुत्ते, छिपकली, मगरमच्छ आदि जैसे जानवरों का भी चित्रण किया गया है। इन्हें चित्रित करने में मुख्य रूप से हरे और पीले रंग के उपयोग के साथ लाल और सफेद रंग में इस्तेमाल किया गया है। यहां पूरे साल भर जल आपूर्ति, समृद्ध वनस्पतियों और जीवों के रूप में प्रचुर मात्रा में प्राकृति का आनंद लिया जा सकता है।

रातापानी वन्य जीव अभयारण्य

भोपाल से तकरीबन 54 कि.मी. दूर यह स्थान भोपाल से लगे हुये रायसेन जिले में आता है। सुन्दर सागौन के जंगलों के लिए प्रसिद्ध, इस अभयारण्य में विविध प्रकार के पेड़-पौधों की भरमार है। यहां बाघ, तेंदुए तथा अन्य जानवर, लंगूर, अजगर आदि देखे जा सकते हैं। मशहूर पर्यटन स्थल भीम बेटका इसी अभयारण्य क्षेत्र में आता है। यहां पर्यटन के अन्य



आकर्षणों में टीक के सघन जंगलों में गिन्नौरगढ़ का किला और कैरी महादेव मंदिर भी शामिल हैं। इस स्थान की लोकप्रियता तथा पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, रातापानी अभयारण्य प्रबंधन ने यहां बहुत से निर्माण कार्य कराए हैं। मुख्यद्वार को

सांची-स्तूप के द्वार की तरह बनाया गया है। साथ ही पर्यटकों की सुविधा के लिए विश्रामगृह, नए टिकट घर, पार्किंग और शौचालयों आदि की व्यवस्था भी की गई है। साथ ही अभयारण्य में स्वचालित सफाईयंत्र वाहन से सफाई की व्यवस्था की गई है।



रातापानी अभयारण्य में कई पुराने यादें भी बिखरी हुई हैं, इसमें से एक है अंग्रेजों द्वारा देलाबाड़ी के पास जंगल में बनाया गया युद्धबंदी शिविर, जिसे आज जंगल कैम्प के नाम से जाना जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों द्वारा बनाए गए इस कैम्प में दुश्मन देशों के बंदी सैनिकों को रखा जाता था। देलाबाड़ी घाट के ऊपर बनाया गया, यह शिविर किसी छोटे से शहर से कम नहीं है। इसमें सबसे पहले चौकीदार का भवन, फिर मोटरगाड़ियों का सर्विस सेंटर, फिर युद्धबंदी गृह, अंग्रेजों के रहने के लिए

क्वार्टर, मनोरंजन के लिए सिनेमाहाल और अंत में "सनसेट पाइंट" और बगीचे बनाए थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बनाया गया सिनेमा हाल अंग्रेजों के मनोरंजन के प्रति शौक को दर्शाता है। आज भी इस भवन के गेट पर सिनेमा हाल लिखा हुआ है। अंग्रेज सफाई व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान देते थे। उन्होंने पूरी कालोनी में पक्की नालियां और पानी निकासी के लिए जगह-जगह चेंबर बनाए थे। युद्ध समाप्त होने के बाद अंग्रेज यह शिविर छोड़ कर चले गए। उनके द्वारा बनाए गए भवनों को आज भी देखा जा सकता





देलाबाड़ी

है। आजकल इसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वन विभाग ने सलकनपुर मार्ग के किनारे सड़क पर बैरियर लगा दिए हैं। ग्रामीण बताते हैं कि कई इमारतों की छत की चादरें, चौखटें चोर ले गए। इस स्थान की देखभाल वन विभाग द्वारा की जाती है। पुरातत्व विभाग द्वारा इस युद्ध बंदीगृह को संरक्षित करने की जरूरत है।

देलाबाड़ी

देलाबाड़ी मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में रातापानी वन्यजीव अभयारण्य के मध्य में है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग-12 से होते हुए भोपाल से 55 कि. मी. दूर है। यहां के विशेष तौर पर टीक के घने जंगलों के बीच अनेक जानवरों और पक्षियों से भेंट करने के साथ हरी घास और पेड़ों के पत्तों पर ओस का अनुभव करने का मौका, लटकती मकड़ियों के बीच में पंक्तिबद्ध कोबियों को पार करते हुए, जंगल की दुनिया

में निकलने वाले कई ट्रेल्स और नृत्य सा करते बहुरंगी कीड़े मिलते हैं जो वास्तव में प्रकृति के आनंद को देखने का एक दुर्लभ अवसर देते हैं।

देलाबाड़ी वन परिसर में बनाए गए विजिटर सेंटर में टाइगर एग्जीबिशन हॉल में फिल्मों के द्वारा टाइगर स्टेट के जंगल के बहुत ही अच्छे दृश्यों के साथ आस पास की वनस्पतियों आदि के बारे में ज्ञानवर्द्धक जानकारी प्रदान की जाती है।

इस टाइगर क्षेत्र की आभा मंत्रमुग्ध कर देने वाली है। देलाबाड़ी के वन कैनवस पर टाइगर्स और आस पास रहने वाले जंगली कुत्ते, सियार, लोमड़ी के साथ ही शाकाहारी जीवों जैसे चीतल, सांभर, नीलगाय, चिंकारा, हिरण, चौसिंघा, लंगूर और बंदर के जीवन को एक दिलचस्प कोलाज में चित्रित किया है। जिन्हें देखने भर से ही पर्यटकों को रोमांच की अनुभूति होती है। गाइड इन जीवों के व्यवहार और इनके प्रबंधन की



रणनीतियों के बारे में जिज्ञासु पर्यटकों को समझाते हैं। आप भी जंगल के राजा के निवास के साक्षी बनकर यहां का आनंद ले सकते हैं। देलाबाड़ी के आस-पास के स्थानों में कैलादी महादेव, भदभदा जलप्रपात, सूर्यास्त स्थल और काला भैंसा रॉक हैं।

गिन्नौरगढ़ का किला

इस क्षेत्र में पर्यटकों के लिए एक और अजूबा है गिन्नौरगढ़ का किला। यह गोंड राजा के समय में वनवासियों द्वारा लड़ी गई लड़ाईयों का भी गवाह है। पुरातत्वविदों के अनुसार इस ऐतिहासिक किले का निर्माण परमार वंश के राजाओं ने लगभग 800 वर्ष पूर्व किया था। बाद में निजाम शाह ने गोंड शासन की स्थापना की और इस किले को नया रूप देकर, अपनी राजधानी बनाया था। यहां पर परमार और गोंड शासकों के बाद मुगल तथा पठानों ने भी शासन किया था। भोपाल से करीब 65 कि.मी. दूर विंध्याचल की पहाड़ियों के बीच बसे इस किले का निर्माण समुद्र की

सतह से लगभग 1975 फीट की ऊंचाई पर किया गया है। इस किले के कुछ साक्ष्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि गोंड राजा की सात रानियां थीं और उनमें कमलापति प्रमुख थीं। सभी सातों रानियां न केवल बहुत सुंदर थीं, बल्कि शासन में भी कुशल थीं। किले की संरचना और इसके स्थापत्य से यह पुष्टि होती है कि इसके निर्माण के पीछे अद्भुत सोच रही होगी। प्राकृतिक वन-संपदा से भरपूर इस स्थान पर जंगली जानवर भी देखे जा सकते हैं। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि इस किले को बनाने के लिए किले के पास एक पहाड़ी से मिट्टी मंगाई गई थी। मिट्टी की डलिया लाने वाले प्रत्येक मजदूर को एक अशर्फी दी जाती थी। किले से कुछ दूर यह पहाड़ी, अशर्फी पहाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रकृति की गोद में हरियाली से घिरे इस किले की संरचना अद्भुत है। लगभग 3696 फीट लंबे और 874 फीट चौड़े इलाके में फैला यह किला रोमांच के शौकीन पर्यटकों को आकर्षित करता है।



आश्चर्य...

इतिहासकार इस किले की एक बात से बहुत हैरान होते हैं कि इतनी ऊंचाई पर बना होने के बावजूद यहां पर भरपूर मात्रा में पानी उपलब्ध है। किले और उसके आसपास लगभग 25 कुएं—बावड़ी और चार छोटे तालाब हैं। इन तालाबों में पूरे साल पानी भरा रहता है। किले की दीवारें करीब 82 फीट ऊंची और 20 फीट चौड़ी हैं। यहां पहाड़ी पर काले और हरे पत्थर बिखरे हुए हैं। किले के नीचे सदियों पुरानी एक गुफा है, जो इसके निर्माण के रहस्य को और गहरा कर देती है। इस गुफा के बाहर ठंडे पानी का एक कुंड है जो 12 महीने ठंडा रहता है।

यह महल आकर्षक स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इस किले को तीन हिस्सों में बांटा गया है। पहला भाग किले से तीन मील दूर का क्षेत्र है, जिसे बाहरी घेराबंदी के नाम से जाना जाता है। किले का दूसरा भाग दो मील दूर का इलाका है, जहां कभी बस्ती आबाद थी। यहीं पर एक तालाब भी है। तीसरे भाग में किला है। इसके मुख्य द्वार के पास रानी महल है, जिसे निजाम शाह ने अपनी पत्नियों के लिए बनवाया था।

यह धरोहर आज यह वीरान है। उसकी जर्जर होती इमारत के टुकड़ों में इतिहास दफन होता जा रहा था। लेकिन अच्छी बात है कि अब इस किले को राष्ट्रीय धरोहर स्वीकार करने के बाद पर्यटन विभाग इसका पुनरोद्धार करा रहा है। धीरे धीरे पर्यटक इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

कैरवा बांध

भोपाल से करीब 15 किलोमीटर दूर स्थित कैरवा पिकनिक स्पॉट के रूप में खासा लोकप्रिय है। यह एक दर्शनीय बांध है। दूर-दूर तक हरे-भरे जंगलों के बीच स्थित यह मनोरम स्थल बरसात के

मौसम में एक अलग खूबसूरती से श्रृंगार कर लेता है। यहां एक बांध और पहाड़ी तो पहले से ही थे, साथ ही एक मंदिर विकसित किया गया है जिससे क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ गई है। बरसात के मौसम में इस स्थान पर एक खास अनुभूति होती है क्योंकि गर्मियों में जल स्तर कम होता। इस सुरम्य स्थल को मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा ईको टूरिज्म के रूप में विकसित किया गया है। ऊंची पहाड़ियों और हरियाली से घिरे इस बांध में हाई डेन्सिटी पॉली यूरेथिन पैलिकन बोट चलाई जा रही है। बांध के पास एक अनोखी इको-टूरिज्म साइट शुरू की गई है। इसमें दो किलो मीटर का पैदल क्षेत्र है जो दोनों तरफ पेड़ों, झाड़ियों और फूलों के पौधों से भरा है। इस पिकनिक स्थल पर आने वाले पर्यटकों के लिये व्यू प्वाइंट, बच्चों के लिये पार्क, झूले, बैठने के लिये बेंच, घूमने के लिए पैदल पगडंडियों का निर्माण किया गया है। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा एक रेस्तरां, शौचालय, लॉन, वाहन पार्किंग के साथ एक छोटा क्षेत्र विकसित किया गया है। स्थानीय लोग बारिश के मौसम में इस क्षेत्र में घूमने आते हैं। यदि आप एडवेंचर में रुचि रखते हैं तो एक जिपलाइनिंग या 'जिपिंग' की सुविधा उपलब्ध है। गार्डन सुव्यवस्थित है और रेस्तरां को भी सुखद ढंग से सजाया गया था जहां अच्छे स्वादिष्ट व्यंजन प्रस्तुत किए जाते हैं। यहां आने के लिए भोपाल से बसे और ऑटो मिल जाते हैं। अपने निजी वाहन से भी पहुंच सकते हैं। यदि आप कभी कैरवा घूमने जाएं तो यहां अकेले जाने से बचें, दूसरे दिन के समय ही जाएं क्योंकि जंगलों के बीच वन्यजीवों के आवागमन को देखते हुए यह एकांत क्षेत्र जोखिम भरा है। यहां के जंगलों में कभी शेर जैसे जानवर भी आ जाते हैं, लिहाजा आबादी के इर्द-गिर्द ही रहें। यहां एडवेंचर का अपना एक अलग आनंद है।

कैरवा इको-टूरिज्म डेवलपमेंट सोसाइटी की ओर से प्रवेश शुल्क रु.15 प्रति व्यक्ति है।



भारत का पहला विरासत नगर

—श्रीमती संतोष सिलपोकर

अहमदाबाद इतिहास के शौकीनों के पसंदीदा स्थानों में से एक है क्योंकि यहां मध्य काल के साथ ही प्राचीन स्थलों की भरमार है। ऐसे पर्यटक जो एक समृद्ध इतिहास की खोज में रहते हैं उनके लिए शहर के ऐतिहासिक स्मारक आकर्षण का केन्द्र हैं। शहर में 29 ऐतिहासिक महत्व के स्मारक हैं। इन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से संरक्षित घोषित किया गया है। गुजरात का 600 साल से भी अधिक पुराना ऐतिहासिक शहर अहमदाबाद अब विश्व विरासत नगर है। एक लम्बे समय से जारी मेहनत आखिरकार शनिवार 8 जुलाई, 2017 को रंग लाई और पोलैंड के क्रेको शहर में 'वर्ल्ड हैरिटेज कमेटी' (WHC) ने अपनी 41वीं बैठक में अहमदाबाद को "वर्ल्ड हैरिटेज सिटी" का दर्जा प्रदान करते हुए इसे भारत का पहला विश्व धरोहर शहर घोषित किया है।

सन् 1411 ई. में गुजरात के तत्कालीन शासक सुल्तान अहमद शाह द्वारा स्थापित अहमदाबाद एक ऐतिहासिक शहर है, जो भारत-इस्लामिक वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों को अपने में समेटे तथा हिंदू और जैन मंदिरों में अपनी सुरुचिपूर्ण नक्काशी को दर्शाते हुए, ऐतिहासिक एवं पुरातन महत्व की इमारतों तथा मकबरों के साथ हिंदू मुस्लिम की साझा सांस्कृतिक विरासत के साथ शांति का झंडा बुलंद किए हुए है।

लगभग 55.7 लाख की अनुमानित आबादी वाले शहर की 5.5 कि.मी. की दीवारों को जीवंत विरासत माना जाता है और यूनेस्को ने पुराने शहर के क्षेत्र में प्रमुख हिंदू, इस्लामिक और जैन समुदायों

के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सौहार्द की सराहना की। अहमदाबाद को विरासती शहर घोषित करने में तुर्की, लेबनान, क्यूबा और पोलैंड जैसे लगभग 20 देशों का समर्थन मिला था। फिर भी, इसका पूरा श्रेय यहां के स्थानीय प्रशासन तथा नागरिकों को दिया जाना चाहिए। अहमदाबाद नगर निगम ने 1997 में ही एक विरासत सेल स्थापित कर, क्षतिग्रस्त विरासती स्थानों के जीर्णोद्धार और उनकी संरक्षा हेतु प्रयास शुरू कर दिए थे। इससे पहले, 1984 में, फोर्ड फाउंडेशन ने इस दीवारी शहर की विरासती संरचनाओं को संरक्षित करने के लिए एक परियोजना तैयार कर, धन उपलब्ध कराया था। हवेलियों में लगाए लकड़ी के आधार खम्भों के स्थापत्य के अलावा, विश्व समुदाय ने इस तथ्य पर भी बल दिया कि शहर अहिंसक स्वतंत्रता संग्राम का केंद्र रहा था। अहमदाबाद शहर अब पेरिस, काहिरा, एडिनबर्ग जैसे विरासती शहरों के साथ भारतीय उपमहाद्वीप में दो शहरों, नेपाल के भक्तपुर और श्रीलंका के गैले की तरह विशेषाधिकार प्राप्त क्लब का सदस्य है।

नगर निगम के एक अधिकारी के अनुसार, 'हमें इस कार्य में 20 साल लग गए और अब हमें लगता है कि काम तो अब शुरू हुआ है। हमारा शहर एक राष्ट्रीय उदाहरण बन गया है। हमें सुनिश्चित करना होगा कि इस कार्य में सतर्कता बरतें, अब पुराने शहर के लोग स्वयं अपनी संपत्तियों के संरक्षण में दिलचस्पी दिखाएंगे। इससे पुराना शहर और बेहतर बनेगा और

*संयुक्त निदेशक (रा.भा.) पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या भी बढ़ेगी।

अहमदाबाद गुजरात राज्य का सबसे बड़ा शहर है। साबरमती नदी के किनारे बसा और घनी आबादी वाला यह नगर, पहले 1970 तक गुजरात की राजधानी था। लेकिन शहर की बढ़ती आबादी तथा भीड़भाड़ को देखते हुए, साबरमती के पश्चिमी ओर, यहां से 30 कि. मी. दूर एक हराभरा विकसित गांधीनगर बसाया गया। अहमदाबाद को गांधी नगर से एक लगभग सीधी सड़क से जोड़ा गया है। इसका निर्माण कार्य 1965 में शुरू हुआ था और 1970 में वहां सचिवालय ने काम करना शुरू कर दिया था। अब गुजरात की राजधानी गांधी नगर है।

अहमदाबाद के बारे में....

ग्यारहवीं शताब्दी में, अनहिलवाड़ पाटन के शासक चालुक्य वंश के कर्ण ने इस शहर को अपनी राजधानी बनाया और इसका नाम कर्णावती अर्थात करण का शहर रखा था। कुछ इतिहासकारों के अनुसार इसे श्रीनगर (समृद्ध शहर) अथवा राजनगर (राजा का शहर) भी कहा गया है।

आज के पुराने शहर के दक्षिण की ओर साबरमती नदी के तट पर पुरानी बस्तियां थीं। उस समय इसे आशावल या आशापल्ली कहा जाता था। शहर और उसके आसपास कई बस्तियों को जोड़कर शहर का विकास किया गया था।

1817 में, अहमदाबाद ब्रिटिश कंपनी के शासन के अधीन हो गया और इससे शहर को राजनैतिक स्थिरता मिली और अंग्रेजों ने व्यापार में सुधार के साथ ही शहर के स्मारकों पर भी विशेष ध्यान दिया। अढ़ाई लाख रुपये की लागत से शहर की दीवारों की मरम्मत की गई। इसके लिए धन जुटाने के लिए उन्होंने घी और कुछ दूसरी चीजों पर विशेष उपकर लगाया। इसी दौरान शहर के उत्तर में एक छावनी स्थापित की गई थी।

नाम...

अहमद शाह ने अहमद नाम के तीन व्यक्तियों के सम्मान में और स्वयं अपने नाम पर शहर का नाम अहमदाबाद रखा था। इन लोगों में पहले व्यक्ति थे, उसके धर्मगुरु शेख अहमद खट्टू, दूसरे दो अन्य विद्वान काजी अहमद और मलिक अहमद तथा चौथा स्वयं अहमद शाह। अहमद शाह प्रथम ने हिंदू संत मानेक नाथकी कथा से जुड़े इस शहर में सबसे पहले चौक, मानेक चौक की स्थापना की। फिर शहर के पहले गढ़मानेक बुर्जसे शुरू होने वाले भद्रा किलेकी नींव रखी, जो 1413 में पूरा हुआ। उसने वर्गाकार रूप में, लगभग 162 घरों वाले, 43 एकड़ क्षेत्रफल में फैले भद्रा किले के आठ द्वार बनवाए थे।

इसी शहर में महात्मा गांधी ने साबरमती आश्रम की स्थापना की थी। अहमदाबाद वस्त्रोद्योग के लिए प्रसिद्ध है। इसके साथ ही इस शहर ने व्यापार और वाणिज्य केन्द्र के रूप में बहुत अधिक तरक्की की है। इसीलिए अंग्रेज इस शहर को भारत का मेनचेस्टर भी कहते थे।

भद्र किला: अहमदाबाद के संस्थापक, अहमद शाह ने 1411 से 1442 ई. तक गुजरात पर शासन किया था और तभी 1411 ई. में भद्र किले का निर्माण शुरू कराया था और इस किले को अर्क किला कहा गया था। सन् 1443 में अहमद शाह प्रथम की मृत्यु के बाद उसके बड़े बेटे मुहम्मद शाह ने गद्दी संभाली और उसने भी राज्य के विकास पर जोर दिया। मराठों की जीत के बाद अर्क किले में भद्रकाली का मंदिर बनवाया और इसे भद्र किला नाम दिया। भद्र किला एक आकर्षक स्मारक है जो वास्तुकला की इंडो-सारासेनिक शैली की पहचान है। लाल पत्थर से बना यह किला अहमदाबाद के चारदीवारी क्षेत्र में स्थित है। यह किला वास्तुकला का खूबसूरत नमूना



है इसके सामने तीन दरवाजा के नाम से एक सुंदर द्वार है।



भदरा किला

भद्रा किले का द्वार

चौदह मीनारों और आठ दरवाजों वाला यह किला पेचीदा वास्तुशिल्प का एक चमत्कार है। अहमद शाह के शासन के दौरान इस किले का शाही दरबार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। किले के पूर्वी किनारे पर तीन दरवाजा नामक एक ऐतिहासिक प्रवेश द्वार शाही चौक के प्रवेश द्वार के रूप में बनाया गया था, जिसे शाहे-मैदान कहा जाता था। यह मैदान शाही खेलों और शाही जुलूस के लिए भी उपयोग किया जाता था।

तीनदरवाजा

‘तीन दरवाजा’, ‘ट्रिपल गेटवे’ अथवा ‘त्रण दरवज्जो’ के नाम से प्रसिद्ध यह भद्रा किले का प्रवेश द्वार है। 1415 ई. में इस प्रवेश द्वार का निर्माण किया गया था। अहमदाबाद नगर निगम के चिह्न में भी इस प्रवेशद्वार का समावेश किया गया है। यह दरवाजा अहमद शाह के महल से बाहर विशाल मैदान की ओर

जाता है। इसके खंडहरों से ज्ञात होता है कि उस समय में यह कलात्मक शिल्प का एक बेजोड़ नमूना रहा होगा। इस द्वार से जुड़ा रास्ता 17 फीट लम्बा और 13 फीट चौड़ा है। लेकिन आज के अहमदाबाद की भीड़-भाड़ को देखने पर यह स्थान बहुत ही छोटा लगता है।



तीन दरवाजा का 1866 में लिया गया एक चित्र

तीन दरवाजा के पीछे की सड़क मानेक चौक जैसे व्यापारिक स्थान से जुड़ती है। इस शानदार किले में शाही महल, सुंदर नगीना बाऊ, मैदान-शाह और शाही मस्जिद है।

मराठा शिलालेख

शहर पर आधिपत्य करने के बाद मराठा सुबेदार चिमन जी रघुनाथ ने सन 1812 में एक फरमान जारी किया था कि अब से पैतृक संपत्ति में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान ही अधिकार मिलेगा। यह फरमान हिन्दू और मुस्लिम दोनों के लिए जारी किया गया था। जिस शिलालेख पर फरमान अंकित किया गया था वह आज भी किले के द्वार पर देखा जा सकता है। शिलालेख में 10 अक्तूबर 1812 की तारीख लिखी है। देवनागरी लिपि में लिखे इस शिलालेख में अंकित है, “पुत्री को पिता की संपत्ति में किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना समान अधिकार दीजिए।”



तीन द्वार के स्तंभ पर पिता की संपत्ति में पुत्री को बराबर का अधिकार दिए जाने वाला शिलालेख।

अंग्रेजों ने 1817 में इस किले पर कब्जा कर लिया था और आजादी तक इस किले का एक जेल के रूप में उपयोग किया। अहमदाबाद नगर निगम ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ 2014 में किले का जीर्णोद्धार किया। किले में घूमने से पर्यटकों को शहर के संस्थापक के जीवन के बारे में जान सकते हैं।

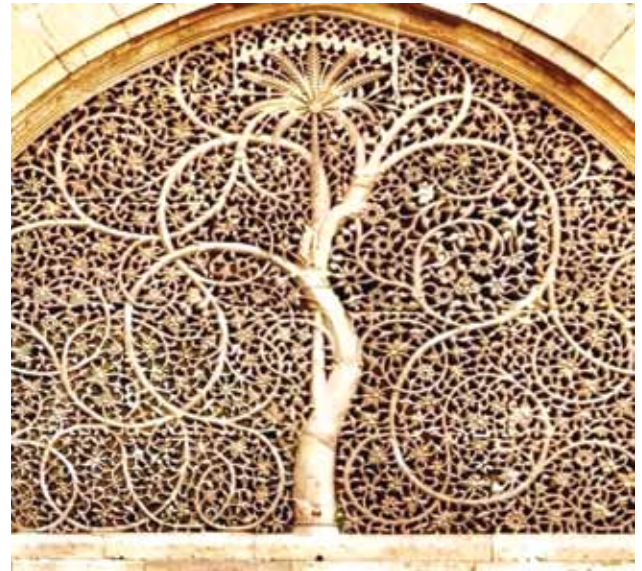
अखंड दीपक

इस किले के बारे में लोगों में कुछ किवंदतियां भी प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार, एक बार धन की देवी लक्ष्मी किला छोड़ कर जाने के लिए तीन दरवाजे से बाहर निकल रही थी कि कोतवाल ख्वाजा सिद्धीक ने उनको रोक लिया और बादशाह की आज्ञा के बिना किले से बाहर न जाने के लिए कहा और कोतवाल अनुमति लेने बादशाह के पास गया तो जल्दी में बादशाह स्वयं ही नंगे पांव बाहर आ गए और लक्ष्मी से किले में ही रहने के लिए प्रार्थना की। देवी ने उससे अपने लिए अलग स्थान बनाने और वहां स्वयं बादशाह

द्वारा प्रति दिन दीपक जलाने को कहा। बादशाह द्वारा माता का स्थान बनाने और खुद दीया जलाने का वायदा करने पर लक्ष्मी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि शहर हमेशा समृद्ध होगा। जानकार लोगों का कहना है कि उसके बाद इस किले ने कभी धन की कमी नहीं देखी है। आज भी शहर की गिनती एक समृद्ध शहर के रूप में की जाती है।

भद्र किल्ले के प्रवेश द्वार के पास ही कोतवाल का मकबरा है। महालक्ष्मी के स्वरूप में मां भद्रकाली के नाम से प्रसिद्ध मंदिर विद्यमान है। इस कथा को समर्पित तीन दरवाजे की एक गोख में एक दीपक 600 साल से भी अधिक समय से प्रज्वलित रखा गया है। एक मुस्लिम परिवार इस दीपक की देखरेख करते हुए इसे अखंड रूप से प्रज्वलित रखता है। इस मुस्लिम परिवार के द्वारा कई पीढ़ियों से यह कार्य किया जा रहा है।

सिदी सैयद जाली



मुगल काल के दौरान सन् 1573 में अहमदाबाद में बनी यह आखिरी मस्जिद है। मस्जिद के पश्चिमी ओर की खिड़की पर करीब 10 जालियां हैं। पत्थरों की

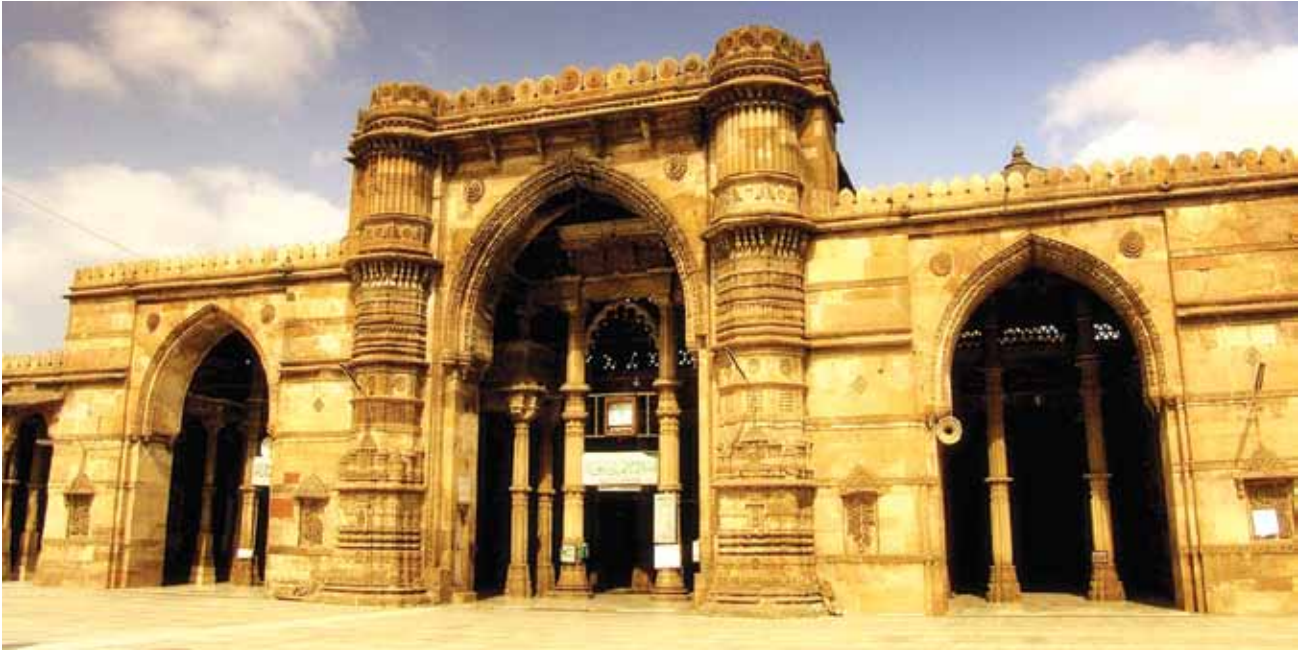


सात जालियों पर पेड़ों और पत्तियों की नक्काशी की गई है। बाहर परिसर में पत्थर पर ही नक्काशी कर एक पेड़ का चित्रांकन किया गया है जो उस काल के शिल्प कौशल को दर्शाता है। शहर के लाल दरवाजा इलाके में स्थित यह मस्जिद दुनिया में मशहूर है। बारह स्तंभों पर टिकी मस्जिद के द्वार पर दो मीनारें और अंदर 15 गुम्बद बने हुए हैं। मस्जिद के पास ही सिदी सैय्यद की मजार बनी हुई है। मस्जिद में करीब दो हजार लोग एक साथ नमाज अदा कर सकते हैं। आज भी यहां लोग हर दिन इबादत करने आते हैं।

यहां आकर निश्चित रूप से मन को शांति का अनुभव होता है।

जामा मस्जिद

अहमदशाह ने सन् 1423 ई. में जामा मस्जिद का निर्माण कराया था। पीले बलुआ पत्थरों से बनी इस मस्जिद की दीवारों पर हिंदू स्थापत्य कला की छाप देखने को मिलती है। पश्चिम भारत में स्थित यह मस्जिद बेहतरीन कारीगरी का एक अच्छा उदाहरण है। शहर के मध्य में स्थित इस मस्जिद को देश की सबसे सुंदर मस्जिदों में से एक माना जाता है।



जामा मस्जिद

रानी रूपमती मस्जिद :

अहमदाबाद शहर के मिर्जापुर क्षेत्र में और भद्रा से दो कि.मी. दूर स्थित, रानी रूपमती मस्जिद यहां का एक प्रसिद्ध स्थान है। महमूद बेगड़ा ने अपनी हिंदू पत्नी रूपमती के नाम पर यह मस्जिद बनवाई थी। यह "मिर्जापुर क्वीन" की मस्जिद के रूप में अधिक लोकप्रिय है। यह मस्जिद स्थापत्य कला की दृष्टि से

बहुत सुंदर और देखने लायक है। मस्जिद के अंदर सूर्य की कोई किरण नहीं पहुंचती फिर भी इसके बीच में खड़े होने पर प्रकाश दिखाई देता है।

मस्जिद के बारे में....

उस समय के दौरान बनाए गए अधिकांश स्मारकों की वास्तुकला में मुस्लिम और हिंदू शैलियों का एक आदर्श मिश्रण मिलता है। यह मस्जिद 105



फीट लंबी, 46 फीट चौड़ी और 32 फीट ऊंची है। एक उच्च केंद्रीय मेहराब, तीन गुंबद, पतली मीनारें, नक्काशीदार दीर्घाएं और एक उत्तम मेहराब हैं। मस्जिद में प्रवेश द्वार दोनों ओर खुलते हैं। गुंबदों को बारह खंभों की पंक्तियों से सहारा दिया गया है, जहां आगे की तरफ छोटे गुंबद हैं। हालांकि 1819 में कच्छ के रण में आए भूकंप से मीनारों के नुकसान हुआ था। बाद में पुरातत्व विभाग द्वारा जिनकी मरम्मत कराई गई थी। अभी भी मस्जिद की सुंदरता में कोई कमी नहीं आई है। मस्जिद के समीप एक स्मारक है, जिसमें रानी रूपमती और दूसरी रानियों की कब्रें हैं।

रानी सिपरी मस्जिद

अहमदाबाद की चारदीवारी में अस्तोदिया दरवाजा के पास स्थित, यह खूबसूरत मस्जिद रानी सिपरी के नाम से जानी जाती है। इसे "रानी सिपरी

नी मस्जिद" या "मस्जिद-ए-नगीना" के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण महमूद शाह बेगड़ा की पत्नी रानी सिपरी, जो एक हिंदू जागीरदार की बेटी थीं, ने 1514 ई. में करवाया था। यह शहर की सबसे पुरानी मस्जिद है। इसकी वास्तुकला में हिंदू, जैन और इस्लामी शैलियों का मिश्रण देखा जा सकता है। यहीं पर रानी सिपरी की कब्र भी है।

शिल्पकला...

हालांकि, यह एक छोटी संरचना है, लेकिन इसकी शानदार दीवारों पर की गई नक्काशी के कारण यह पर्यटकों को आकर्षित करती है। एक मस्जिद की सजावट के लिए दो खण्डों वाला प्राचीन स्थल 24 फीट चौड़ा, 24 फीट लम्बा और 50 फीट की ऊंचा है। मस्जिद में दक्षिण-पूर्व में हिंदू शैली में आकर्षक



नक्काशीदार मीनारें हैं। मस्जिद की विशेषता में इसके खम्भों तथा जालीदार दीवारों में फूलों और पौधों की आकृतियां हैं। स्त्रियों द्वारा आराधना करने के लिए इसके ऊपरी हिस्से में एक अलग स्थान है। दक्षिणी छोर पर दो खिड़कियां विस्तृत नक्काशीदार कोष्ठक के साथ वास्तुकला की हिंदू शैलियों को दर्शाती हैं। इसकी छत गुंबददार है और एक लंबा गलियारा है।

यह मस्जिद प्रातः छः बजे से शाम छः बजे तक खुली रहती है। यहां प्रवेश शुल्क नहीं है।

सरखेज रोज़ा : गुजरात में एक सबसे महत्वपूर्ण रोज़ा कॉम्प्लेक्स है जिसमें कई मस्जिद, मकबरे और महल हैं। सरखेज, अहमदाबाद में मुख्य शहर से सात कि.मी. दूर है। इस परिसर में निर्माण कार्य की शुरुआत सुल्तान मोहम्मद शाह ने की थी, बाद में इसे कुतुबुद्दीन अहमद शाह ने पूरा करवाया। उनकी याद में एक मकबरे का निर्माण भी करवाया। बाद में, महमूद बेगड़ा ने इस परिसर को बढ़ाते हुए इसमें गर्मी का महल भी शामिल कर दिया। इसके अलावा, यहां बीच में एक तालाब, मंडप, एक छोटी सी मस्जिद भी है, इसी परिसर में शाह ने बाद में, अपने बेटे और अपनी रानी का मकबरा भी बनवाया था। इस इमारत में भी इस्लामिक शैली के साथ हिंदू और जैन शैली का विशेष मिश्रण देखने को मिलता है, जो अन्य स्मारकों में कम ही देखने में आता है। यहां के गुंबद, खंभे और कमरे आदि इस्लामी शैली में ही बने हुए हैं जबकि अलंकरण हिंदू शैली की गई है। यहां की ज्यादातर संरचनाओं में मेहराब नहीं बनी हैं। लेकिन पत्थरों को काट कर बनाए गए कई दुर्लभ डिजाइन देखने को मिलते हैं।

झूलती मीनारें:

अहमदाबाद में स्थित सीदी बशीर मस्जिद को झूलती मीनार के नाम से भी जाना जाता है। झूलती मीनारें तत्कालीन भारतीय वास्तु कला का अद्भुत उदाहरण हैं। यहां किसी एक मीनार को हिलाने और उस पर दबाव पड़ने पर कुछ देर बाद दूसरी भी अपने आप हिलने लगती है। इसीलिए मस्जिद की मीनारों को झूलती मीनारें कहा जाता है।



यह अजूबा दुनिया के इंजीनियरों तथा वास्तुविदों के लिए एक रहस्यमयी और आश्चर्यजनक संरचना है, जो आज तक इन मीनारों के वास्तुशिल्प के रहस्य को समझ नहीं पाए हैं। अंग्रेजों के शासन काल में इसके रहस्य को समझने के लिए ब्रिटेन से इंजीनियरों का बुलाया गया और मीनारों के आसपास खुदाई भी की गई थी। लेकिन सारे प्रयास असफल रहे। आश्चर्य होता है कि कई बार भूकंप के झटकों से गुजरात की धरती हिली, परन्तु यह मीनारें जस की तस खड़ी रहीं हैं। इन मीनारों का देश विदेश में कहीं कोई सानी नहीं है।

लॉ गार्डन : किसी बड़े बाजार की चहल-पहल से भरा, लॉ गार्डन एक 'नाइट बाजार' है। यह बाजार



एक बगीचे के रूप में प्रसिद्ध है, जहां पर्यटक और स्थानीय लोग खरीदारी करने के लिए आते हैं। यहां खरीददारों को सस्ता और अच्छा सामान खरीदने का मौका मिलता है। टिमटिमाती रोशनी में देर रात की खरीदारी पर्यटकों के लिए एक अनूठा अनुभव है। लोग यहां जल्दी जल्दी मोलभाव करते हैं। वैसे तो कीमतें काफी ठीक ही होती हैं, फिर भी यदि आप "बार्गेनिंग" कर सौदेबाजी करने में माहिर हों तो और भी सस्ते दाम पर सामान ले सकते हैं। यह बाजार हर शाम सात बजे शुरू होता है और यहां आधी रात के बाद भी अच्छी चहल-पहल रहती है। आप इस बाजार से 'एंटीक गहने', साड़ियां, रोजमर्रा के कपड़े, पारंपरिक गुजराती परिधान, हैंडबैग, पारंपरिक हस्तकला का सामान, वॉल हैंगिंग और भी बहुत कुछ सामान खरीद सकते हैं। जब खरीदारी से थक जाएं तो आगे बढ़ने से पहले कुछ देर आराम करने के लिए गार्डन की हरियाली में बैठ सकते। लॉ गार्डन स्ट्रीट फूड के लिए भी जाना जाता है। खाने के शौकीन लोग अक्सर पारंपरिक गुजराती व्यंजनों का स्वाद लेने के लिए यहां आते हैं। ध्वनियों और रंगों से भरे वातावरण का जीवन में कम से कम एक बार अनुभव करने के लिए यहां जरूर जाएं।

हठी सिंह जैन मंदिर

हठीसिंह जैन मंदिर अहमदाबाद के प्रमुख जैन मंदिरों में एक कलात्मक मंदिर है। इसी नगर के एक सेठ हठीसिंह केसरीसिंह ने 1848 ई. में 15वें जैन तीर्थंकर श्री धर्मनाथ के सम्मान में इसका निर्माण कराया था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि उस समय गुजरात में अकाल पड़ा था और ऐसे संकट के समय में गरीब कारीगरों की मदद करने के लिए सैकड़ों श्रमिकों एवं कलाकारों को काम दिया गया था। इनमें से अधिकतर कलाकार सोमपुरा एवं सलत समुदाय के थे। आज भी यहां के लोग मंदिरों में मूर्तिकला एवं विशेषकर पत्थरों पर नक्काशी जैसे शिल्पकौशल के

लिए जाने जाते हैं। उस समय इस मंदिर के निर्माण पर आठ लाख रुपए खर्च किए गए थे। इसके निर्माण के बीच में ही, केसरीसिंह का 49 वर्ष की आयु में निधन हो गया। तब उसकी पत्नी सेठानी हरकुंवर ने यह कार्य सम्पन्न कराया। यह भी सफेद संगमरमर से बना है, जिस पर पेचीदा नक्काशी की गई है। इसमें 12 अलंकृत स्तंभों पर टिका हुआ एक मंडप भी है जिसके शिखर पर एक गुंबद बना हुआ है। इस मंडप के अंत में पूर्वी दिशा की ओर मुख्य मंदिर है, जहां से तीन बहुत प्रभावशाली नक्काशीदार मीनारों तक पहुंचा जा सकता है। इसके चारों ओर अन्य तीर्थंकरों के 52 छोटे मंदिर भी बनाए गए हैं। हाल ही में मंदिर के प्रवेश द्वार के सामने प्रांगण में महावीर स्तंभ नामक 78 फुट ऊंचे स्तंभ का निर्माण कराया गया। इस स्तंभ पर ऐसे अनेक रूपांकन किए गए हैं, जो मुगलकाल की मीनारों की याद दिलाते हैं। किंवदंती के अनुसार इसके मंदिर में पिछले 170 वर्षों से अधिक समय से एक दीप निरंतर जल रहा है।



मंदिर के प्रांगण में चारों तरफ छोटे छोटे मंदिर भी हैं और यह कलात्मक मंदिर देखने लायक है।

कांकरिया झील

शहर के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित कांकरिया झील, सुल्तान कुतुबुद्दीन द्वारा 'हौज़-ए-कुतुब' के नाम से 1451 ई. में बनवाई गई थी। झील के मध्य में एक बहुत ही सुंदर द्वीप महल है जिसे नागिना बाड़ी कहते



हैं। कहा जाता है कि मुगल काल के दौरान नूरजहां और जहांगीर अक्सर यहां घूमने आया करते थे। 2008 में इसकी मरम्मत की गई और झील के आस-पास बहुत ही खूबसूरत वाटिका, छोटा सा चिड़ियाघर और मछलीघर बनाए गए हैं। यह झील अहमदाबाद की सबसे खूबसूरत झील है।

यहां सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए दिलचस्प गतिविधियां हैं। यहां रोमांच के शौकीन लोगों के लिए, तीरंदाजी, बैलून सफारी, केला ट्यूब बोट की सवारी, बांस राफ्टिंग, कयाकिंग और जेट स्कीइंग जैसे अनेक खेल उपलब्ध हैं। इसके अलावा टॉय ट्रेन और मनोरंजन पार्क भी बनाए हैं।

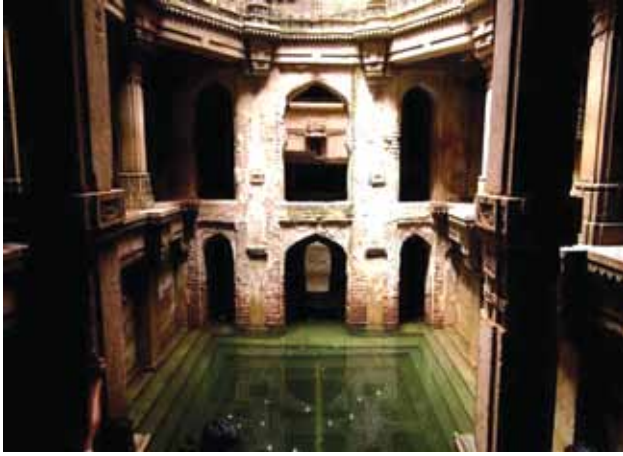
कांकरिया कार्निवल बहुत ही उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। यहां आपको विभिन्न प्रतियोगिताओं में हाथ आजमाने का एक शानदार मौका मिलता है। मनोरंजन, संस्कृति और प्रतिभा से भरपूर कांकरिया झील आज भी अहमदाबाद के निवासियों में शाम को घूमने और परिवार के साथ पिकनिक का आनन्द लेने के लिए सबसे खूबसूरत स्थान है।

अडालज की वाव:

अडालज की वाव मुख्य शहर से लगभग 15 कि.मी. दूर है। वाव अर्थ है सीढ़ियों वाला कूआं। पुराने समय में जल संरक्षण के लिए व्यवस्था की जाती थी।



यहां वर्षा के पानी को इकट्ठा किया जाता था और बाद में उसका उपयोग किया जाता था। इसमें नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं। इस बाब की दावारों पर देखने लायक अच्छी खूबसूरती से कारीगरी की गई है। इसे देखने देश विदेश से पर्यटक आते हैं।



अदलाव जी की बावड़ी

अहमदाबाद शहर संग्रहालयों के लिए भी प्रसिद्ध है।

श्रेयस लोक संग्रहालय

श्रेयस लोक संग्रहालय गुजरात की लोक कला के साथ अहमदाबाद के ऐतिहासिक महत्व, संस्कृति और परंपरा का अद्भुत संग्रह प्रदर्शित करता है। कला और शिल्प के पारखी इस संग्रहालय में घूमते हुए घरेलू और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए अतीत में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं का एक अद्भुत संग्रह को देख सकते हैं। गुजरात के स्थानीय कारीगरों की कला के साथ-साथ देश की पारंपरिक लोक कलाओं के संग्रह को संरक्षित करने के उद्देश्य से एक निजी ट्रस्ट श्रेयस फाउंडेशन ने अप्रैल 1977 में श्रेयस लोक संग्रहालय की स्थापना की थी। अम्बावाड़ी के श्रेयस टेकरा हिल पर स्थित संग्रहालय का प्रबंधन इसी ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

संग्रहालय के बारे में... संग्रहालय में राज्य की संस्कृति, विरासत और कला को संजीदगी से संजोया गया है। संग्रहालय के चार खंड हैं, लोकायतन लोक संग्रहालय, कल्पना मंगलदास बालायतन संग्रहालय, कथानी और संगीतवेद खंड।

लोकायतन लोक संग्रहालय में कलाकृतियों का एक अच्छा संग्रह है जो गुजरात के विभिन्न समुदायों की कला और शिल्प के बारे में सूचनाप्रद विवरण प्रदर्शित करता है। यहां रंगीन कढ़ाई का काम, मनके, लकड़ी का काम, धातु और चमड़े का काम खूबसूरती से प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनियों में पारंपरिक आभूषण, जूते और पुरानी गाड़ियां भी शामिल हैं।

यहां की प्रदर्शनियों में एक पारंपरिक पुरानी रसोई, टाई-डाई रजाई, लकड़ी के बक्से उल्लेखनीय हैं।



कल्पना मंगलदास बालायतन संग्रहालय : 1982 में लोक संग्रहालय के परिसर में ही स्थापित किया गया था। लोक संग्रहालय का यह दिलचस्प खंड देश की हस्तकलाओं पर केंद्रित है। यहां मुखौटे, कठपुतलियां, वेशभूषा, सिक्के, हथियार और ऊंट, घोड़े, गाय, भैंस जैसे पशुओं को सजाने के वस्त्र आदि भी रखे हैं। इसमें भारत सहित करीबन 54 देशों के खिलौने, शिल्प और वस्तुओं का अद्भुत संग्रह दिखाया गया है।



संग्रहालय का कथानी खंड 2004 में बनाया गया था जिसमें कठपुतली शो, स्टेज शो, नाटक, छाया नाटक, लोक, शास्त्रीय प्रदर्शन, नृत्य और देश के कई मेलों और त्योहारों के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं।

संग्रहालय के श्रेयस संगीतवेद खंड में देश और दुनिया के कुछ भागों के संगीत वाद्य यंत्रों के एक बहुमूल्य संग्रह को दिखाया गया था। 1984 में बने, इस खंड में पर्यटक शास्त्रीय और लोक संगीत में लोकप्रिय ताल वाद्ययंत्र, सुषिर, तार और गज वाद्ययंत्र देख सकते हैं।

प्रवेश समय और शुल्क : यह संग्रहालय सोमवार और सार्वजनिक छुट्टियों के दिन बंद रहता है। वयस्कों के लिए प्रवेश शुल्क रु.10/-, बच्चों के लिए रु.7/- और विदेशियों के लिए रु.90/- है। संग्रहालय के भीतर फोटोग्राफी की अनुमति नहीं है।

कैलिको संग्रहालय

कैलिको वस्त्र संग्रहालय अहमदाबाद का एक दिलचस्प स्थान है। इस संग्रहालय में पुराने और आधुनिक तरीकों से कपड़ा बनाने की कारीगरी प्रदर्शित की गई है। इसके अलावा यहां कपड़ा बनाने और बुनाई करने की कुछ पुरानी मशीनें भी रखी गई हैं। इस संग्रहालय में 17वीं शताब्दी से पहले के भी कुछ सामान संग्रहित हैं। इसकी विश्व के श्रेष्ठ वस्त्र संग्रहालयों में गिनती की जाती है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के वस्त्रों के संग्रह में ऐसे वस्त्र भी रखे गए हैं, जिनका राजाओं द्वारा विभिन्न धार्मिक अवसरों पर उपयोग किया जाता था। मुगल शासकों की पोशाकों के साथ ही क्षेत्रीय और प्रांतीय स्तर पर इस्तेमाल की जाने वाली पोशाकें भी हैं। संग्रहालय में कपड़ों के अलावा, अन्य दूसरे सामान, जैसे कि घर अथवा मंदिर



की सजावट के फर्नीचर, पर्दे, कपड़े के झूमर आदि भी रखे गए हैं। इसके अतिरिक्त यहां कपड़ा बनाने तथा बुनाई से सम्बन्धित विषयों पर एक पुस्तकालय भी है। देश विदेश के वस्त्र जगत के शोधकर्ताओं के लिए इसे बहुत उपयोगी माना जाता है। बहुत से छात्र 600 साल पुराने शहर की विविध और समृद्ध कपड़ा संस्कृति को जानने और कपड़े के इतिहास की बेहतर जानकारी पाने के लिए इस अद्भुत संग्रहालय में आते हैं।

कैलिको संग्रहालय के बारे में...

कहा जाता है कि भारतीय कला के मर्मज्ञ, प्रख्यात इतिहासकार और दार्शनिक आनंद कुमारस्वामी ने अपनी गुजरात यात्रा के दौरान यहां के जाने माने उद्योगपति और कैलिको के मालिक, श्री गौतम साराभाई को वस्त्र उद्योग से संबंधित एक संस्थान स्थापित करने का सुझाव दिया। 1949 में गौतम साराभाई और उनकी बहन गीता साराभाई ने देश की पोशाकों की पेचीदगियों को दर्शाने वाले अविश्वसनीय संग्रहालय की कैलिको मिल्स में ही स्थापना की। इस संग्रहालय को 1983 में शाहीबाग में साराभाई हाउस में स्थानांतरित कर दिया गया था। एक सामाजिक संस्था के रूप में साराभाई फाउंडेशन इसका प्रबंधन करता है।

पतंग संग्रहालय

पालड़ी में संस्कार केंद्र के परिसर में स्थित, पतंग संग्रहालय भानुभाई शाह ने बनावाया था। 1954 में प्रसिद्ध वास्तुकार ले कोर्बुसियर द्वारा डिज़ाइन किए गए संग्रहालय में विशिष्ट पतंगों का अच्छा खासा संग्रह है। विभिन्न आकार, रंग, प्रिंट और कागज की मिरर-वर्क पतंगें, ब्लॉक प्रिंट पतंग, हेक्सागोनल आकार वाले रोकोकू नाम की जापानी पतंगें आदि

प्रदर्शित की गई हैं। अपने प्रदर्शन की तरह, संग्रहालय की इमारत भी सुंदर है।



ऑटो वर्ल्ड विंटेज कार संग्रहालय

पुरानी कारों के पारखी श्री प्राण लाल भोगी लाल पटेल ने अपनी पुरानी कारों के निजी संग्रह को एक संग्रहालय में बदल दिया। इस संग्रह में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ रोल्स रॉयस, बेंटले, जगुआर, कैडिलैक, ऑस्टिन और भी कई कारें शामिल हैं। यहां सबसे दिलचस्प बात है कि आप एक निश्चित दूरी के लिए 500 रुपये का शुल्क देकर कारों को चला सकते हैं। दास्तान एस्टेट, सरदार पटेल रिंग रोड पर स्थित इस म्यूजियम में प्रवेश शुल्क 50/- प्रति व्यक्ति है।

सरदार वल्लभाई पटेल राष्ट्रीय संग्रहालय

अहमदाबाद के शाहीबाग में मोती शाही महल के परिसर में स्थित, सरदार वल्लभाई पटेल राष्ट्रीय संग्रहालय भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री सरदार वल्लभाई पटेल को समर्पित स्मारक है। एक सुंदर बगीचे से घिरे, संग्रहालय में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित फोटो प्रदर्शनी हैं।

साइंस सिटी:

अहमदाबाद से छः कि.मी. दूर पश्चिम की ओर साइंस सिटी बनाई गई है। यहां विभिन्न प्रकार के



वैज्ञानिक प्रयोगों के बारे में बताया जाता है। साइंस सिटी विशेषरूप से बच्चों को आकर्षित करती है। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए वैज्ञानिक प्रयोग भी प्रदर्शित किए गए हैं। साइंस सिटी में किसानों को “आधुनिक

कृषि कैसे की जाए?” जैसे विषय पर खास जानकारी प्रदान की जाती है। यहां किसान ही नहीं छात्र तथा आम पर्यटक भी बड़ी संख्या में आते हैं।



साबरमती गांधी आश्रम:

साबरमती नदी के शांत और निर्मल किनारे पर स्थित, साबरमती आश्रम अहमदाबाद में पर्यटकों के लिए निस्संदेह सबसे बड़ा आकर्षण है। शहर से सात कि.मी. दूर साबरमती के किनारे महात्मा गांधी ने 1915 ई. में इस आश्रम की स्थापना की थी। इसे ‘गांधी आश्रम’ या ‘महात्मा गांधी आश्रम’ के रूप में भी जाना जाता है। यह मूलतः गांधीजी का पारिवारिक निवास था। यहीं से गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत की थी। भारत सरकार ने आश्रम को एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में मान्यता

दी है। साबरमती आश्रम में मगन निवास, हृदय कुंज, गांधी स्मारक संग्रहालय, विनोबा मीरा कुटीर, उद्योग मंदिर, उपासना मंदिर जैसे कई अन्य महत्वपूर्ण भवन स्थित हैं। इन सभी का अपना अपना अलग ही इतिहास है जिनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। प्रतिदिन आयोजित किया जाने वाला ध्वनी एवं प्रकाश का कार्यक्रम देखने योग्य है।

कई निजी दूर ऑपरेटर्स सामुहिक या दो-चार लोगों के लिए आश्रम की पैदल यात्रा आयोजित करते हैं। आश्रम की यात्रा के लिए किसी दूर एजेंसी से संपर्क कर सकते हैं और तदनुसार अपना समय बुक





करा सकते हैं। टिकट और गाइड का शुल्क पैकेज में शामिल होता है। आश्रम को देखने में आम तौर पर 3-4 घंटे लगते हैं। कुछ ऑपरेटर्स आपके होटल से पिक-अप और ड्रॉप की सुविधा भी देते हैं। इस यात्रा में दो से तीन हजार रूपए का खर्च आ सकता है।

कैसे पहुंचे : हवाई मार्ग से : यहां के सरदार वल्लभ भाई पटेल विमानपत्तन से देश के प्रमुख भारतीय शहरों के साथ साथ कोलंबो, मस्कट, लंदन और न्यूयार्क के लिए भी नियमित उड़ानें हैं।

रेल मार्ग : अहमदाबाद के लिए देश के लगभग सभी प्रमुख नगरों से रेल सुविधा उपलब्ध है।

साबरमती रिवरफ्रंट पृष्ठभूमि :

प्राचीन काल से ही साबरमती नदी अहमदाबाद के जीवन का एक अभिन्न अंग रही है। पानी का एक

महत्वपूर्ण स्रोत होने के साथ ही इसने सांस्कृतिक और मनोरंजक गतिविधियों को एक पृष्ठभूमि प्रदान की है। शुष्क मौसम के दौरान, नदी के थल को खेती के उपयोग में लाया जाता था। लेकिन समय के साथ विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के चलते, इसके दोनों किनारों पर अवैध बस्तियां बस गईं, औद्योगिक विकास होने पर सीवेज का गंद नदी में आने से पर्यावरण और जन-स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया। इस बुरी स्थिति को दूर करने के लिए काफी समय से विचार किया जा रहा था और इसके विकास हेतु अंततः 1970 में साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट निगम (SRFD) नामक एक बहुआयामी परियोजना बनाई गई।

साबरमती के विकास की यह परियोजना 1998 में शुरू की गई, जिसमें भूमि के 85% से अधिक भाग का खुला सार्वजनिक उपयोग किया है।





नदियां अनंतकाल से ही संस्कृति के उद्गम का प्रतीक बन कर नगर अलग पहचान देती रही है। अहमदाबाद क्षेत्र में भी साबरमती नदी गुजरात और इसके लोगों की जीवन रेखा के समान है। पिछले कई दशकों से साबरमती सूखती जा रही थी। इसकी पहचान बच्चों के क्रिकेट मैच मैदान के रूप में बन गई थी। वर्ष 2001 में मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सत्ता संभालने के बाद उन्होंने साबरमती रिवरफ्रंट के पुनर्विकास को प्राथमिकता दी और साबरमती रिवरफ्रंट डेवलपमेंट के काम में तेजी आई।

इस परियोजना ने आस-पास के क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन किए गए। अब पालड़ी और पिरोना के पास खेलों के लिए एक खुले मैदान में स्पोर्ट्स हब हैं। यहां अब शहर के लोग मनोरंजक खेलों के साथ हरे-भरे पार्कों और उद्यानों का आनंद लेते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर अन्य सुविधाओं के साथ नियमित अंतराल पर, हर पुल के नीचे सीढ़ियां और रैंप बनाए गए हैं।

विकलांग लोगों के लिए सैर को आसान बनाने के लिए लिफ्ट लगाई गई हैं। दोनों ओर के किनारों के निचले स्तर को पैदल यात्रियों और साईकिल चालकों के लिए 20 कि.मी. से अधिक लम्बा पैदल सैरपथ सुरक्षित किया गया है।

लोगों को आकर्षित करने के लिए रिवरफ्रंट मार्केट पर 'रविवारी बाजार' है। इस बाजार में पक्की सड़कें, बैठने के लिए बैंच, फूड कोर्ट, वाहन प्रवेश मार्ग तथा पार्किंग, स्वच्छ जन प्रसाधन स्थानों सहित करीब 1,600 वेंडर प्लेटफॉर्म हैं। आस पास का पूरा क्षेत्र 800 से अधिक विविध पेड़ों से छायादार है। प्रदर्शनी केंद्र में व्यापार-उचित सुविधाएं उपलब्ध हैं। स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक 'ओपन थिएटर' बनाया गया है। पुराने धोबी घाट को हटाने के बजाय, वहां नई सुविधाएं दी गई हैं ताकि आज की पीढ़ी देख सके कि कपड़े धोने के लिए परंपरागत रूप से नदी का कैसे उपयोग करते हैं और साथ ही वहां काम करने वाले लोग भी परियोजना से लाभान्वित हों सके।



अहमदाबाद जाने के लिए सबसे उत्तम समय अक्टूबर से फरवरी तक का है। इसके अलावा नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्रि उत्सव (अक्टूबर-नवम्बर) में भी जाया जा सकता है। यदि आप यहां घूमने के लिए जा रहे हैं तो प्रदूषण और शोर के वातावरण का सामना करने को भी तैयार रहें। बारिश के महिनो के अलावा पूरे साल गर्मी का माहौल रहता है।



दिल्ली की विरासत-1

हुमायूँ का मकबरा

— राजेन्द्र सिंह मनराल

हुमायूँ का मकबरा इमारत परिसर मुगल वास्तुकला से प्रेरित स्मारक है। यह नई दिल्ली के दीन पनाह गढ़ यानि आज के पुराने किले के निकट निज़ामुद्दीन पूर्व क्षेत्र में मथुरा मार्ग के निकट स्थित है। यहां मुख्य इमारत हुमायूँ का मकबरा है और साथ ही मुगल परिवार के कई अन्य लोगों की कब्रें भी हैं।

यह भारत में मुगल वास्तुकला का प्रथम उदाहरण है। 1993 में इस इमारत समूह को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। इस मकबरे में वही चारबाग शैली है, जिसने भविष्य में ताजमहल को जन्म दिया था।

यह मकबरा हुमायूँ की विधवा बेगम हमीदा बानो के आदेश पर 1562 में बनाया गया था। एक समकालीन इतिहासकार अब्द-अल-कादिर बदायुनी के अनुसार इस मकबरे का स्थापत्य फारसी वास्तुकार सैयद मिराक गियासुद्दीन ने किया था, जिन्हें हेरात से विशेष रूप से यह इमारत बनाने के लिए बुलवाया गया था। मुख्य इमारत लगभग आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई और इससे भारतीय उपमहाद्वीप में चारबाग शैली का आरम्भ हुआ था। यहां सबसे पहले लाल बलुआ पत्थर का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था। इस इमारत के पूरा होने से पहले ही वे चल बसे और उनके बाद उनके पुत्र



1570 में निर्मित यह मकबरा विशेष सांस्कृतिक महत्व का है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था। इसके बाद ताज महल, लाल किला जैसे देश के अनेक भवनों के निर्माण में इसके वास्तुशिल्प का प्रभाव देखा जा सकता है।

सैयद मुहम्मद इब्न मिराक गियासुद्दीन ने अपने पिता का कार्य पूर्ण किया और मकबरा 1571 में बनकर पूर्ण हुआ।

इस परिसर में मुख्य मकबरा बादशाह हुमायूँ का है। मगर साथ ही मल्लिका बेगा बेगम, हमीदा

*लिपिक, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली





बेगम और हुमायूँ के परपोते और शाहजहाँ के बेटे, दारा शिकोह तथा कई दूसरे मुगल उत्तराधिकारियों जैसे जहादर शाह, फर्रुखिशायर, रफी उल-दर्जत, रफी उद-दौलत एवं आलमगीर द्वितीय आदि की कब्रें स्थित हैं।

स्थल

यमुना नदी के किनारे मकबरे के लिए इस स्थान का चुनाव 14वीं शताब्दी के सूफी संत, हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह से निकटता के कारण किया गया था। क्योंकि किसी संत की कब्र के पास दफनाया जाना शुभ माना जाता है। संत निजामुद्दीन दिल्ली के प्रसिद्ध सूफी संत हुए हैं और दिल्ली के शासकों द्वारा इन्हें काफ़ी सम्मान दिया जाता था।

गुलाम वंश के शासन में यह क्षेत्र किलोकरी किले में स्थित थी, जो नसीरुद्दीन (1268–87) के पुत्र तत्कालीन सुल्तान केकूबाद की राजधानी हुआ करती थी। बताशेवाला परिसर हुमायूँ मकबरे परिसर की विश्व विरासत स्थल के बफर जोन में आता है जो दोनों परिसरों को एक छोटी सड़क से अलग करता है।

मकबरे के बारे में...

मुगल सम्राट हुमायूँ के मकबरे के बारे में विलियम हडसन ने लिखा है कि 27 जनवरी 1556 को हुमायूँ की मृत्यु के बाद, पहली बार दिल्ली के पुराने किले में उनके महल में दफनाया गया था। इसके बाद 1558 में, खंजर बेग ने इसे पंजाब के सरहिंद में ले जाकर दफनाया। बाद में 1571 में अकबर ने सरहिंद में अपने पिता की समाधि के दर्शन किए। हुमायूँ की पहली पत्नी और अकबर की मुख्य संरक्षक, बेगा बेगम के आदेश पर हुमायूँ के मकबरे का दिल्ली में निर्माण 1562 में शुरू हुआ और 1572 में पूरा हुआ था। उस समय इस पर 15 लाख रुपये की लागत आई थी। जिसका पूरा भुगतान मल्लिका ने किया था। बेगा

बेगम को अपने पति की मृत्यु पर इतना दुःख हुआ कि उन्होंने अपने जीवन को एकमात्र उद्देश्य के लिए समर्पित कर दिया। आइन-ए-अकबरी के अनुसार, 16 वीं सदी में अकबर के शासनकाल में लिखे एक दस्तावेज के अनुसार, बेगा बेगम ने हज यात्रा से लौटने के बाद मकबरे के निर्माण की देखरेख की थी। आइन-ए-अकबरी के अनुसार एक अन्य हाजी बेगम भी थीं, जो हुमायूँ की ममेरी बहन थी और बाद में उसकी बेगम बनी, उसको मकबरे के निर्माण का दायित्व सौंपा गया था।

वास्तुकला...



प्रवेश के लिए ईवान और श्वेत संगमरमर पर बलुआ पत्थर के ज्यामितीय और संगमरमर के पीट्रा ड्यूरा पच्चीकारी के नमूने।

बाहरी रूप

पत्थरों से बनी इस विशाल इमारत में प्रवेश के लिए दो 16 मीटर ऊंचे दुमंजिले प्रवेशद्वार पश्चिम और दक्षिण में बने हैं। इन द्वारों में दोनों ओर कक्ष हैं एवं ऊपरी तल पर छोटे प्रांगण हैं। मुख्य इमारत के ईवान पर बने सितारे के समान ही एक छः किनारों



वाला सितारा मुख्य प्रवेशद्वार की शोभा बढ़ाता है। मकबरे का निर्माण मूलरूप से पत्थरों को गारे-चूने से जोड़कर किया गया है और उसे लाल बलुआ पत्थर से ढंका हुआ है। इसके ऊपर पच्चीकारी, फर्श की सतह, झरोखों की जालियों, द्वार-चौखटों और छज्जों के लिए श्वेत संगमरमर का इस्तेमाल किया गया है। मकबरे का विशाल मुख्य गुम्बद भी श्वेत संगमरमर से सजा हुआ है। मकबरा आठ मीटर ऊंचे मूल चबूतरे

मीटर ऊंचा पीतल का कलश स्थापित है और उसके ऊपर चंद्रमा लगा हुआ है, जो तैमूर वंश के मकबरों में मिलता है।

गुम्बद सफेद संगमरमर और शेष इमारत लाल बलुआ पत्थर से बनी है, जिसपर श्वेत और काले संगमरमर तथा पीले बलुआ पत्थर से नक्काशी का काम किया गया है। रंगों का यह संयोजन इमारत को एक अलग आभा देता है।



पर खड़ा है, 12000 वर्ग मीटर की ऊपरी सतह को लाल जालीदार मुंडेर घेरे हुए है। इस वर्गाकार चबूतरे के कोनों को छांटकर अष्टकोणीय आभास दिया गया है। इस चबूतरे की नींव में 56 कोठरियां बनी हुई हैं, जिनमें 100 से अधिक कब्रें बनायी हुई हैं। यह पूरा निर्माण एक कुछ सीढ़ियों पर ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है।

फारसी वास्तुकला से प्रभावित यह मकबरा 47मी. ऊंचा और 300 फीट चौड़ा है। इमारत पर फारसी शैली का गुम्बद बना है, जो सर्वप्रथम सिकन्दर लोदी के मकबरे में देखा गया था। गुम्बद के ऊपर छः

आंतरिक बनावट

बाहर से सरल दिखने वाली इमारत की आंतरिक योजना कुछ जटिल है। इसमें मुख्य केन्द्रीय कक्ष सहित नौ वर्गाकार कक्ष बने हैं। इनमें बीच में बने मुख्य कक्ष को घेरे हुए शेष आठ दुमंजिले कक्ष बीच में खुलते हैं। मुख्य कक्ष गुम्बददार (हुजरा) एवं दुगुनी ऊंचाई का एक-मंजिला है और इसमें गुम्बद के नीचे एकदम बीच में आठ किनारे वाले एक जालीदार घेरे में हुमायूँ की कब्र है। यह इस इमारत का मुख्य मकबरा



है। इसका प्रवेश दक्षिणी ओर एक ईवान से होता है, तथा अन्य दिशाओं के ईवानों में श्वेत संगमरमर की जाली लगी हैं। सम्राट की असली समाधि ठीक नीचे के कक्ष में बनी है, जिसका रास्ता बाहर से जाता है। (इसके ठीक ऊपर दिखावटी किन्तु सुन्दर प्रतिकृति बनाई हुई है)। नीचे तक खास लोगों को ही जाने की अनुमति दी जाती है। पूरी इमारत में संगमरमर पर पीट्रा ड्यूरा नामक पच्चीकारी का इस्तेमाल किया गया है। इस प्रकार के कब्र का नियोजन भारतीय-इस्लामिक स्थापत्यकला का महत्वपूर्ण अंग हैं।

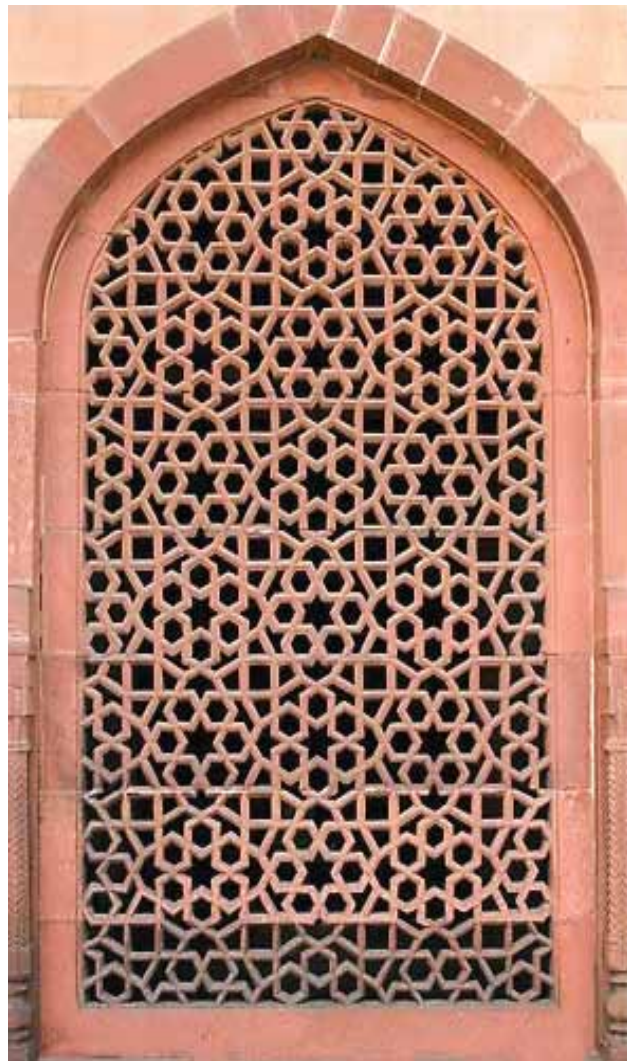
पीट्रा ड्यूरा एक ऐतिहासिक सजावटी कला है। इसमें उत्कृष्ट पद्धति से काटकर, तराशे हुए और चमकाए गए रंगीन पत्थरों के टुकड़ों को दीवार अथवा पत्थर में खूबसूरती से चित्रों के रूप में चिपकाया जाता है। यह कार्य इतनी बारीकी से किया जाता है कि पत्थरों के बीच का महीनतम खाली स्थान भी अदृश्य हो जाता है।

मुख्य कक्ष में संगमरमर की जालीदार घेरे के ठीक ऊपर मेहराब भी बना है, जो पश्चिम में मक्का की ओर बना है। यहां मक्का की दिशा से ही रोशनी अंदर आती है।

प्रधान कक्ष के चार कोणों पर चार अष्टकोणीय कमरे हैं, जो मेहराबदार दीर्घा से जुड़े हैं। प्रधान कक्ष की भुजाओं के बीच बीच में चार अन्य कक्ष भी बने हैं। यह आठ कमरे मुख्य कब्र की परिक्रमा बनाते हैं। इन प्रत्येक कमरों के साथ 8-8 कमरे और बने हैं। इन छोटे कमरों में कई मुगल नवाबों और दरबारियों की कब्रें समय समय पर बनाई गई हैं।

हुमायूँ के मकबरे को 'मुगलों का शयनागार' भी कहा जाता है क्योंकि यहां मुगल परिवार के 150 से अधिक लोग दफनाए गए हैं। जिनमें से अधिकांश

पर पहचान न खुदी होने के कारण व्यक्ति का पता नहीं है। लेकिन यह निश्चित है कि सभी मुगलों के शाही परिवार या दरबारियों में से ही रहे होंगे।



चार-बाग

मुख्य इमारत को बनाने में आठ साल लगे, किन्तु इसकी पूर्ण शोभा इसको घेरे हुए 30 एकड़ में फैले चारबाग शैली के मुगल बागों से निखरती है। यह बाग भारत ही नहीं वरन दक्षिण एशिया में भी अपनी तरह का पहला बाग था। साथ ही यह उच्च श्रेणी की ज्यामिती का भी नमूना है। बागे-बहिश्त (जन्नत का बाग) चार दीवारी के भीतर बना है। यह बाग चार



भागों में खियाबान (पैदल पथों) और दो विभाजक केन्द्रीय जल नालिकाओं द्वारा बंटा हुआ है। इस प्रकार बने चार बागों को फिर से पत्थर के बने रास्तों द्वारा चार-चार छोटे भागों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार कुल मिलाकर 36 भाग बनते हैं। केन्द्रीय जल नालिका मुख्य द्वार से मकबरे तक जाती हुई उसके नीचे जाती और दूसरी ओर से फिर निकलती हुई प्रतीत होती है।

मकबरे को घेरे हुए तीन ओर पत्थर की ऊंची चारदीवारी है। चौथी ओर (कभी यहां पास में ही) यमुना नदी बहा करती थी, जो समय के साथ इस स्थान से बहुत दूर हो गई है। केन्द्रीय पैदल पथ के दक्षिण तथा पश्चिम में दो दुमंजिला दरवाजे हैं, इनमें से अब पश्चिमी द्वार ही इस्तेमाल किया जाता है। पूर्वी दीवार से जुड़ी हुई एक बारादरी है। अपने नाम के अनुसार इसमें 12 दरवाजे हैं, जहां ठंडी बहती खुली हवा का आनंद लिया जाता था। उत्तरी दीवार से लगा हुआ एक हम्माम है।



चारबाग फारसी-शैली में बाग का ऐसा डिजाइन होता है, जिसमें एक वर्गाकार बाग को चार छोटे भागों में और चार पैदल पथों में विभाजित किया जाता है। इसके हरेक बाग में फूलों की चार बड़ी क्यारियां होती हैं। ताजमहल के बाग भी इसी शैली के उत्कृष्टतम उदाहरण हैं।

अन्य स्मारक

मकबरे परिसर में चारबाग के अंदर ही दक्षिण-पूर्वी दिशा में 1590 में बना नाई का गुम्बद है। वह शाही नाई हुआ करता था। यह मकबरा एक ऊंचे वर्गाकार चबूतरे पर बना है जिस में जाने के लिए





दक्षिणी ओर से सात सीढ़ियां बनी हैं। इस अकेले कक्ष के ऊपर एक दोहरा गुम्बद बना है। अंदर दो कब्रों पर कुरान की आयतें खुदी हुई हैं। एक कब्र पर 999 अंक खुदे हैं, जिसका अर्थ हिजरीका वर्ष 999 है जो 1590-91 ई. बताता है।

इस परिसर में मुख्य चारदीवारी के बाहर स्थित अन्य स्मारकों में प्रमुख है: बू हलीमा का मकबरा और उसके बाग। यह मकबरा अब ध्वंस हो चुका है और अवशेषों से ज्ञात होता है कि यह केन्द्र में स्थित नहीं था।

इसके साथ ही अरब की सराय बनी है। जिसे हमीदा बेगम ने मुख्य मकबरे के निर्माण में लगे कारीगरों के लिए बनवाया था। इस परिसर में ही अफसर वाला मकबरा भी बना है, जो अकबर के एक नवाब के लिए बना था।

इस पूरे परिसर के बाहर बना है नीला बुर्ज नामक मकबरा। इसका यह नाम इसके गुम्बद के ऊपर लगी नीले रंग की चमकीली टाइलों के कारण पड़ा है।

एक अंग्रेज़ व्यापारी विलियम फिंच 1611 में मकबरे को देखने आया था। उसने लिखा है कि केन्द्रीय कक्ष की आंतरिक सज्जा बढ़िया कालीनों से परिपूर्ण थी। कब्रों के ऊपर एक श्वेत शामियाना लगा होता था और उनके सामने ही पवित्र ग्रंथ रखा था। इनके साथ ही हुमायूँ की पगड़ी, तलवार और जूते भी रखे रहते थे। यहां के चारबाग 13 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए थे। लेकिन इसके बाद के मुगल शासकों के पास इतना पैसा नहीं रहा कि इन बागों आदि का मंहगा रखरखाव कर पाते और 18वीं शताब्दी तक स्थानीय लोगों ने यहां सब्जी आदि उगाना शुरू कर दिया था।

अंग्रेजों के आने के बाद, 1857 के भारतीय

स्वतंत्रता संग्राम के बाद इस स्मारक के बुरे दिन आने लगे थे। क्योंकि अंग्रेजों ने पूरी तरह से दिल्ली पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने इसे एक सैरगाह का रूप दे दिया। 1860 में, बगीचे के मुगल डिजाइन को अंग्रेजी उद्यान-शैली में बदल कर इसमें फूलों की चक्राकार क्यारियां बनाई गईं। जलवाहिकाओं को संवारने के लिए उनमें फव्वारे लगाए गए और बड़े पैमाने पर फूलों के पौधे एवं पेड़ लगाए गए थे। यह दोष 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में ठीक किया गया था, जब वायसराय लॉर्ड कर्जन ने 1903-1909 के बीच मूल स्मारकों के जीर्णोद्धार की एक बड़ी परियोजना शुरू की। 1915 की रोपण योजना ने पेड़ों के साथ अस्तर द्वारा केंद्रीय और विकर्ण अक्ष पर जोर दिया, हालांकि कुछ पेड़ भी मंच पर लगाए गए थे जो मूल रूप से टेंट के लिए आरक्षित थे।।

1782 में, भारत में प्राचीन स्मारकों के आधिकारिक क्यूरेटर ने अपनी पहली प्रकाशित रिपोर्ट में उल्लेख किया था कि मुख्य उद्यान में शाही वंशजों ने यहां गोभी और तम्बाकू की खेती करनी शुरू कर दी थी।

अगस्त, 1947 में भारत के विभाजन के समय, पुराना किला और हुमायूँ के मकबरे को नए बने पाकिस्तान से भारत में आने वाले मुस्लिम विस्थापितों के लिए शरणार्थी कैम्प में बदल दिया गया था। यह कैम्प लगभग पांच साल तक चले और इससे स्मारक को, खासकर इसके बगीचों, पानी की सुंदर छोटी नहरों को बहुत नुकसान हुआ।

आखिरकार, इस से बचने के लिए, मकबरे के भीतर के सेनेटाफ ईंट से घेर दिए गए। आने वाले वर्षों में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने भारत में विरासत स्मारकों के संरक्षण की जिम्मेदारी ली। पुनरुद्धार कार्य के आरंभ होने से पहले यहां गैरकानूनी अतिक्रमण थे। इस कारण इस बहुमूल्य संपदा के अस्तित्व को खतरा बना हुआ था।



धीरे-धीरे इमारत और उसके बागानों को बहाल किया गया। 1985 तक, मूल जल सुविधाओं को बहाल करने के लिए चार असफल प्रयास किए गए थे। परिसर की बहाली में एक महत्वपूर्ण चरण 1993 के आसपास शुरू हुआ, जब स्मारक को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था।

नीले गुम्बद की तरफ़ यहां एक बड़ी झोंपड़-पट्टी थी, जिन्हें वोट की राजनीति के चलते भरपूर राजनीतिक समर्थन मिलता रहा था। इन सब के कारण दरगाह हज़रत निज़ामुद्दीन का भी बुरा हाल था। वहां का पवित्र कुंड एक गंदे नाबदान में बदल गया था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा आगा खां सांस्कृतिक ट्रस्ट के सहयोग से 1997 में यहां का जीर्णोद्धार कार्य आरंभ किया गया जो मार्च, 2003 में पूर्ण हो पाया था। इसके अंतर्गत 12 हेक्टेयर लॉन में अनेक पौधों और वृक्षों का पौधारोपण किया गया, जिसमें आम, नींबू, नीम, गुलमोहर और चमेली के पेड़ थे। पैदल रास्तों के साथ-साथ बहते जल की नालियाँ फिर से बनाया गया।



इसके लिए नालियों में 1:4000 पैमाने पर ढाल बनाई गई जिससे इसके बागों में सिंचाई हेतु जल-प्रवाह हुआ और साथ ही सूखे फव्वारे एक बार पुनः खिल उठे। इसके अलावा एक और बड़ा कार्य था यहां वर्षा जल संचयन की व्यवस्था के अंतर्गत 28 भूमि जल पुनर्भरण ताल बनाए गए और अनेक पुराने

सूखे कुओं की सफ़ाई कर उन्हें फिर से इस्तेमाल करने लायक बनाया गया। इस पूरे कार्य को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के राष्ट्रीय सांस्कृतिक निधि, आगा खां सांस्कृतिक ट्रस्ट और ओबेरॉय होटल समूह के सहयोग से वहन किया गया था।

पुनरुद्धार-कार्य के बाद इस परिसर में और आसपास के स्थानों पर जमीन-आसमान का बदलाव आ गया। स्मारक के किनारे हरियाली वापस लौट आयी थी। स्मारक को घेरे हुए शानदार उद्यान एक बार फिर इसकी शोभा में चार चांद लगा रहे थे। इसके बाद रात्रि प्रकाश व्यवस्था आरंभ हुई जिसके साथ इस स्मारक की शोभा देखते ही बनती थी।

प्रकाश व्यवस्था

दिल्ली में आयोजित किए गए राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने का अनुमान था। हालांकि, मकबरे पर प्रकाश व्यवस्था पहले से ही थी, फिर भी इसे विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल बनाने की योजना के अधीन यहां पर बेहतर प्रकाश व्यवस्था की गई है। परिसर में उद्यानों का विकास और प्रकाश व्यवस्था के साथ साथ जरूरी नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं जिनमें पीने का पानी, टायलेट और कैफेटेरिया आदि की व्यवस्था है।

सर्वोत्तम विश्वव्यापी स्मारक

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली के पहले भव्य राजवंशीय मकबरों में से एक है जो 80 साल बाद अपने ताजमहल में पहुंचने के बाद स्थापत्य शैली के साथ मुगल वास्तुकला का पर्याय बन गया था। हुमायूँ के बेटे सम्राट अकबर के संरक्षण में हुमायूँ का मकबरा 1560 में बनाया गया था। फ़ारसी और भारतीय कारीगरों ने बाग़-मकबरे के निर्माण के लिए एक साथ काम किया, जो कि इस्लामिक दुनिया में किसी भी मकबरे से पहले की तुलना में कहीं ज्यादा बड़ा है। हुमायूँ का मकबरा चार बाग का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।





मकबरा अपने आप में एक उच्च, चौड़े सीढ़ीदार मंच पर खड़ा है। इसकी अष्टकोणीय स्वरूप के साथ चार लंबे किनारे हैं। यह 42.5 मीटर ऊंचा डबल गुंबद है जिसमें संगमरमर के खंभों वाली छत्रियां लगी हैं। मध्य छत्रियों के गुंबदों को चमकती हुई चीनी मिट्टी की टाइलों से सजाया गया है।

इसने मुगल वास्तुकलामें एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व किया और भारत में फारसी बागों की विशिष्ट शैली चारबाग को आरम्भ किया गया। इसने बाद के मुगल वास्तुकला के लिए एक मिसाल कायम की।

प्रवेश शुल्क: भारत के नागरिकों सार्क और बिस्स्टेक देशों के पर्यटकों के लिए रु.10 प्रति व्यक्ति। विदेशी नागरिकों के लिए रु.250 प्रति व्यक्ति। 15 वर्ष तक के बच्चों को प्रवेश शुल्क की आवश्यकता नहीं है।

इस परिसर से कुछ और दूर ही मुगल कालीन अन्य स्मारकों में बड़ा बताशेवाला महल, छोटे बताशेवाला महल और बारापुला नामक एक पुल है जिसमें 12 खम्भों के बीच 11 मेहराब हैं, जिनका निर्माण जहांगीर के दरबार के एक हिजड़े मिहर बानो आगा ने 1621 में करवाया था।



हुमायूँ के मकबरे का विहंगम दृश्य

कैसे पहुंचें: सड़क के साथ-साथ दिल्ली मेट्रो द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। निकटतम रेलवे स्टेशन निज़ामुद्दीन है। निकटतम मेट्रो स्टेशन है, जोरबाग। हुमायूँ के मकबरे परिसर तक पहुंचने के लिए नई दिल्ली, लाल किला, आईएसबीटी, एयरपोर्ट से एसी/गैर-एसी बसें उपलब्ध हैं। शहर के किसी भी स्थान से यहां आने के लिए ऑटो रिक्शा भी मिलते हैं।

यात्रा का समय: सप्ताह के सभी दिन सुबह 8:00 बजे से शाम 6:00 बजे के बीच।



दिल्ली की विरासत-2

दिल्ली का लाल किला

—भूपाल सिंह

लाल किला दिल्ली का एक प्रमुख पर्यटन केंद्र है। दिल्ली के लाल किला को राष्ट्रीय राजधानी के सबसे अच्छे और जरूर देखने योग्य स्थान के रूप में गिना जाता है। निस्संदेह, इस चमत्कृत कर देने वाली संरचना से जुड़ा इतिहास मुगल राजशाही और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की दास्तान बयां करता है। लाल बलुआ पत्थर से बना लाल किला 250 एकड़ में फैला है। इसमें भारतीय, यूरोपीय और फारसी वास्तुकला का बेहतरीन मिश्रण देखने को मिलता है।

स्थान महत्व इतिहास वास्तुकला पहुंच

लाल किला, शाहजहां के शासनकाल से ही सत्ता का प्रतीक रहा है, जिसने भारतीय इतिहास में

ब्रिटिश शासन में परिवर्तन देखा है और वह स्थान जहां भारतीय स्वतंत्रता पहले मनाई गई थी, और आज भी स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह यहां पर आयोजित किया जाता है। इस प्रकार लाल किला परिसर का भू-सांस्कृतिक क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

लाल किला दिल्ली शहर का प्रख्यात पर्यटन स्थल है। यहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं। यह किला वह स्थल भी है, जहां से भारत के प्रधान मंत्री स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को देश की जनता को सम्बोधित करते हैं।

देश की राजधानी के पुरानी दिल्ली इलाके में स्थित इस किले का मुगल शासक शाहजहां ने 17वीं



*लिपिक, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

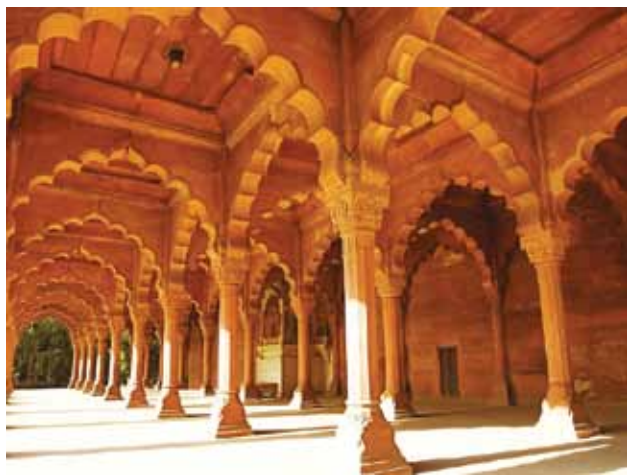




सदी में निर्माण कराया था। इस अद्वितीय किले के निर्माण में नौ साल का समय लगा था और एक करोड़ रुपए का खर्च आया था। लाल किले की वास्तुकला इतनी आकर्षक है कि यह आज भी पुरानी दिल्ली के सबसे ज्यादा लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। देश ही नहीं, विदेशों से आने वाले पर्यटक भी लाल किले को एक बार जरूर देखना चाहते हैं।

इसमें भव्य इतिहास की झलक दिखाई देती है। इस आलीशान किले में पर्यटकों के लिए कई खूबसूरत भवन हैं, जो उन्हें आश्चर्यचकित करने के साथ ही इतिहास के प्रति गौरवान्वित होने का अनुभव देते हैं। इनमें दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, संगमरमर से बने आलीशान महल, मस्जिद और बगीचे शामिल हैं। इनमें आपको मुगल शासकों का समृद्ध इतिहास दिखाई देता है। यह किला आज भी अपनी प्रभावशाली लाल बलुआ पत्थर की दीवार, विशाल गढ़ और दीवार पर किए गए बेहतरीन काम से पर्यटकों को सम्मोहित करता है।

लाल किले की आंतरिक संरचना



लाल किला परिसर को भारत के पांचवे मुगल बादशाह शाहजहां की नई राजधानी शाहजहानाबाद के महल के रूप में बनाया गया था। लाल बलुआ पत्थर की विशाल दीवारों से बना, यह किला 1546 में इस्लाम शाह सूरी द्वारा बनाए गए एक पुराने किले,

सलीमगढ़ के एकदम पास है। रेलवे की एक लाइन सलीमगढ़ किले से लाल किले को अलग करती है। लाल किले को मुगल वास्तुकला का प्रतिनिधि माना जाता है, जिसे शाहजहां के अधीन, एक नए स्तर पर परिष्कृत किया गया था। महल की योजना इस्लामिक प्रोटोटाइप पर आधारित है, प्रत्येक मंडप में मुगल वास्तुशिल्प के तत्वों का पता चलता है।

लाल किले की योजना और डिजाइन 1526 ई. में पहले मुगल बादशाहों द्वारा शुरू की गई वास्तुकला के विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिसमें इस्लामी, फारसी और हिंदू स्थापत्य कलाओं का मिश्रण है।

इस किले को "लाल किला", इसकी दीवारों के लाल रंग के कारण कहा जाता है। इस ऐतिहासिक किले का वर्ष 2007 में युनेस्को द्वारा एक विश्व धरोहर स्थल चयनित किया गया था।

लाल किले के बारे में...

मुगल बादशाह शाहजहां ने 1638 में लाल किला बनाने के आदेश दिए थे। लगभग इसी समय उसने आगरा में अपनी स्वर्गीय पत्नी की याद में ताजमहल बनवाना शुरू किया था। लाल किले पर 1739 में फारस के बादशाह नादिर शाह ने हमला किया था और वह अपने साथ यहां से स्वर्ण मयूर सिंहासन ले गया था।

लाल किला दिल्ली की एक महत्वपूर्ण इमारत समूह है, जो भारतीय इतिहास एवं उसकी कलाओं को अपने में समेटे हुए हैं और वास्तुकला सम्बंधी प्रतिभा एवं शक्ति का प्रतीक है। आप जब इस किले को देखते हुए चलेंगे तो एक बार तो जरूर सोचेंगे कि बादशाह का जीवन कैसा होता होगा। आप उसकी एक झलक महसूस कर सकते हैं। यह भी कल्पना कर सकते हैं कि बादशाह ने किस तरह इतने बड़े और विशाल काम के बारे में सोचा होगा और फिर उसे हकीकत का रूप दिया होगा। उस समय के समारोह कितने भव्य होते होंगे?



यह किला एवं महल शाहजहानाबाद की मध्यकालीन नगरी का महत्वपूर्ण केन्द्र-बिन्दु रहा है। लालकिले की योजना, व्यवस्था एवं सौन्दर्य मुगल सृजनात्मकता का श्रेष्ठ उदाहरण है, जो कि शाहजहान के काल में अपने चरमोत्कर्ष पर थी। इस किले के निर्माण के बाद कई विकास कार्य स्वयं शाहजहान द्वारा कराए गए। सम्पूर्ण विन्यास में कई मूलभूत बदलाव ब्रिटिश काल में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद किए गए थे। ब्रिटिश काल में यह किला मुख्यतः छावनी के रूप में प्रयोग किया गया था। बल्कि स्वतंत्रता के बाद भी सन् 2003 तक इसके कई महत्वपूर्ण भाग सेना के नियंत्रण में रहे थे।

सलीमगढ़

लाल किले के पूर्वोत्तर की दीवार एक पुराने किले से लगी थी, जिसे सलीमगढ़ का किला कहते हैं। इतिहास में सलीमगढ़ किला लाल किले से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। सलीमगढ़ किले की अखंडता को केवल लाल किले के समग्र परिसर के हिस्से के रूप में देखा जा सकता है। इसे शेर शाह सूरी के उत्तराधिकारी और पुत्र इस्लाम शाह सूरी ने 1546 में यमुना नदी के किनारे पर बनवाया था। मगर कुछ इतिहासकारों के मतों के अनुसार, इसे लालकोट का एक पुरातन किला एवं नगरी बताते हैं। लालकोट राजा पृथ्वीराज चौहान की बारहवीं सदी के अन्तिम दौर में राजधानी थी। सलीमगढ़ किले का निर्माण के बाद 1622 ई. में किले को मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए यहां एक पुल बनाया गया था जिसे बाद में जब अंग्रेज यहां रेलवे लाइन बना रहे थे तो उन्होंने इस पुल को तोड़ दिया था। बाद में इस किले को शाहजहान द्वारा लाल किले से जोड़ा गया और औरंगजेब के शासनकाल में सलीमगढ़ को राज्य का कारावास बना दिया गया। अंग्रेज भी इसका उपयोग एक जेल के रूप में करते थे। 1945 में भारतीय राष्ट्रीय सेना के नेताओं को यहां बंदी बनाकर रखा गया था।

लाल किले की चार दीवारी की दीवार 2.5

कि.मी. लम्बी है और नदी के किनारे से इसकी ऊंचाई 60 फीट तथा शहर की ओर 110 फीट ऊंची है। वास्तुकारों के अनुसार, इसकी योजना एक 82 मीटर की वर्गाकार ग्रीड का प्रयोग कर बनाई गई है। लाल किले को एक सम्पूर्ण संयोजित संरचना माना गया है क्योंकि इसके बाद के बादशाहों ने भी इसकी संरचना के मूलरूप में कोई परिवर्तन नहीं किया था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद, किले को ब्रिटिश सेना के मुख्यालय के रूप में प्रयोग किया जाने लगा था। उन्होंने इसके करीब अस्सी प्रतिशत मण्डपों तथा बागों को नष्ट कर दिया। इन नष्ट हुए बागों एवं बचे भागों को पुनर्स्थापित करने की योजना सन 1903 में उम्मेद दानिश द्वारा चलाई गई।

वास्तुकला



छत पर की गई नक्काशी का दृश्य

लाल किले में उच्चस्तर की कला एवं विभूषक कार्य देखे जा सकते हैं। यहां की कलाकृतियाँ फारसी, यूरोपीय एवं भारतीय कला का मिश्रण है, जिसका मूलरूप से इस्लामी शैली का होते हुए भी इसका प्रत्येक मण्डप अपने वास्तु घटकों में हिन्दू वास्तुकला को प्रकट करता है। इसे विशिष्ट एवं अनुपम शाहजहानी शैली भी कहते हैं। लालकिले के महल शैली रंग, अभिव्यंजना एवं रूप में शाहजहानी शैली का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करते हैं।



इसकी दीवारें, काफी सुचिकनता से तराशी गई हैं। यह दीवारें दो मुख्य द्वारों पर खुली हैं— दिल्ली दरवाजा एवं लाहौरी दरवाजा। लाहौरी दरवाजा इसका मुख्य प्रवेश द्वार है। इसके अन्दर एक लम्बा बाजार है, चट्टा चौक, जिसमें दुकानों की कतार हैं। इसके बाद एक बड़ा खुला स्थान है, जहां यह लम्बी उत्तर-दक्षिण सड़क को काटती है। यही सड़क पहले किले को सैनिक एवं नागरिक महलों के भागों में बांटती थी।

नक्करखाना

लाहौरी गेट से चट्टा चौक तक आने वाली सड़क से लगे खुले मैदान के पूर्वी ओर नक्कारखाना बना है। यह संगीत सभाओं के लिए बने महल का मुख्य द्वार है।

दीवान-ए-आम

इस गेट के पार एक और खुला मैदान है, जो कि मुलतः दीवाने-ए-आम जनसाधारण हेतु बना वृहत का प्रांगण हुआ करता था। किले में जो जगहें सबसे ज्यादा पसंद की जाती हैं, उनमें दीवान-ए-आम महत्वपूर्ण है। यह जनता के लिए सभागार होता था। बादशाह यहां बैठकर आम जनता की समस्याएं सुनते थे और उनकी समस्याओं को हल करते थे। एक छज्जा दीवान की पूर्वी दीवार के बीचों बीच बना था जहां बादशाह के लिये एक अलंकृत सिंहासन था।

दीवान-ए-खास



दीवान-ए-खास बादशाह का निजी सभा कक्ष

अगला मण्डप है दीवान-ए-खास, जो बादशाह का सुसज्जित निजी सभा कक्ष था। इस बड़े पिलर वाले हॉल में बैठकर मुगल बादशाह वजीरों दूसरे विश्वस्तों से योजनाओं, रणनीति और गोपनीय जानकारीयों पर चर्चा करते थे। इस मंडप में पीट्रा ड्यूरा से पुष्पीय आकृति से मण्डित स्तंभ बने हैं। इनमें स्वर्ण परत मढ़ने के साथ बहुमूल्य रत्न जड़े गए थे। इसकी मूल छत को रोगन की गई काष्ठ निर्मित छत से बदल दिया गया है। इसमें स्वर्ण के साथ चांदी की परत भी चढ़ाई गई है। इसके संगमरमर में मुगल अलंकरण एवं रंगीन पाषाण जड़े हैं। यह जगह कार्नेलियन तथा अन्य पत्थरों के पच्चीकारी मोज़ेक कार्य के फूलों से सजा दीवान-ए-खास सोने से बने और एक समय प्रसिद्ध रहे तख्ते-ताउस यानि मयूर सिंहासन के लिए भी जानी जाती थी, जिसे 1739 में इरान का शासक नादिरशाह ले गया था।

नहर-ए-बहिश्त

इस क्षेत्र में, पूर्वी छोर पर ऊँचे चबूतरों पर गुम्बददार इमारतों की कतार है, जहां से यमुना नदी का किनारा दिखाई पड़ता है। यह मण्डप एक छोटी नहर से जुड़े हैं, जिसे नहर-ए-बहिश्त कहते हैं, जो सभी कक्षों के मध्य से जाती है। किले के पूर्वोत्तर छोर पर बने शाह बुर्ज पर यमुना से पानी चढ़ाया जाता है, जहां से इस नहर को जल आपूर्ति होती है। यहां लिखी एक आयत कहती है, यदि पृथ्वी पर कहीं जन्नत है, तो वो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

ज़नाना महल



महल के दो दक्षिणवर्ती महल महिलाओं के लिए बने हैं, जिन्हें जनाना महल कहते हैं। इनमें मुमताज महल को जिसे अब संग्रहालय बना दिया गया है।

खास महल किले में महिलाओं के लिए एक खास जगह बनाई गई थी, जिसे रंग महल कहा जाता है। रंगबिरंगी दीवारें, आइने की नक्काशी, सोने और चांदी पर की गई नक्काशी से सजी छत से इसकी खूबसूरती और भी बढ़ गई है। इतना ही नहीं संगमरमर के फर्श के बीच में बना तालाब इसकी सुंदरता को कई

गुना बढ़ा देता है।

मोती मस्जिद

मोती मस्जिद एक ऐसा भवन है, जिसे देखना अतीत की भव्यता को सामने लाकर खड़ा कर देता है। इसे शाहजहां के बेटे औरंगजेब ने निजी मस्जिद के तौर पर 1659 के आस पास बनवाया था। यह एक छोटी तीन गुम्बद वाली मस्जिद तराशे हुए श्वेत संगमरमर से बनी है। इसका मुख्य फलक तीन मेहराबों से युक्त है।



मोती मस्जिद



नेता जी सुभाष संग्रहालय

इन सबसे अलग लाल किले में आपको एक संग्रहालय देखने को मिलेगा जहां आजादी के भूले-बिसरे दीवानों की याद ताजा हो जाती है। 'क्रांति के मंदिर' श्रृंखला में नेताजी सुभाष चंद्र बोस, जलियांवाला बाग, स्वाधीनता संग्राम के प्रथम युद्ध और दृश्यकला संग्रहालय स्थापित किए

संबंधित संग्रहालय बनाने का निर्णय लिया गया था।

संग्रहालय को देखने के लिए आने वालों लोगों को बेहतरीन अनुभव प्राप्त हो सके, इसके लिए संग्रहालय में खास तौर से डिजाइन करके एक डिजिटल प्रभाग भी बनाया गया है। इसमें ऑडियो-विडियो क्लिप, मल्टीमीडिया और एनिमेशन की भी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।



गए हैं। देश की युवा पीढ़ी में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 122वीं जयंती पर 23 जनवरी, 2019 को माननीय प्रधान मंत्री जी ने लाल किले में नेता जी सुभाष संग्रहालय का उद्घाटन कर इसे राष्ट्र को समर्पित किया था। इस संग्रहालय में नेताजी की तलवार, उनके द्वारा इस्तेमाल की गई लकड़ी की कुर्सी के अलावा आजाद हिन्द फौज (आईएनए) से संबंधित पदक, बैज, वर्दी और अन्य वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। इनके अतिरिक्त, पेंटिंग्स, फोटो, पुराने रिकॉर्ड, अखबारों की कटिंग्स, आदि को भी दिखाया गया है। विशेष ध्यान देने की बात यह है कि आईएनए के खिलाफ दायर किए गए मुकदमों की सुनवाई लाल किले में ही की गई थी। इस कारण यहां नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से

एक समय था, जब 3000 लोग इस किले में रहा करते थे। परंतु 1857 स्वतंत्रता संग्राम के बाद किले पर ब्रिटिश सेना ने कब्जा कर लिया था। उन्होंने कई रिहायशी महल नष्ट कर दिए और इसे ब्रिटिश सेना का मुख्यालय बनाया दिया था। इसी संग्राम के एकदम बाद बहादुर शाह जफर पर यहीं मुकदमा भी चलाया गया था। यहीं पर नवम्बर, 1945 में आजाद हिन्द फौज के तीन अफसरों का कोर्ट मार्शल किया गया था। स्वतंत्रता के बाद 1947 में इसके बाद इस किले का नियंत्रण भारतीय सेना के हाथों में दे दिया गया था। बाद में 22 दिसम्बर 2003 को, भारतीय सेना ने इसे भारतीय पर्यटन प्राधिकारियों को सौंप दिया।



लाल किला पर्यटकों के लिए के सप्ताह में मंगलवार से रविवार तक सुबह 9.30 बजे से शाम को 4.30 बजे तक खुला रहता है। कोई भी पर्यटक टिकट लेकर प्रवेश कर सकता है। शुक्रवार को प्रवेश मुफ्त होता है। (अवकाश: सोमवार)

प्रवेश शुल्क : प्रति व्यक्ति 35 रुपए (भारतीयों के लिए) तथा 500 रुपए (विदेशियों के लिए)

फोटोग्राफी के लिए कोई शुल्क नहीं है। लेकिन वीडियो/फिल्मिंग के लिए 25 रुपए लिए जाते हैं।

कैसे पहुंचे पहुंचे :

वायुमार्ग : दिल्ली इंदिरा गांधी एयर पोर्ट देश का महत्वपूर्ण हवाई अड्डा है जहां देश विदेश के लिए नियमित हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं।

रेलमार्ग : दिल्ली आने के लिए चार रेलवे स्टेशन, (पुरानी दिल्ली, नई दिल्ली, निजामुद्दीन तथा सराय रोहिला) है। यहां पूरे देश की सभी गाड़ियां उपलब्ध हैं।

दिल्ली आने के बाद लाल किले तक पहुंचना बहुत ही आसान है। बाहर से आने वाले पर्यटक किसी भी स्थान से टैक्सी या सरकारी परिवहन के किसी भी साधन के जरिए लाल किले तक पहुंच सकते हैं।

लाइट एंड साउंड शो: यह शो शाम छह बजे शुरू होता है। मुगल इतिहास के बारे में हिंदी व अंग्रेजी में विस्तार से बताया जाता है। यह शो देखने के लिए आपको अतिरिक्त टिकट खरीदना होता है। वैसे तो टिकट की कीमत प्रति वयस्क 60 रुपए और बच्चों के लिए 20 रुपए प्रति है। लेकिन सप्ताहांत के दिन शो का प्रवेश शुल्क प्रति वयस्क 80 रुपए और बच्चों के लिए 30 रुपए प्रति होता है। इस शो का समय शाम 6:00-8:30 बजे तक (हिंदी) रात 8:00-9:30 बजे तक (अंग्रेजी) है।

लाल किले का भ्रमण एक यादगार अनुभव है। किले में मौजूद कई आकर्षण आपको सम्मोहित करते हैं। दिल्ली आएँ तो एक बार जरूर ही इस विश्व विरासत को देखने जाएं।



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने की अपील की है। स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले की प्राचीर से देशवासियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने 2022 तक अपने देश के 15 पर्यटन स्थलों पर जाने की बात कही थी। प्रधानमंत्री जी की इस अपील से पर्यटन उद्योग काफी उत्साहित है। पर्यटन उद्योग का कहना है कि प्रधानमंत्री की इस अपील से देश में घरेलु पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। प्रधानमंत्री जी की यह अपील अचानक नहीं आई है। उन्होंने कहा कि वह जानते हैं कि लोग आजकल छुट्टियां मनाने विदेश जाते हैं। वास्तव में 2017 में 2.40 करोड़, 2018 में 2.63 करोड़ भारतीय विदेश गए थे। इंडियन एसोसिएशन ऑफ टूर आपरेटर्स के पूर्व अध्यक्ष सुभाष गोयल कहते हैं कि हम प्रधानमंत्री की अपील का स्वागत करते हैं। इससे घरेलु पर्यटन को काफी बढ़ावा मिलेगा। पर्यटन उद्योग से जुड़े जानकारों का मानना है कि 2019 में विदेश जाने वाले भारतीयों की संख्या 3.5 करोड़ तक पहुंच सकती है। (15 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री के भाषण पर सुहेल हामिद की रिपोर्ट, हिन्दुस्तान, नई दिल्ली से साभार)



एलीफेन्टा

—विजय कुमार

मेरा अभी हाल में मुंबई जाना हुआ। अतः गेटवे ऑफ इंडिया पर मेरा जाना स्वाभाविक था। वहां पर बड़ी चहल-पहल थी वहां पर पर्यटकों का मेला सा लगा हुआ था। बड़ी सुंदर व्यवस्था थी। बड़ी भीड़ के बावजूद ट्रैफिक की सुंदर व्यवस्था के कारण पर्यटकों को आने जाने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी। पास जाने पर ज्ञात हुआ कि यह अच्छी-खासी भीड़ उन पर्यटकों की थी जिन्हें एलीफेन्टा नामक स्थान पर जाना था।

विश्व धरोहर

मुंबई शहर से 11 कि.मी. दूर घारापुरी द्वीप पर स्थित एलीफेंटा की गुफाएं मध्ययुगीन भारत के समय की "रॉक.कट आर्ट" और वास्तुकला का एक अदभुत नमूना हैं। अब 'एलीफेंटा गुफाएं' को यूनेस्को द्वारा स्थल प्रमाणित किया गया है।

यह स्थान पर्यटन की दृष्टि से विख्यात है। यहां पर एक द्वीप को एलीफेन्टा नाम दिया गया है। वहां पर



*सेवानिवृत्त निदेशक, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, नई दिल्ली

ऐलोरा के समान ही बड़ी सुन्दर मूर्तिकला को दर्शाया गया है, जो कि छठी या सातवी सदी में निर्मित हुई थी। यहां पर पहाड़ी को काट कर शिवजी की बहुत ही सुंदर विभिन्न मुद्राओं में विशालकाय मूर्तियां भी बनाई गई हैं। जिनको देखना अपने आप में किसी आश्चर्य से कम नहीं है।

मैंने भी बोट से एलीफेन्टा जाने के लिए 200 रु का टिकट लिया परंतु यहां पर ध्यान देने वाली बात थी कि यह गुफाएं सोमवार को बंद रहती है क्योंकि इस दिन यहां के कर्मचारियों का साप्ताहिक अवकाश होता है। साथ ही अकेले व्यक्ति को जाने की अनुमति नहीं है। वह किसी ग्रुप के साथ ही जा सकता है। अतः 11 बजे के आस-पास मैं भी एक डाक्टर दंपति के साथ जा सका। मेरा परिचय पाकर वह दोनों बहुत प्रसन्न हुए और बोट में ही उनके साथ जलपान किया। यात्रा बड़ी आनंददायक रही क्योंकि जाते समय समुद्र में लहरें उठ रहीं थी और तेज समुद्री हवाओं के साथ साथ समुद्र के पक्षी (seagulls) साथ-साथ उड़ रहे थे। उन्हें देखकर बहुत ही आनंद आ रहा था। करीब घंटे भर में सभी पर्यटक ऐलीफेन्टा पर पहुंचे। फेरी से उतर कर जब आगे बढ़े तो एक छोटी रेलगाड़ी थी जिस पर बैठकर यात्री गुफाओं तक पहुंचते हैं। परंतु हम लोगों ने पैदल ही वहां की यात्रा करने का मन बनाया ताकि आसपास की प्राकृतिक छटा का आनंद ले सकें। बात-चीत करते हुए करीब आधा किलोमीटर चलने पर वहां से सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यह सीढ़ियां बड़े ही सुविधाजनक रूप से बनी हैं जिससे यहां ऊपर जाने में कष्ट नहीं होता है। दोनों तरफ दुकानें व रेस्टोरेंट हैं। पर्यटक अपनी यात्रा की यादगार के रूप में सीप की वस्तुएं जैसे शंख इत्यादि खरीद सकते हैं।



एलीफेन्टा में जाते समय छोटी रेलगाड़ी का आनन्द

अपोलो बंदर, मुम्बई से समुद्र में लगभग 11 कि.मी. उत्तर पूर्व की ओर एक छोटा सा द्वीप है। इसका व्यास लगभग लगभग 7.2 कि.मी. है जो दो पहाड़ियों के बीच में एक संकीर्ण घाटी है। इस द्वीप का प्राचीन नाम घारापुरी था। यहां स्थित एलिफेंटा की गुफाएं पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण केन्द्र हैं। एलिफेंटा की गुफाएं पौराणिक देवताओं की अत्यन्त भव्य मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन मूर्तियों में त्रिमूर्ति शिव की मूर्ति सर्वाधिक लोकप्रिय है। एलिफेंटा की गुफाएं सात गुफाओं का सम्मिश्रण हैं, जिनमें से अधिक महत्वपूर्ण है महेशमूर्ति गुफा।

करीब 100 सीढ़ियां ऊपर चढ़ने के बाद एलीफेन्टा गुफा का मुख्य द्वार आता है। यहां पर भी टिकट लेना पड़ता है। गुफा के मुख्य मंडप में शिव की तीन विशाल मूर्तियां हैं। शिव की यह तीन मूर्तियां भारतीय मूर्ति कला का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। यह मूर्तियां करीब 30 फीट होगी। इसके दाहिनी तरफ शिव को खड़े नृत्य मुद्रा में बनी विशाल मूर्तियां हैं जिसमें शिव-पार्वती मुख्य है। विशाल खम्भे हैं जिन पर अजंता एवं ऐलोरा जैसी नक्काशी है। बायीं तरफ नीचे उतर कर एक विशाल शिवलिंग है। साथ ही शिव बरात की उत्कीर्ण की हुई प्रतिमाएं हैं। सारा स्थान अत्यंत मनोहर एवं लुभावना है। इन्हें देखकर पर्यटक





सम्मोहित सा हो जाता है। उसको पता ही नहीं चलता है कि समय कितनी जल्दी बीत जाता है।

यहां पर लाल मुंह के बंदरों का बहुत उत्पात है जो पर्यटकों से सामान आदि छीन लेते हैं। गुफाओं में बहुत अंधेरा सा रहता है। पर्यटन मंत्रालय तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा प्रकाश व्यवस्था पर ध्यान देने की आवश्यकता है। गुफाओं में कोई सफाई की व्यवस्था नहीं है। चारों तरफ गंदगी व चमगादड़ों की बीट की बदबू आती है सब मूर्तियां धूल से सनी रहती है। कम से कम उनकी सफाई की ओर ध्यान दिए जाने की बहुत जरूरत है। आखिर इस स्थान का ऐलीफेन्टा जो नाम पड़ा है, पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह ऐलीफेन्ट कहां है तो बताया गया कि वह मुंबई के विक्टोरिया गार्डन (जिसको अब माता जीजा बाई पार्क कहा जाता है) में पड़ा हुआ है। एक दूसरा ऐलीफेन्ट ASI के निर्देशक के कार्यालय में है। इनको कृपा करके वापस ऐलीफेन्टा की मुख्य गुफा के सामने लगाया जाना चाहिए जिससे ऐलीफेन्टा गुफा का नाम भी सार्थक हो सके और इस स्थान का सौन्दर्य बढ़ेगा।

यह भी महसूस हुआ कि सरकार की तरफ से ऐलीफेन्टा का प्रचार भी कुछ कम ही है। देश और विदेश से हजारों की तादाद में पर्यटक मुंबई आते हैं। लेकिन न तो एयरपोर्ट पर और न ही रेलवे स्टेशन पर इस पर्यटन स्थल के बारे में कोई विशेष प्रचार दिखाई देता है। इस प्रकार इसे देखने के लिए स्वयं आने वाले लोगों की संख्या सीमित ही है। अधिकतर पर्यटक टूर ऑपरेटरों द्वारा ही लाए जाते हैं। यदि इसका प्रचार हो तो यहां पर पर्यटन बहुत बढ़ सकता है।

पर्यटक वापस आते समय अक्सर थक जाते हैं। अतः वापसी में यदि रेलगाड़ी में बैठ जाए तो बड़ा आनंद आता है। यह छोटी रेलगाड़ी पर्यटकों की

सुविधा के लिए ही चलती है। यहां पर समुद्र किनारे सुंदर वृक्ष हैं जो कि सुन्दरवन जैसी छटा दिखाते हैं। ऐसे ही वृक्षों के कारण बंगाल का सुंदरवन विख्यात है।

यहां तीन बजे के आस-पास समुद्र की लहरें तेज होती हैं। इस कारण समुद्र में एक विशेष हलचल रहती है। पानी का वेग बहुत तेज होने से यह थोड़ा खतरनाक सा लगता है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार यह एक साधारण सी बात है। लेकिन इस कारण (छोटी सी बात पर) पर्यटकों को रोका जाता है, कभी कभी तो वापस भी भेज दिया जाता है। जबकि दूसरी ओर बोट वाले लालचवश 10-20 रूपए लेकर लोगों को ऊपर की डेक पर बैठा देते हैं, जिससे बोट का 'बेलेंस' बिगडने से कोई बड़ी दुर्घटना होने का खतरा रहता है। सरकार को भी इस विषय पर ध्यान देना चाहिए।

एलिफेंटा के बारे में

ऐहोड़ अभिलेख में पुलकेशिन-११ द्वारा जिस विजित पुरी का उल्लेख है वह हीरानंद शास्त्री के मत में यही स्थान है। एलिफेन्टा के गुफा मन्दिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय में किया गया था। एलिफेन्टा की पहाड़ी में शैलोत्कीर्ण करके उमा महेश गुफा मन्दिर का निर्माण लगभग 8वीं शताब्दी में किया गया। पुर्तगाल के यात्री वॉन लिंसकोटन ने 'डिस्कोर्स आव वायहजेज' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है कि 16वीं शती में यह द्वीप पोरी नाम से प्रसिद्ध था। द्वीप की पहाड़ियों में 5वीं-6वीं ई. में बनी हुई और पहाड़ियों के पार्श्व में तराशी हुई पांच गुफाएं हैं। इनमें हिंदू धर्म से संबंधित अनेक मूर्तियां, विशेषकर, शिव की मूर्तियां गुप्तकालीन कला के उत्तम उदाहरण हैं। इन गुफाओं को घारापुरी के नाम से जाना जाता था, जो कोंकणी मौर्य की द्वीपीय राजधानी थी। 16वीं शती ई. तक राजघाट नामक स्थान पर हाथी की एक विशाल





मूर्ति स्थापित थी। इसी कारण पुर्तगालियों ने द्वीप को एलिफेंटा का नाम दिया था।

पुस्तक में उल्लेख है कि एलिफेंटा पर 16वीं सदी में मुम्बई तट पर बसने वाले पुर्तगालियों का अधिकार था। मगर उन्होंने यह नहीं लिखा कि उनके “कला शून्य” पुर्तगाली व्यापारियों ने इस द्वीप की सुंदर गुफाओं का गोशालाओं, चारा रखने के गोदामों, यहां तक कि चांदमारी के लिए प्रयोग करके इनके कला वैभव को लगभग नष्ट ही कर दिया था।

एलिफेंटा में भगवान शंकर के कई लीलारूपों की मूर्तिकारी, एलोरा और अजंता की मूर्तिकला के समान ही है। महायोगी, नटेश्वर, भैरव, पार्वती—परिणय, अर्धनारीश्वर, पार्वतीमान, कैलाशधारी रावण, महेशमूर्ति शिव तथा त्रिमूर्ति यहां के प्रमुख मूर्तिचित्र हैं। त्रिमूर्ति वास्तव में शिव के ही तीन विविध रूपों की मूर्ति है न कि त्रिदेवों की। नटराज शिव के मुख पर परिवर्तनशील संसार की उपस्थिति में जिस संतुलित, शांत तथा संयत भावना की छाप है वह गुप्तकालीन मूर्तिकला की प्रख्यात विशिष्टता है। यहां की मुख्य गुफा तथा

पार्श्ववर्ती कक्षों में अजंता के अनुरूप भित्ति—चित्रकारी भी थी किंतु अब वह नष्ट हो गई है। पुर्तगालियों ने भी इसका उल्लेख किया है।

मूल रूप से घारापुरिची लेनि के नाम से जानी जाने वाली एलिफेंटा गुफाएं आज भी मौजूद हैं, जो उस काल में चित्रित कलाकृतियां थीं। यह मुंबई के क्षितिज का एक अद्भूत दृश्य भी प्रदान करता है। आप गेटवे ऑफ इंडिया से एक नौका के द्वारा एलिफेंटा गुफाओं तक पहुंच सकते हैं। गुफा मंदिरों का यह संग्रह 5वीं से 7वीं शताब्दी का है और उनमें से अधिकांश भगवान शिव को समर्पित हैं।

एलिफेंटा गुफाओं के स्थल में दो समूह हैं, पहला पांच हिंदू गुफाओं का एक बड़ा समूह है और दूसरा दो बौद्ध गुफाओं का एक छोटा समूह है। हिंदू गुफाओं में शैव हिंदू संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करने वाली पत्थर की मूर्तियां हैं। यह गुफाएं कला की एक अद्भुत अभिव्यक्ति हैं, जिनमें ‘त्रिमूर्ति’ या तीन सिरों वाले शिव, ‘गंगाधर’ शामिल हैं। “अर्धनारेश्वर”, एक ही शरीर में शिव और पार्वती का प्रतिनिधित्व है। एक





महत्वपूर्ण धरोहर स्थल होने के अलावा, एलीफेंटा की गुफाएँ एक ट्रेकिंग गंतव्य भी हैं।

एलिफेंटा की गुफाओं के पर्वत पर भगवान शिव की मूर्ति भी है। मंदिर में एक बड़ा हॉल है जिसमें भगवान शिव की नौ मूर्तियों के खण्ड विभिन्न मुद्राओं को प्रस्तुत करते हैं। इस गुफा में शिल्प कला के कक्षों में अर्धनारीश्वर, कल्याण सुंदर शिव, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को ले जाने, अंधकारी मूर्ति और नटराज शिव की उल्लेखनीय छवियाँ दिखाई गई हैं। एलिफेंटा की गुफाओं में चट्टानों को काट कर भगवान शंकर के कई लीलारूपों की मूर्तियाँ भी बनाई गई है। यह एलौरा और अजंता की मूर्तिकला के समान ही है।

एलिफेंटा की गुफाओं से हर तीस मिनट के बाद एक नाव जाती है जो केवल सुबह के नौ बजे से लेकर दोपहर के बारह बजे के बीच ही चलती है। अपोलो बंडर से एलीफेंटा के बीच नाव चलने का समय दोपहर के एक बजे से लेकर शाम बजे के बीच वापस आती है।

सर्वोत्तम विश्वस्तरीय स्मारक

पश्चिमी भारत में एलीफेंटा द्वीप (जिसे घारापुरी के द्वीप के रूप में जाना जाता है) में स्थित एलीफेंटा गुफाएँ दो पहाड़ियों को एक संकीर्ण घाटी द्वारा अलग किया गया है। छोटा द्वीप कई प्राचीन पुरातात्विक अवशेषों से युक्त है, जो इसके समृद्ध सांस्कृतिक अतीत के एकमात्र प्रमाण हैं। रॉक-कट एलिफेंटा गुफाओं का निर्माण 5वीं से 6वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य में हुआ था। गुफाओं में सबसे महत्वपूर्ण है गुफा-1, जो सामने के प्रवेश द्वार से 39 मीटर की दूरी पर है। गुफा के बाहर बहुत ही मज़बूत चट्टान है। इसके अलावा यहां एक मंदिर भी है जिसके भीतर गुफा बनी हुई है। सात मीटर ऊंची कृति "सदाशिव" प्रजापति, परिरक्षक, और विनाशक,, पहचान क्रमशः के साथ: गुफा 1. के लिए प्रवेश द्वार मूर्ति शिव के तीन पहलुओं का प्रतिनिधित्व

करता है हावी अघोर या भैरव (बाएं आधा), तप्तपुरुष या महादेव (पूर्ण चेहरा), और वामदेव का प्रतिनिधित्व नटराज, योगीश्वर, अंधकासुरवध, अर्धनारीश्वर, कल्याणसुन्दरमूर्ति गंगा मूर्ति, रावण अनुग्रहमूर्ति भी अपने रूपों, आयाम, संरेखण और निष्पादन के लिए उल्लेखनीय हैं।

एलिफेंटा की गुफाएं एक लंबी कलात्मक परंपरा से उभरी हैं, लेकिन ताज़ा नवीनता को प्रदर्शित करती हैं। गुफाओं की समग्र योजना में हिंदू आध्यात्मिक विश्वास, सौंदर्य और सहजीवन का सूक्ष्मता से उपयोग किया गया है। त्रिमूर्ति और अन्य सौहार्दपूर्ण मूर्तियों के साथ उनका सौंदर्य अद्वितीय कलात्मक सृजन का उदाहरण है।

प्रबंधन और सुरक्षा

इस परिसर को मुख्य रूप से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित किया जाता है। समय के साथ संपत्ति के एक विश्वव्यापी सर्वोत्तम स्मारक के मूल्य को बनाए रखने के लिए बहाली और संरक्षण कार्यों का मार्गदर्शन करने के लिए संरक्षण प्रबंधन योजना लागू की गई है और स्मारक की संरचनात्मक स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए अग्रभाग और स्तंभों की कुछ मरम्मत की गई है। इसके अलावा, गुफाओं को अखंड मंदिरों, सर्वतोभद्रगर्भगृह (गर्भगृह), मंडप के रूप में संरक्षित किया गया है। पर्यटकों के अनुभव में वृद्धि करने और स्थल के संरक्षण के लिए इसमें आंगन, रॉक-कट वास्तुकला और शिलालेख के बाद, सुधार करते हुए इनमें पगडंडियों का निर्माण, गिरे हुए और टूटे हुए खंभों का संरक्षण, द्वीप के जेटी से गुफाओं की ओर जाने वाले रास्ते, स्टाफ के क्वार्टरों की मरम्मत और एक सूचना केंद्र की स्थापना शामिल हैं।

जब कभी समय लगे एक बार अवश्य ही भारत की इस सांस्कृतिक धरोहर को देखने अवश्य जाएं।



तमिलनाडु की विरासत

द्रविड़ वास्तुकला के अवशेष : मामल्लापुरम

—अनुरुद्ध सिंह

मंदिरों का एक छोटा सा नगर मामल्लापुरम तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई से 60 कि.मी. दूर बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित है। अधिकतर लोग इसे महाबलिपुरम के नाम से भी जानते थे। अपने भव्य मंदिरों, स्थापत्यकला और सागर—तट के लिए प्रसिद्ध, तमिलनाडु का यह प्राचीन शहर सातवीं शताब्दी में शहर पल्लव राजाओं की राजधानी था। दस्तावेजों के अनुसार प्राचीन काल में इसका नाम बाणपुर माना जाता था। द्रविड़ वास्तुकला की दृष्टि से इस शहर का अग्रणी स्थान है जो पत्थरों को काट कर बनाए गए मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है।

स्थान

मामल्लापुरम शहर के बाहरी इलाके में स्थित सालुवनकुप्पम नामक एक छोटे से गांव में स्थित है। इस गुफा के प्रवेश द्वार के आसपास चट्टानों पर बाघों के सिर की कई मूर्तियां बनाई गई हैं।

मामल्लापुरम एक ऐतिहासिक नगर है। यह नगर बंगाल की खाड़ी के तट पर दो वर्ग मील के घेरे में फैला हुआ है। वास्तव में यह स्थान पल्लव नरेशों की शिल्प साधना का अमर स्मारक है। मामल्लापुरम के नाम के विषय में किंवदन्ती है कि दैत्यराज बलि ने इसी स्थान पर वामन भगवान को पृथ्वी का दान दिया था। वामन भगवान के नाम से प्रसिद्ध एक गुफा मन्दिर है

मामल्लापुरम के बारे में ...

पल्लव राजा नरसिंह देव वर्मन ने 7वीं शती में

एक धार्मिक केन्द्र के रूप में मामल्लापुरम की स्थापना की थी। राजा नरसिंह देव बहुत अच्छे और प्रसिद्ध मल्ल अर्थात् यह पहलवान थे और उन्हें “महामल्ल” की उपाधि प्राप्त थी। शायद इसीलिए इस स्थान को महामल्लपुरम कहा गया था जो कालांतर में बदलते हुए मामल्लापुरम हो गया। यहां पर पाए गए चीन, फ़ारस और रोम के प्राचीन सिक्कों से पता चलता है कि यह पहले बंदरगाह था। मामल्लापुरम के निकट एक पहाड़ी पर स्थित दीपस्तम्भ समुद्र यात्राओं की सुरक्षा के लिए बनवाया गया था।

पल्लवों के समय में दक्षिण भारत की संस्कृति उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर थी। इस काल में दक्षिण भारत से बहुत से लोग उस समय प्रसिद्ध वृहत्तर भारत, विशेष कर थाईलैंड, कम्बोडिया, मलाया और इंडोनेशिया में जाकर बस गए थे और वहां पहुंच कर उन्होंने नई—नई भारतीय बस्तियों की स्थापना की थी।

मामल्लापुरम के रथ





मामल्लापुरम के रथ को शैलोकृत्त माना जाता है। अजन्ता और एलौरा के गुफा मन्दिरों की तरह पहाड़ी चट्टानों को काट कर तो अवश्य बनाए गए हैं किन्तु उनके विपरीत यह रथ, पहाड़ी के भीतर बने हुए वेश्म नहीं हैं, अर्थात् ये शैलोकृत्त होते हुए भी संरचनात्मक हैं। इनको बनाते समय शिल्पियों ने चट्टान को भीतर और बाहर से काट कर मुख्य पहाड़ से अलग कर दिया है। जिससे यह पहाड़ी के पार्श्व में नहीं बल्कि उससे अलग खड़े हुए दिखाई पड़ते हैं।

मामल्लापुरम के लोकप्रिय रथ इसके दक्षिण की ओर हैं। महाभारत के पांच पांडवों के नाम पर इन रथों को पांडव रथ कहा जाता है। स्थानीय लोग इसे पंचरथम् के नाम से भी पुकारते हैं, यह एक मंदिर है जो पत्थरों को काटकर पूर्णतः भारतीय शैली में बनाया गया है। यह मंदिर लगभग 7 वीं शताब्दी में बनवाया गया था। पांच में से चार रथों को एक ही चट्टान को काट कर उकेरा गया है। द्रौपदी और अर्जुन रथ

वर्गाकार हैं। लेकिन भीम रथ रेखीय आकार में है। धर्मराज रथ सबसे ऊंचा है। द्रौपदी के पांच पति होने के कारण ही इसका नाम पंच रथमंदिर रखा गया था।

इसके निकट ही सप्तरथों के परम विशाल मन्दिर विदेश यात्राओं पर जाने वाले यात्रियों को मातृभूमि का अन्तिम सन्देश देते रहे होंगे। इस नगर के पाँच रथ या एकाश्म मन्दिर, उन सात मन्दिरों के अवशेष हैं, जिनके कारण इस नगर को सप्त पगौड़ा भी कहा जाता है।

समुद्र-तट का शोर मन्दिर

मामल्लापुरम के तट मन्दिर को सबसे प्राचीन मंदिरों में माना जाता है जिसका संबंध आठवीं शताब्दी से है। यह मंदिर द्रविड वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। यहां तीन मंदिर हैं। बीच में भगवान विष्णु का मंदिर है जिसके दोनों तरफ शिव मंदिर हैं। मंदिर से टकराती सागर की लहरें एक अनोखा दृश्य उपस्थित करती हैं।



इस मंदिर को राजा महेन्द्रवर्मन प्रथम के शासनकाल के दौरान, उनके घर एक पुत्र का जन्म (उत्तराधिकारी) होने की खुशी में बनवाया गया था। इस मंदिर की कुछ संरचनाएं आज भी अधूरी हैं। इस मंदिर का निर्माण ग्रेनाइट से करवाया गया है। यह मंदिर इतना मजबूत है कि 13 वीं सदी में भयंकर समुद्री तुफान आने के बावजूद भी यह ज्यों का त्यों खड़ा रहा। इस मंदिर के परिसर में पांच अखंड मंदिर हैं। इस मंदिर को द्रविण सभ्यता की वास्तुकला का अद्भुत स्थल माना जाता है। यह स्थान यहां आने पर्यटकों के लिए आज भी आकर्षण मुख्य केन्द्र है।

शोर मंदिर की भांति, पंच रथ को भी यूनेस्को ने विश्व विरासत घोषित किया है। यह नगर सैरगाह व पर्यटन का केन्द्र है।

शिल्पकृतियों के चार समूह

पहला समूह एक ही पत्थर में से कटे हुए पांच मन्दिरों का है, जिन्हें रथ कहते हैं। यह कणाश्म अथवा ग्रेनाइट पत्थर के बने हुए हैं। इनमें से विशालतम धर्मरथ हैं जो पांच तलों से युक्त हैं। इसकी दीवारों पर सघन मूर्तिकारी दिखाई पड़ती है। भूमितल की भित्ति पर आठ चित्रफलक प्रदर्शित हैं, जिनमें अर्ध-नारीश्वर



शोर मंदिर का निर्माण 700 से 728 ई.पू. तक हुआ था और इसे बंगाल की खाड़ी के शोर के रूप में जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण काले ग्रेनाइट से हुआ है, यह एक संरचनात्मक मंदिर है और इसे यूनेस्को के द्वारा विश्व विरासत के रूप में वर्गीकृत किया गया, यह सबसे प्राचीन पत्थर मंदिरों में से एक है। वैसे तो यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर में भगवान शिव का एक शिवलिंग स्थापित है इसी मंदिर परिसर में देवी दुर्गा का भी छोटा सा मंदिर है जिसमें उनकी मूर्ति के साथ एक शेर की मूर्ति भी बनी हुई है।

की मूर्ति का निर्माण बड़ी कुशलता और कलात्मकता से किया गया है। दूसरे तल पर शिव, विष्णु और कृष्ण की मूर्तियों का चित्रण है। फूलों की डलिया लिए हुए एक सुन्दरी का मूर्तिचित्र अत्यन्त ही मनोरम है। दूसरा रथ भीमरथ है, जिसकी छत बैलगाड़ी के समान लगती है। तीसरा मन्दिर धर्मरथ के समान है। इसमें वामनों और हंसों का सुन्दर अंकन देख सकते हैं। चौथे में महिषासुर मर्दिनी दुर्गा की मूर्ति है। पांचवां एक ही पत्थर में से कटा हुआ है और हाथी की आकृति के समान जान पड़ता है।





दूसरा समूह दीपस्तम्भ की पहाड़ी में स्थित कई गुफाओं के रूप में दिखाई पड़ता है। वराह गुफा में वराह अवतार की कथा और महिषासुर गुफा में महिषासुर तथा अनंतशायी विष्णु की मूर्तियों का अंकन है। वराह गुफा में (जहां अब भी अन्धेरा है), बहुत सुन्दर मूर्तिकारी प्रदर्शित है। इसी में हाथियों के द्वारा स्थापित गजलक्ष्मी का भी अंकन है। साथ ही सपत्नीक पल्लव नरेशों की प्रतिमाएं भी उकेरी गई हैं। इन्हें देखकर कोई भी इन्हें वास्तविकता के साथ तथा भावपूर्ण कला चित्रण के अतुल्य उदाहरण कह सकता है।

तीसरा समूह सुदीर्घ शिलाओं के मुखपृष्ठ पर उकेरे हुए कृष्ण लीला तथा महाभारत के दृश्यों के विविध मूर्तिचित्रों का है। जिनमें गोवर्धन धारण, अर्जुन की तपस्या आदि के सुन्दर दृश्य हैं। इनसे पता चलता है कि स्वदेश से दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में जाकर बस जाने वाले भारतीयों में महाभारत तथा पुराणों आदि की कथाओं के प्रति कितनी गहरी आस्था थी। उन लोगों ने नए उपनिवेशों में जाकर भी अपनी सांस्कृतिक परम्परा को बनाए रखा था। जैसा ऊपर कहा गया है, महाबलीपुर समुद्रपार जाने वाले यात्रियों के लिए मुख्य बंदरगाह था और मातृभूमि छोड़ते समय ये मूर्तिचित्र इन्हें अपने देश की पुरानी संस्कृति की याद दिलाते थे।

चौथा समूह समुद्र तट पर तथा सन्निकट समुद्र के अन्दर स्थित सप्तरथों का है, जिनमें से छः तो समुद्र में समा गए हैं और एक समुद्र तट पर विशाल मन्दिर के रूप में विद्यमान है। यह छः भी पत्थरों के ढेरों के रूप में समुद्र के अन्दर दिखाई पड़ते हैं।

लाइटहाउस

पल्लवों के शासन काल के दौरान समुद्री नाविकों को रात्रि के समय में समुद्र में राह दिखाने के लिए एक उंचे दीपस्तम्भ का निर्माण कराया गया

था। कहा जाता है कि रात के समय इस दीपस्तम्भ के ऊपर आग जलाई जाती थी और जिसे देख कर नाविकों को रास्ता देखने में आसानी होती थी। अंग्रेजी शासन के दौरान इस स्तम्भ के एकदम पास ही एक टॉवर बनवाया जो पहले स्तम्भ से अधिक ऊंचा है। इसे ही अब लाइटहाउस कहा जाता है। पर्यटक इस लाइटहाउस में ऊपर जा सकते हैं, जहां से वह शिल्पकृतियों के चारों समूहों सहित पूरे मामल्लापुरम के साथ बंगाल की खाड़ी में ऊफनती समुद्री लहरों का नजारा देख सकते हैं।



अन्य मुख्य आकर्षण

यहां पर 7वीं और 8वीं शताब्दी में निर्मित पल्लव मन्दिरों और स्मारकों में मिलने वाले अवशेषों में चट्टानों से निर्मित गंगावतरण जैसी मूर्तियों से युक्त गुफा मन्दिर और समुद्र तट पर बना शैव मन्दिर



प्रमुख है। यह मन्दिर भारत के प्राचीन वास्तुशिल्प के गौरवमय उदाहरण माने जाते हैं।

कृष्ण मंडपम

यह मंदिर मामल्लापुरम के प्रारंभिक पत्थरों को काटकर बनाए गए मंदिरों में एक है। मंदिर की दीवारों पर ग्रामीण जीवन की झलक देखी जा सकती है। एक चित्र में भगवान कृष्ण को गोवर्धन पर्वत को उंगली पर उठाए दिखाया गया है।

अर्जुन तपस्या

यह स्थान सबसे विशाल नक्काशी के लिए लोकप्रिय है। यहां 27 मीटर लंबी और नौ मीटर चौड़ी, व्हेल मछली की पीठ के आकार के विशाल शिलाखंड पर ईश्वर, मानव, पशुओं और पक्षियों की आकृतियां उकेरी गई हैं। अर्जुन तपस्या को मात्र मामल्लापुरम या तमिलनाडु मात्र का ही नहीं बल्कि पूरे देश का गौरव माना जाता है।



मामल्लापुरम नृत्य पर्व

यह नृत्य पर्व सामान्यतः जनवरी फरवरी माह में मनाया जाता है। शोर मंदिर के निकट भारत के जाने माने नृत्य कलाकारों द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन किया जाता है। इस अवसर पर पर्व में बजने वाले वाद्ययंत्रों का संगीत और समुद्र की लहरों के प्राकृतिक

संगीत की एक अनोखी आभा यहां देखने को मिलती है।

गुफाएं

वराह गुफा विष्णु के वराह और वामन अवतार के लिए प्रसिद्ध है। साथ की चट्टानों पर पल्लवों के चार मननशील द्वारपालों के चित्रों के लिए भी वराह गुफा चर्चित है। सातवीं शताब्दी की महिषासुर मर्दिनी गुफा भी भिती चित्रों (दीवारों पर की गई नक्काशियों) के लिए खासी लोकप्रिय है।

मूर्ती संग्रहालय

राजा स्ट्रीट के पूर्व में स्थित इस संग्रहालय में स्थानीय कलाकारों की 3000 से अधिक मूर्तियां देखी जा सकती हैं। संग्रहालय में रखी मूर्तियां पीतल, रोड़ी, लकड़ी और सीमेन्ट की बनी हैं।

मामल्लापुरम में स्थापत्य और मन्दिर वास्तुकला की शिक्षा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा एक महाविद्यालय स्थापित किया गया है।

कैसे पहुंचें :

वायु मार्ग : निकटतम एयरपोर्ट चैन्नई है जो मामल्लापुरम से लगभग 70 कि.मी. दूर है। भारत के सभी प्रमुख शहरों से चैन्नई के लिए हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं।

रेल मार्ग : चेन्नलपट्टु निकटतम रेलवे स्टेशन है जहां से मामल्लापुरम की दूरी 29 कि.मी. है। चैन्नई और दक्षिण भारत के अनेक शहरों से यहां के लिए रेलगाड़ियां उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग : मामल्लापुरम तमिलनाडु के प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा है। राज्य के अनेक शहरों से राज्य परिवहन निगम की बसें मामल्लापुरम के लिए उपलब्ध रहती है।



कालजयी

—डॉ. विश्वरंजन

हवाओं में घुली है उस फिजा की महक ।
जहा भी वो रहा करते है ॥
आई अब चेहरे पर रौनक,
जब कालजयी मुस्कान देखते है ॥
घूमता चक्र पर लिखे है कुछ शब्द
देखते ही देखते मन ध्यान में रमे होते है ॥
ये तो अमृत बरसाने वाले की असर है,
जो कमलनयन,
हाथ में कलश, लिए खडे मिलते है ॥
शांति, सादगी और सुंदरता की मिसाल है वो ।
जो बुद्ध के शरण में होते है ।

वापस कब आओगे

उन्होंने कहा, जल्द वापस आयेंगे ।
न वो आए न खबर आई ।
ख्वाब आए दिखी उनकी परछाई ।
कदम बढ़ा एहसास की
पल मे उसे पनाह देने की ।
ना जाने कैसे वो मृग मरीचिका निकल आई ।
नींद से जागा तो चाँद को देखा
बादलों के बीच टीम टिमाते तारों को देखा ।
मेरे चेहरे के बदलते नज़ारे को देखा ।
उमीद भरी ख्वाब थी,
जो हकीकत में न नजर आई और न मिल पाई ।

* कंसलटेंट, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग,
जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली
मो. 9852583535

मैं राम धरा को छू आई हूँ

—कीर्ति दीक्षित

जहाँ विराजित राम ईश एकदूजे में ध्यानलीन
 प्रणम्य रूप धर जहाँ होती विलीन
 उस पुण्य क्षेत्र का वन्दन कर आई हूँ
 रामेश्वरम से एक मुट्ठी रेत ले आई हूँ।
 वह तपोधरा प्राणित स्वर है जीवन का,
 वह शंख द्वीप, ईश बिम्ब रामेश्वर तीर्थ
 उस तीरथ में खुद को अर्पण कर आई हूँ
 मैं रामेश्वरम से मुट्ठी भर रेत ले आई हूँ।
 जहाँ एकरूप हैं नीलवर्ण और नीलकंठ
 कणकण में लिखीं जहाँ जीवन परिभाषाएं
 उनके मनके मनके, अक्षर अक्षर ले आई हूँ
 मैं रामेश्वरम से मुट्ठी भर रेत ले आई हूँ।
 हृदय अश्रुओं पर जो शिला तार दें
 जीवन पीड़ाओं के जो सगर बाँध दें,
 दो चुटकी में वे नल नील ले आई हूँ
 रामेश्वरम से एक मुट्ठी रेत ले आई हूँ।
 जो डगमग प्रत्यय लौ थाम लें,
 जो लिप्साओं की लंका बार दें
 थोड़े से वह हनुमान ले आई हूँ
 रामेश्वरम से मुट्ठी भर रेत ले आई हूँ।
 स्वार्थी अधिकारों की प्रखर वह्नि पर
 जो शुचि कर्तव्यबोध की वृष्टि करे
 कुछ कनूकों में वह गिलहरी ले आई हूँ
 रामेश्वरम से एक मुट्ठी रेत ले आई हूँ।
 अभिलाषाओं से उद्विग्न हृदय को
 जो त्याग स्नेह से सम्बद्ध करें
 रेत के कुछ हिस्से में वे लक्ष्मण ले आई हूँ
 मैं रामेश्वरम से एक मुट्ठी रेत ले आई हूँ।

बाधाओं के सम्मुख जो समर ठान दे
 जो व्यथित हृदय को पुलकित कर दे
 कुछ कणों में वह वानर सेना ले आई हूँ
 मैं रामेश्वरम से मुट्ठी भर रेत ले आई हूँ।
 जो कंकर को भी शंकर कर दें,
 जो गर्विष्ठ जलधि को प्रशमित कर दें
 एक हिस्से में धैर्य के वे एकलद्वीप ले आई हूँ
 मैं रामेश्वरम से एक मुट्ठी रेत ले आई हूँ।
 और, लौटा आई हूँ सागर को सारी अहमन्यताएं,
 अन्धकार, अंतस के कोलाहल और तृष्णायें
 मैं उस राम धरा को छू आई हूँ
 रामेश्वरम से एक मुट्ठी रेत ले आई हूँ।



लेखिका के अपने कैमरे से रामेश्वरम् का एक दृश्य



मानसरोवर यात्रा

—विनीत सोनी

ओम नमः शिवाय ।।

बात सन 2014 की है, सर्दियों का मौसम था सुबह के 9 बजे होंगे, मैं चाय पीते हुए टी.वी पर समाचार देख रहा था। तभी एक खबर ने मेरा ध्यान खींचा। चैनल पर बताया जा रहा था कि कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं और जल्दी ही फरवरी के मध्य में इस सम्बन्ध में अधिकारिक सूचना वेब साईट पर डाली जाएगी। एक सप्ताह बाद जब वेब साईट चेक की तो उसमे यात्रा के सम्बन्ध में विज्ञापन आ चुका था। ऑनलाइन आवेदन करने के बाद फिर उसका प्रिंटआउट लेकर विदेश मंत्रालय में भेजना था।

पर्वतों से मुझे सदैव ही लगाव रहा है और यहां की यात्राएं हमेशा से मुझे आकर्षित करती रही हैं और इनकी शुरुआत कुछ वर्ष पहले की गई अमरनाथ यात्रा से हुई थी। यूं तो मैं इसके पहले भी कुछ पर्वतीय स्थलों पर गया था पर इतनी ऊंचाई और दुर्गम स्थल पर पहली बार गया था। इस यात्रा में मेरे एक सहयोगी पांडे जी भी साथ गए थे। इस यात्रा के पश्चात कुछ दिनों तक एक अद्भुत उर्जा और शांति की अनुभूति होती रही जो पहले कभी महसूस नहीं हुई थी। उस यात्रा में कश्मीर के कुछ और सुन्दर स्थलों जैसे श्रीनगर, पहलगाम, सोनमर्ग और गुलमर्ग भी जाने का अवसर प्राप्त हुआ और विशेषकर सोनमर्ग और गुलमर्ग को देखकर समझ आया क्यों कश्मीर को भारत का स्वर्ग कहा जाता है?

अमरनाथ यात्रा के बाद ही मन में कई बार कैलाश जाने का विचार आया पर शायद भोलेनाथ की स्वीकृति नहीं थी।

उस दिन उस न्यूज़ चैनल पर कैलाश यात्रा की रिपोर्ट देखकर मन में एक विचार आया, मन में एक विश्वास सा उत्पन्न हुआ और मैंने यात्रा के लिए आवेदन कर दिया। एक महीने बाद कंप्यूटराइज्ड ड्रा निकला और मेरा नम्बर आ गया जिसमें बैच नं. 17 था। उस समय तक मैंने घर वालों को नहीं बताया था। मार्च में नाम आया था और यात्रा जून से प्रारंभ होनी थी और मेरा बैच 15 अगस्त से था। जुलाई के शुरु में मैंने घर में बताया।

घर में किसी ने कभी मुझे हिमालय जाने से मना तो नहीं किया, लेकिन जैसा हर घर में होता है, ढेरों सवाल जवाब का सामना जरूर करना पड़ा। वैसे देखा जाए तो माता—पिता का पूछना स्वाभाविक ही है। हम लोग इन्टरनेट से सारी जानकारी जुटा लेते हैं पर घर वाले तो बस धार्मिक किताबों में ही कैलाश के बारे में पढ़ते हैं कि यह एक दुर्गम स्थान है। ऐसे में एक भय होना स्वाभाविक ही है। उन्हें कई तरह से समझाना पड़ता है और रास्तों, सुविधाओं, सुरक्षा के इंतजाम और रहने की व्यवस्था के बारे में बताना पड़ता है और फिर उनकी अनुमति के रूप में अभिभावकों का आशीर्वाद मिलता है, जो हमेशा रक्षा करता है।

मैं 11 अगस्त की सुबह सिविल लाइन्स स्थित गुजराती समाज सदन पहुंच गया। सरकार मानसरोवर जाने वाले यात्रियों के रहने की व्यवस्था यहीं करती है। पहले तीन दिन औपचारिकताओं में लगते हैं और आप चौथे दिन प्रस्थान करते हैं। आस पास रहने वाले लोगों को यहां रुकने की आवश्यकता नहीं है।

*स्वतंत्र लेखक तथा अतुल्य भारत में नियमित योगदान

यहां डारमेट्री सिस्टम है, दो बड़े एसी हाल में किसी रेलगाड़ी के कोच की तरह एक के ऊपर एक लाइन से दो बैड होते हैं, खाने पीने की निशुल्क सुविधा है और कुल मिलाकर साफ़ सुथरा है। जब मैं पहुंचा तब तक चार-पांच ही लोग आए थे जिनमें से इंदौर के एक सोनी जी तीसरी बार जा रहे थे, एक उन्नाव के ही मुकेश गुप्ता मिले जो 10 बार से अधिक अमरनाथ जी की यात्रा कर चुके थे। ऐसी विभूतियों को देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ पर अभी तो और भी महान विभूतियों के दर्शन बाकी थे।

शाम होते होते लगभग 20-25 लोग पहुंच गए और तभी दिल्ली सरकार तीर्थ यात्रा समिति की ओर से एक सज्जन आए और हमें यात्रा के बारे में विस्तार से बताने लगे, वह स्वयं भी इस यात्रा में पहले जा चुके थे। अगले दिन एक प्राइवेट हॉस्पिटल में मेडिकल होना था और सात बजे मेडिकल खाली पेट जाना था। दिल्ली और आस पास रुके हुए लोग भी वहां मिले, हम सब मिलाकर 50 के आस पास होंगे और मेडिकल होते होते तीन बज गए। अगले दिन ITBP के मुख्यालय जाना था क्योंकि मेडिकल की रिपोर्ट वही भेजी जाती हैं। उनके ही डॉक्टर्स रिपोर्ट्स के आधार पर यात्रियों की फिटनेस का निर्णय लेते हैं।

इन 50 में से हम 45 लोग इस यात्रा में चुने गए। किसी को बाहर होते देखना अच्छा नहीं लगता पर यात्रा की कठिनाइयों को देखते हुए स्वास्थ्य ठीक होना आवश्यक है। वैसे यह मेरा अपना अनुभव है कि कई बार ज्यादा स्वस्थ और फिट यात्री भी कठिनाई का सामना करते पाए जाते हैं, पर भगवान् के जयकारे लगाते सामान्य जन आसानी से चले जाते हैं तो प्रभु का आशीर्वाद बड़ा महत्व रखता है। फिर भी इस प्रकार की दुर्गम यात्रा में स्वास्थ्य के महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता।

तीसरे दिन हमें विदेश मंत्रालय ले जाया गया जहां पासपोर्ट जमा कराए गए, वीसा फीस ली गयी, एक संक्षिप्त ब्रीफिंग हुई और फिर हम वापस आ गए। गुजराती सदन में रहने का यह फायदा है कि आपको हर बात की जानकारी उपलब्ध हो जाती है और वो भी एक शाम पहले, विदेशी मुद्रा भी यहीं दी जाती है और अगर आपको मैट्रिक्स सिम चाहिए तो वह भी मिलता है। इससे समय की बचत होती है और सब के साथ रहने से एक अच्छा माहौल बन जाता है।

अब तक ज्यादातर लोग एक दूसरे से परिचित हो चुके थे, एक जयपुर के सज्जन भी थे जिनकी यह सातवीं कैलाश यात्रा थी और वो भी लगातार। मेरे नीचे वाले बैड पर हैदराबाद से आए शास्त्री जी थे जिनकी यह दूसरी यात्रा थी, पहली बार वे पत्नी साथ गए थे पर इस बार अकेले थे। शास्त्री जी जैसा नाम वैसे ही अनेक विद्याओं में निपुण थे और हिंदी गानों का जबर्दस्त शौक रखते थे। साथ ही साथ बड़े ज्योतिषी, वकील, साइबर एक्सपर्ट और न जाने क्या क्या, मेरे अच्छे दोस्त बन गए। पंजाब से आए एक सरदार जी भी थे। दो और लड़के पंजाब से आए थे। एक NRI साहू जी भी थे जो उड़ीसा के थे। गुजरात से भी पांच या छः यात्री थे और कर्नाटक, केरल और तमिलनाडू से भी दो-दो यात्री थे। एक सज्जन जम्मू से भी आए थे और सुदूर उत्तर पूर्व से आया भी सबसे कम उम्र का लड़का श्री राम भी था जिसकी उस समय उम्र महज 23 साल थी। इस प्रकार देश के कोने-कोने से यात्री आए थे। सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश और गुजरात के थे।

शाम तक लॉयजन ऑफिसर भी आ गई। यह मैडम एयरफोर्स से थीं। इनका काम यात्रा के दौरान सरकार से समन्वय बना के रखना होता है, चीन में वहाँ के अधिकारियों से वार्तालाप और समन्वय और





यात्रा कहाँ तक पहुँची, कोई बाधा इत्यादि तो नहीं है इस प्रकार से विदेश विभाग को हर दिन की खबर देनी होती है और इसके लिए इनको सेटलाइट फ़ोन भी दिया जाता है। शाम को दिल्ली सरकार की ओर से यात्रियों के सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, एक यात्रा किट दी गई और रात्रिभोज हुआ।

15 अगस्त की सुबह हमें पांच बजे उत्तराखंड परिवहन की एक बड़ी और नयी वॉल्वो बस आ चुकी थी और बम बम भोले के जयकारों के साथ यात्रा शुरू हुई। सब के मन में बड़ा उत्साह था, तीन दिन की औपचारिकताओं के बाद आज हम यात्रा पर निकल रहे थे। बस एक घंटे बाद गाज़ियाबाद पहुँची तो यहां पर उत्तरप्रदेश कैलाश यात्रा समिति की ओर से एक होटल में स्वागत समारोह और नाश्ते का प्रबंध किया गया था। लगभग दो घंटे यहां रुकने के बाद हम लगभग आठ बजे काठगोदाम के लिए रवाना हुए। एक दो जगह और स्वागत समारोह से वास्ता पड़ा ऐसा लग रहा था जैसे हम कोई नेता या विशिष्ट अतिथि हों। बड़ा विचित्र पर अच्छा लग रहा था और इस प्रकार दो बजे के आस पास हम काठगोदाम पहुँचे। यहां भी कुमाऊँ मंडल विकास निगम के होटल में 'लंच' की व्यवस्था की गई थी।

बस में रास्ते भर शास्त्री जी के हिंदी गाने सुनते रहे और हर-हर महादेव का उद्घोष होता रहा। यहां होटल में कुछ लोकल मीडियाकर्मी भी आ पहुँचे और सब में विशेषकर सरदार जी का इंटरव्यू लेने की होड़ थी। यहां से हमें लगभग 90 कि.मी. दूर अल्मोड़ा पहुँचना था और यहां से हिमालय की चढ़ाई आरंभ हो जाती है। यहां से आगे हमारे लिए दो छोटी बसों की व्यवस्था थी जिन्हें हमें धारचूला तक ले जाना था। रास्ता नैनीताल और भीमताल दोनों को बाईपास करते

हुए बीच से जाता है और सीधा भोवाली पहुँचता है जो काठगोदाम से 30 कि.मी. दूर है और पहुँचने में सवा घंटा लगता है पर बारिश का मौसम था और नैनीताल मार्ग पर भूस्खलन होने के कारण जाम लगा था और हम फंस गए। भोवाली पहुँचने में तीन घंटे लग गए। यहां से कैँची धाम बस 11 कि.मी. है।

कैँची धाम उत्तर भारत के प्रसिद्ध संत बाबा नीम करोली का आश्रम है और इसकी यहां बड़ी मान्यता है। उत्तर भारत के अधिकांश प्रसिद्ध हनुमान मंदिरों का निर्माण बाबा ने ही कराया था। वह महावीरबाबा के परम भक्त थे। यहां पहुँचते अँधेरा घिर आया था और मंदिर परिसर के कपाट बंद ही होने वाले थे तभी हम वहां पहुँच गए। दो वर्ष पहले भी मैं नैनीताल आया था तब यहां आने का अवसर मिला था और आज दोबारा आकर बहुत अच्छा लगा। मंदिर में हनुमान जी की बड़ी ही सुन्दर दिव्य प्रतिमा है, अन्य देवी देवताओं की भी प्रतिमाएं हैं और बाबा नीम करोली की भी प्रतिमा है, पीछे एक आश्रम भी है जहां आप पूर्व अनुमति लेकर कुछ दिन रुक सकते हैं। अब आगे यात्रा की शुरुआत हुई, अल्मोड़ा यहांसे लगभग 46 कि.मी. था और अब अँधेरा पूरी तरह से घिर आया था।

इस बस में मैं और प्रियांशु साथ बैठे थे। प्रियांशु गुरुग्राम में रहता है और सॉफ्टवेयर इंजीनियर है वैसे रहने वाला उत्तर प्रदेश का ही है, हम उम्र होने के कारण हमारी अच्छी दोस्ती हो गयी। अँधेरा हमें खल रहा था क्योंकि रास्ते के सुन्दर नज़ारे हम नहीं देख पा रहे थे, हवा अब ठंडी हो चुकी थी और सब ने बस के सीसे बंद कर लिए थे।

10 बजे के आस पास हमारी बस अल्मोड़ा में कुमाऊँ मंडल के होटल पहुँची, यह एक बड़ा और बहुत सुन्दर होटल है। हमने इतने अच्छे होटल में रहने की नहीं सोची थी क्योंकि दिल्ली में हम डोरमेट्री



में रुके थे वैसे वो भी अच्छी थी पर यह तो एक पूरा होटल ही था। नार्मल कमरे में दो यात्रियों, बड़े कमरों में तीन और सुइट में चार के रुकने की व्यवस्था थी। मैं, प्रियांशु, गुप्ताजी और विवेक एक सुइट में रुके। विवेक बंगलौर से आया एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर था।

अब रात बहुत हो गई थी, खाना खाते 11 बज गए, इसलिए आस-पास कहीं घूम नहीं पाए और फिर सुबह चार बजे उठना था। घर से निकले आज सातवाँ दिन था और आज हमें धारचूला पहुंचना था।

धारचूला भारत और नेपाल के मध्य एक बॉर्डर टाउन है, महाकाली नदी दोनों देशों का बॉर्डर बनाती है जिसपर स्थित पुल के ऊपर से लोग निर्बाध एक देश से दूसरे देश आते जाते हैं। धारचूला उत्तराखंड के उत्तरी पूर्वी हिस्से में स्थित आखिरी बड़ा शहर है जहां नेपालियों की भी अच्छी आबादी है और यहांसे बहुत सारे ट्रेकिंग रूट निकलते हैं।

जब हम होटल से पांच बजे निकले तब भी अँधेरा था और हल्की बारिश हो रही थी पर कुछ देर

पश्चात ही उजाला हो गया और हम पहाड़ों के सुन्दर दृश्यों का दीदार करने लगे। यह एक छोटी बस थी और सीटें काफी पास थी, जिससे हमें बैठने में दिक्कत हो रही थी। आज हमारे चार लोगों के ग्रुप को निकलने में 15 मिनट की देरी हो गई जिससे आर्मी की एल.ओ. साहिबा नाराज हो गई। इसका कारण गुप्ताजी थे। हम सवा पांच पर बस में दाखिल हुए, पर विचित्र बात यह रही की डांट गुप्ताजी को ही लगी।

गुप्ताजी, सोनीजी, शास्त्रीजी और विवेक दूसरी बस में बैठे हैं और मैं, प्रियांशु, जम्मू वाले रजनीशजी सहित बाकी यात्री इस बस में थे। हम सब शास्त्रीजी के गानों को मिस कर रहे थे। अल्मोड़ा कुमाऊँ का एक छोटा हिल स्टेशन है जो चारों ओर सुन्दर पहाड़ों और खूबसूरत वादियों से घिरा हुआ है, यह अपने चाय के बागानों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां पर गोलू देवता और माँ नंदा देवी के प्रसिद्ध मंदिर भी हैं, गोलू देवता कुमाऊँ के मुख्य देवता हैं। कई स्थानों पर इनके मंदिर हैं और हमारी बस भी इस प्रसिद्ध मंदिर पर आकर रुकी। मंदिर में चारों ओर घंटे ही घंटे हैं और बहुत सी



चिटटियां भी बंधी हैं, लोग यहां अपनी प्रार्थना इनके माध्यम से ही पहुंचाते हैं और फिर पूरी होने पर घंटा बाँधते हैं।

अल्मोड़ा से धारचूला 205 कि.मी. दूर है। खूबसूरत और शांत पहाड़ी रास्तों से होती हुई हमारी बस एक घंटे बाद एक छोटे गांव पहुंची जहां निगम का गेस्ट हाउस है और नाश्ता वहीं मिला। नाश्ते में आलू के परांठे गर्मागर्म सब्जी और दही था, एक तो बढ़िया मौसम, हल्की फुहारें और आलू परांठे वो भी इतने दिन

बस धीरे धीरे चल रही थी और अब हिमालय के ऐसे स्थलों से गुजर रही थी जहां ज्यादा लोग नहीं आते, यह अनछुई जगहें हैं और इनकी सुन्दरता बरकरार है। दोपहर का खाना दिदीहाट में दिया गया, यहां पर भी निगम का एक छोटा पर बेहद अच्छा होटल है। यहां से लगभग 3 बजे बस एक बेहद ही खूबसूरत जगह आकर रुकी, यहां पर मिर्ठी में ITBP की बड़ी छावनी है। ITBP के जवानों ने बैंड बाजे के साथ यात्रियों का स्वागत किया, बैंड की धुनों पर



ITBP मिर्ठी में मानसरोवर यात्रियों का स्वागत

बाद। उत्तराखंड में यात्रा का संचालन कुमाऊँ मण्डल के हाथ में रहता है और आगे ज्यादा दुर्गम और ऊपर के स्थानों पर भी इन्होंने यात्रियों के लिए बढ़िया खाने और रुकने की व्यवस्था की थी जिसके लिए यह बधाई के पात्र हैं।

यात्रियों ने भी जमकर नाच किया। इसके बाद वह सभी को अपने साथ एक मुख्य हाल में ले गए। यहां पर आगे की यात्रा, मौसम और उच्च हिमालयी क्षेत्र के बारे में एक संक्षिप्त जानकारी दी गई और आगे चीन में पहुंचने पर क्या करना और नहीं करना है इस बारे में भी बताया गया।

यहां वीडियोग्राफी भी चल रही थी और टीवी पर लाइव प्रसारण आ रहा था। चाय नाश्ते के बाद यहां एक ग्रुप फोटो हुई और फिर सबने ITBP शॉप जहां पर ट्रैकिंग का काफी सामान उपलब्ध था, खरीददारी करी।

इसके बाद टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्तों से होती हुई बस दो घंटे बाद लगभग छः बजे धारचूला पहुंची। धारचूला से कुछ पहले 20–25 कि.मी. का रास्ता बेहद खराब था क्योंकि सड़क के चौड़ीकरण का काम चल रहा था। इसलिए बस की रफ्तार काफी धीमी रही, एक दो जगहों पर भूस्खलन होते भी दिखे।

यहां भी KMVN का बढिया होटल है और हम चारों लोग एक ही रूम में रुके, चाय पीकर थोड़ा शहर देखने निकले। होटल महाकाली नदी के तट पर है जिसके एक ओर भारत और दूसरी ओर नेपाल है और नदी पर पुल बना है जिससे लोग निर्बाध एक स्थान से दूसरे स्थान आ-जा सकते हैं। यहां नेपालियों की बड़ी आबादी है और एक ठीक-ठाक बड़ी मार्केट है, इसके चारों ओर पहाड़ हैं वैसे यह जगह ज्यादा ऊंचाई पर नहीं है और समुद्र तट से इसकी ऊंचाई बस 850–900 मीटर ही है। महाकाली जैसा कि इसका नाम है; अत्यंत वेगवान, डरावनी और भीषण प्रवाह और गर्जती नदी है। हमें बताया गया कि अगले चार-पांच दिन इसके साथ साथ ही चलना होगा। ऊंचाई बढ़ने पर इसकी चौड़ाई कम हो जाती है पर प्रवाह और भी तीव्र हो जाता है। महाकाली जब हिमालय छोड़कर शांत होती है तब इसे शारदा नाम से जाना जाता है।

यहां भी एक ब्रीफिंग हुई और जिन यात्रियों को आगे की यात्रा के लिए छोड़े इत्यादि करने थे उनके नाम और पैसा जमा करा लिया गया। अगले दिन सुबह सात बजे रवाना हुए तो उत्तराखण्ड पुलिस के दो जवान और एक डॉक्टर साहब भी हमारे साथ भेजे गए।



यहां से नारायण स्वामी आश्रम 54 कि.मी. दूर है। इसका रास्ता तवाघट से होकर है और फिर छः कि.मी. का ट्रेक कर लोग अपने पहले पड़ाव सिरखा पहुंचते हैं। नारायण स्वामी आश्रम जिसे बनने में दस वर्ष लग गए अपने नैसर्गिक सौन्दर्य और शांति के लिए जाना जाता है पर कभी कभी मौसम खराब होने या रास्ता ठीक न होने पर तवाघट से ही चढ़ाई चढ़नी पड़ती है और हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ था। यहां पर यात्रियों को पोनी और पोर्टर मिलने थे जिसके कारण एक घंटे की देरी हुई और फिर हमने हर-हर महादेव बोलकर चढ़ाई आरंभ की। यह जगह लगभग 1200 मीटर की ऊंचाई पर है और यहां से हिमालय की बर्फ से लदी ऊंची चोटियां दिखाई पड़ती हैं। सिरखा यहां से कोई 14 कि.मी. और 2560 मीटर की ऊंचाई पर है और लोगों को पहुंचने में पांच से सात घंटे लगते हैं।

रास्ते में बहुत से सुन्दर गांव पड़े और हमारे साथ रास्ता दिखाने के लिए एक गाइड भी चल रहा था। यह एक खड़ी चढ़ाई थी और शुरुआत में धूप बहुत तेज जिससे मैंने काफी धीरे चलना आरंभ किया और वैसे भी हिमालय में आए बहुत समय हो गया था जिससे उतना विश्वास नहीं था पर जैसे जैसे चढ़ता गया वैसे वैसे आत्म विश्वास बढ़ता गया और मौसम ऊंचाई पर आकर अच्छा हो गया।



यहां पर कंक्रीट के पांच-छह बड़े कमरे हैं, जिनमें बैड और कुछ में जमीन पर गद्दे पड़े हैं। एक कमरा जो थोड़ा ऊपर शांत था वहां पहले ही गुप्ताजी, विवेक और सोनीजी ने पहुंच कर स्थान पक्का कर लिया था और बाकी चार गद्दे हमारे लिए रख लिए थे। हर रूम में सात से आठ यात्रियों के रुकने का प्रबंध था और हम 45 थे। हमारे साथ अनुराग, उड़ीसा के साहू जी और नार्थ ईस्ट का श्री राम भी रुका और आगे हर कैंप में यही रूटीन रहा, हम साथ ही रुके और बाकी ग्रुप में भी ऐसा ही था।

पहाड़ी के ऊपर बसा सिरखा बहुत ही खूबसूरत



स्थान है, यहां मोबाइल नेटवर्क नहीं आता, लेकिन नेपाल का नेटवर्क पकड़ता है जिससे यहां गांव वाले यात्रियों की उनके घर बात कराते हैं। हमने भी एक दुकान पर जाकर घर पर फोन लगाया और अपने हाल-चाल बताए और फिर पास ही दुकान पर चाय पी। सूरज अब ढल गया था और मौसम ठंडा हो गया था, हमें देखकर आस-पास के बहुत से बच्चे आ गए और पास बैठ गए, हम सब ने उनके साथ फोटो ली और फिर थोड़ा ऐसे ही घूमते हुए वापस आ गए।

रात को खाना खाकर सब एक बड़े से कमरे में जमा हुए जहां शास्त्री जी ठहरे थे और फिर सब ने उनके सदाबहार हिंदी गानों का आनंद लिया और वापस अपने-अपने कमरे जाकर सो गए। ट्रेक के दूसरे दिन हमें गाला पहुंचना था जो सिरखा से 14 कि. मी. और 2340 मीटर की ऊंचाई पर है, हम चार बजे उठे, दलिया खाकर, चाय पीकर और पांच बजे निकल लिए। आज का ट्रेक थोड़ा ज्यादा कठिन था क्योंकि इसमें बहुत ऊंचाई-निचाई है, यह वैसे बहुत से ट्रेक्स में से नहीं है जिनमें आप नदी के किनारे चलते हैं और धीरे-धीरे ऊंचाई बढ़ती है यहां आगे जाने के

लिए पहाड़ चढ़ना फिर उतरना और फिर से यही प्रक्रिया दोहरानी पड़ती है और आप ऊंचाई के मामले में लगभग वहीं पर रहते हैं। लोगों ने अपनी-अपनी फिटनेस के अनुसार पांच से सात घंटे लगाए। घोड़े वाले भी यात्री ज्यादा जल्दी नहीं पहुंचे क्योंकि बहुत से ऐसे रस्ते हैं जहां घोड़े से उतरकर पैदल ही

चलना पड़ता है। सबसे पहले पहुंचने वालों में सोनी जी, विवेक और गुप्ताजी रहे।

यह थोड़ा सा अलग कैंप है जहां आस-पास कोई गांव नहीं है तो आप पूरा समय यहीं बिताते हैं। खाना खाकर आराम किया और फिर शाम को चाय-नाश्ते के बाद सबने थोड़ा समय शास्त्रीय संगीत सुनने में बिताया। लाइट जनरेटर से थी तो आठ बजे भोजन और नौ बजे लाइट बंद कर दी गई।

शेष आगामी अंक में.... / ओम नमः शिवाय।



हॉस्पिटैलिटी सेक्टर

आतिथ्य क्षेत्र को चाहिए एक बड़ा प्रोत्साहन

—रितेश अग्रवाल

भारतीय अर्थव्यवस्था के तेजी से आगे बढ़ने के साथ ही अतिथि सत्कार या हॉस्पिटैलिटी उद्योग का भी विकास हो रहा है। दरअसल भूमंडलीय करण और बढ़ती समृद्धि की वजह से आज लोग दुनिया के अन्य हिस्सों में घूमने जाना चाहते हैं। इसलिए भारत में एक तरफ जहां विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ी है वहीं देश के भीतर भी लोगों का घूमना फिरना बढ़ा है। यही वजह है कि होटलों रिजॉर्ट आदि की मांग बढ़ी है लेकिन इसके लिए इंफ्रास्ट्रक्चर के लेवल पर बहुत काम करने की जरूरत है इसके लिए शकुन सड़कों हवाई अड्डों का विकास जरूरी है

नियमों में बदलाव लाकर होटलों बेड और ब्रेकफास्ट होम स्टे आदि का बेहतर प्रबंध किया जा सकता है। “एक देश एक कर” इस दिशा में कारगर साबित हो सकता है।

भारत +2000 करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की ओर बढ़ रहा है। ऐसे में हमें पिछले प्रयासों को जारी रखते हुए नई पहलों पर भी ध्यान देना होगा। इसका अर्थ है कि आर्थिक अवसरों पर को पहचानना चाहिए तथा विनियामक माहौल को अनुकूल बनाने पर

*लेखक ओयो होटल्स एंड होम्स के ग्रुप सीईओ

ध्यान देना चाहिए। एक ओर कुछ राज्य बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं तो दूसरी ओर कुछ राज्य राज्यों में मृतकों की संख्या में गिरावट आई है। आज के समय में युवाओं की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, रोजगार के लाखों उत्पादक अवसर पैदा करने के लिए सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं रहा जा सकता। श्रम ब्यूरो और विश्व बैंक के अनुमान के मुताबिक हर



होटल अशोक

साल 40 लाख से ज्यादा लोग कार्यबल में प्रवेश करते हैं और इसके साथ दबाव बढ़ता चला जाता है।

हालांकि वेतनभोगी कर्मचारियों के औपचारिक अर्थव्यवस्था में योगदान को आसानी से पहचाना जा सकता है साथ ही उद्यमियों की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था भी तेजी से विकसित हो रही है। पेशेवरों





की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था एवं परिवहन क्षेत्र रोजगार के 1.4 करोड़ अवसरों का योगदान देते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के मुताबिक 17 गैर विदेशी विदेशी राज्यों में से 12 में आर्थिक विकास की दर 2018 में देश के आर्थिक विकास की दर 6.7 फीसदी से अधिक रही, लेकिन इससे रोजगार के अवसर नहीं बढ़ सके, इन 12 में से 11 राज्यों में रोजगार क्षेत्र में गिरावट दर्ज



अतिथि देवो भव

की गई। इसके विपरीत स्तर पर नौकरियों का सृजन तेजी से हुआ।

हाल ही में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार कोलकाता एवं आसपास के क्षेत्रों में फेरी वालों की कुल 325 लाख स्टॉल्स ने रोजाना लगभग 100 करोड़ की कमाई की थी।

नौकरियों की इस समस्या को ध्यान में रखते हुए हमें अवसर पर सृजन करने वाला नजरिया अपनाना होगा। क्या हम छोटे लघु एवं मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहित करने में सक्षम हैं? क्या हम ऐसे ही नियमों को बढ़ावा दे रहे हैं जो उद्यमों के विकास को प्रोत्साहित करें जो व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं कौशल

निर्माण को बढ़ावा दें? नौकरियों का सतत विकास इन्हीं मुद्दों के समाधान में निहित है।

आज पूरी दुनिया स्थायित्व पर जोर दे रही है। सरकार एवं संगठनों की भूमिका अस्थायी विकास में महत्वपूर्ण हो सकती है। ऐसे में तकनीक के द्वारा जहां एक और अतिरेक को कम किया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर संचालन में पारदर्शिता और दक्षता लाई जा सकती है। इस प्रक्रिया में कुछ नौकरियां कम हो रही हैं और रोजगार के कुछ नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

डिजिटल इंडिया इस पूरी प्रणाली को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण होगा। विभिन्न उद्योगों जैसे रेस्तरां, होटल, हेवी इंजीनियरिंग, हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट, लॉजिस्टिक और ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन में तकनीक का इस्तेमाल ना केवल शॉप फ्लोर पर कौशल निर्माण में मदद कर सकता है बल्कि व्यक्तियों एवं स्टार्ट अप के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान कर सकता है।

घरेलू मांग एवं विदेशी निवेशकों के लिए हॉटस्पॉट बनाने से उनके स्टे को विस्तारित किया जा सकता है। कोई कारण नहीं है कि भारत इस बिलियन डॉलर मौके का फायदा ना उठा सके। मौजूदा नियमों तथा सरकारी दिशानिर्देशों में बदलाव लाकर होटलों, बेड और ब्रेकफास्ट, होमस्टे आदि का बेहतर प्रबंध किया जा सकता है। 'एक देश एक कर' का मॉडल इस दिशा में कारगर हो सकता है। तकनीकी क्षमता का इस्तेमाल का माइक्रो एवं मेट्रो स्तर पर होटल कारोबार में डाटा सिक्योरिटी एवं दक्षता भी सुनिश्चित की जा सकती है

(हिन्दुस्तान, नई दिल्ली से साभार)



याद इन्हें भी कर लें

—प्रस्तुति : मोहन सिंह

खय्याम



मोहम्मद ज़हूर हाशमी जिन्हें “खय्याम” नाम से जाना जाता है, भारतीय फिल्मों के प्रसिद्ध संगीतकार थे। पंजाब के राहों नगर में जन्मे खय्याम छोटी उम्र में ही घर से दिल्ली चले आए और उन्होंने पण्डित अमरनाथ से संगीत की शिक्षा ली। वर्ष 1948 में हीर-राँझा फिल्म से शर्माजी-वर्माजी जोड़ी के शर्माजी के नाम से एक संगीतकार के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। 1953 में आई फिल्म ‘फुटपाथ’ से उन्होंने अपना नाम खय्याम रख लिया था।

फिल्म ‘कभी कभी’ के लिए उन्हें 1977 में तथा फिल्म ‘उमराव जान’ के लिए 1982 में फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ संगीतकार पुरस्कार से नवाजा गया। उन्हें 2007 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। 2010 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार और 2018 में हृदयनाथ मंगेशकर पुरस्कार प्राप्त हुआ। कला क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वर्ष 2011 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया था।

*प्रस्तुति : मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय

90वें जन्मदिन पर खय्याम साहब ने बॉलीवुड को एक अनोखा उपहार दिया था। उन्होंने जीवन भर की कमाई लगभग 12 करोड़ रुपए की रकम ट्रस्ट को दी गई। इस पैसे से जरूरतमंद कलाकारों की मदद की जाती है। सुप्रसिद्ध गजल गायक तलत अजीज और उनकी पत्नी बीना इसकी मुख्य ट्रस्टी हैं।

लोगों को शायद ही पता होगा कि कभी-कभी, उमराव जान, त्रिशूल, नूरी, बाजार, रजिया सुल्तान जैसी फिल्मों का भावपूर्ण संगीत देने वाले खय्याम दूसरे विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सेना में एक सिपाही के रूप में काम करते थे।

खय्याम बताते थे कि वह के.एल. सहगल से बहुत प्रभावित थे और हीरो बनना चाहते थे। इसीलिए मुंबई आए थे लेकिन संगीतकार हुस्नलाल-भगताराम ने प्लेबैक सिंगिंग का मौका दे दिया। उस गाने में उनके साथ को-सिंगर जोहरा जी थीं और कलाम फैज अहमद फैज का था। इसके लिए उन्हें पहली कमाई के रूप में 200 रुपए मिले थे। वहां से आगे बढ़ा और फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

खय्याम अपने बचपन के बारे में सभी को बताते थे कि उनका जन्म पंजाब के जालंधर जिले के राहों कस्बे में हुआ था। उनके घर में तालीम को बहुत अहमियत दी जाती थी। उनके पिता बच्चों से बड़े ही खुलेपन से बात करते थे। सभी से देशप्रेम और मेहनत व ईमानदारी से काम करने की बातें करते थे और उन्हें भी यही बातें सिखाई गई थीं। बालक ज़हूर को के.एल. सहगल के गाने सुनने और फिल्में देखने का बड़ा शौक था। कस्बे में सिनेमाहॉल नहीं था, इसलिए





महीने में जब छुट्टी मिलती तो सब जालंधर में बड़े भाई के पास जाते थे। वहां सब बच्चे मस्ती करते। सभी रेलगाड़ी में जाते थे। राहों से चार-पांच स्टेशन आगे बढ़ते ही उनके पिता हिंदी-उर्दू-पंजाबी के अपने ही अंदाज़ में कहने लगते – चलो भाई, उठो, सलाम करो ते परणाम करो। ये वही गांव है—खटकड़कलां, जहां शहीद भगत सिंह पैदा हुए थे। पूरे हिंदुस्तान की रूह हैं वो, हम उनके गांव के पास के हैं तो हमारे रोएं-रोएं में वो हवा और खुशबू होनी चाहिए। ट्रेन चलती रहती और सभी बच्चे शहादत की कहानियां सुनते रहते। बहरहाल, जालंधर पहुंचने से पहले अब्बा कई बार बता चुकते कि कैसे भगत सिंह ने 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गाते हुए खुद को वतन पर कुर्बान कर दिया। कैसे राम प्रसाद बिस्मिल फांसी के तख्ते पर वह हंसते-गाते हुए चढ़े। फिर 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है' सुनाते।

वह हमें बताते कि मातृभूमि का क्या महत्व होता है, सभी को अपना हर काम ज़िम्मेदारी से करना चाहिए। उनकी इन बातों का सभी बच्चों पर ज़िंदगी भर प्रभाव रहा और इसीलिए मैं हर काम उसी उसूल के तहत करता हूं।

'वो सुबह कभी तो आएगी', 'जाने क्या दूंदती रहती हैं ये आंखें मुझमें', 'बुझा दिए हैं खुद अपने हाथों, 'ठहरिए होश में आ लूं', 'तुम अपना रंजो गम अपनी परेशानी मुझे दे दो', 'शामे गम की कसम', 'बहारों मेरा जीवन भी संवारो' 'इन आंखों की मस्ती के', 'बड़ी वफा से निभाई हमने...', 'फिर छिड़ी रात बात फूलों की' जैसे अनेकों गीत में अपने संगीत से चार चांद लगा चुके खय्याम 19 अगस्त, 2019 को चिर निद्रा में सो गए। उन्होंने अपनी यादगार धुनों से अनगिनत गीतों को अमर बना दिया। उनके अप्रतिम योगदान के लिए फिल्म और कला जगत हमेशा उनका ऋणी रहेगा।

.....

विजू खोटे



फिल्म शोले में

विजू खोटे के नाम से लोकप्रिय विट्टल बापुराव खोटे, एक फिल्म अभिनेता थे। विजू खोटे ने फिल्म 'या मालक' से अपने अभिनय की शुरुआत की थी और हिंदी तथा मराठी की लगभग 300 फिल्मों में काम किया था। लेकिन उन्हें फिल्म 'शोले' से ही सबसे जबरदस्त पहचान मिली थी। इस फिल्म में डाकू 'कालिया' बने

विजू खोटे का एक डायलॉग "सरदार मैंने आपका नमक खाया है" बहुत प्रसिद्ध हुआ था। इस फिल्म के बाद विजू खोटे ने सलमान खान और आमिर खान की फिल्म 'अंदाज अपना अपना' में रॉबर्ट की भूमिका की और एक और डायलॉग "गलती से मिस्टेक हो गया" भी काफी मशहूर हुआ था। टेलीविजन पर उन्हें "ज़बान संभल के" में उनकी भूमिका के लिए भी किया जाता है। फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे' में उनका एक खास अंदाज में बार बार बताना, "सरदार ..दो थे।" भी दर्शकों ने बहुत पसंद किया था। वह बॉलीवुड की कई फिल्मों जैसे रामपुर का लक्ष्मण, हद कर दी आपने, गोलमाल-3, बादशाह आदि में नजर आए। उन्होंने वर्षों तक मराठी थिएटर में भी काम किया था। 30 सितंबर 2019 को 77 वर्ष की आयु में श्री विजू खोटे का मुंबई में निधन हो गया। **अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है।**



सुषमा स्वराज



देश की जानी मानी महिला राजनीतिज्ञ सुषमा स्वराज का 06 अगस्त, 2019 की रात 67 वर्ष की आयु में दिल्ली में निधन हो गया। वह भारतीय संसद की प्रथम एवं एकमात्र ऐसी महिला सदस्या थीं जिन्हें "आउटस्टैंडिंग पार्लिमेंटेरियन" का सम्मान मिला है। उन्होंने चार राज्यों से 11 बार सीधे चुनाव लड़े थे। वह हरियाणा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की चार वर्ष तक अध्यक्ष भी रहीं। 14 फरवरी, 1952 को अम्बाला छावनी में हरदेव शर्मा तथा लक्ष्मी देवी के घर जन्मी सुषमा ने सनातन धर्म कालेज, अम्बाला छावनी से संस्कृत तथा राजनीति विज्ञान में स्नातक किया तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से कानून की डिग्री ली।

वर्ष 2014 में उन्हें भारत की पहली महिला विदेश मंत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ। कैबिनेट में उन्हें शामिल करके उनके कद और काबिलियत को स्वीकारा। दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री और देश में किसी राजनीतिक दल की पहली महिला प्रवक्ता बनने की उपलब्धि भी उन्हीं के नाम दर्ज है। भारत की संसद में सर्वश्रेष्ठ सांसद का पुरस्कार पाने वाली पहली महिला भी वह ही हैं।

हिन्दी ओर संस्कृत की पक्षधर

भाषा ज्ञान के साथ वह प्रखर और ओजस्वी वक्ता, प्रभावी सांसद और कुशल प्रशासक थीं। वह अनेक भाषाओं में पारंगत थीं। हिंदी उत्कृष्ट, धाराप्रवाह अंग्रेजी, संस्कृत, हरियाणवी, पंजाबी और उर्दू भी बहुत अच्छी। फिर जब कर्नाटक से चुनाव लड़ीं, तो कन्नड भी सीख ली। सुषमा स्वराज अक्सर हिन्दी में ही बोलती थीं और हिंदी में तत्सम शब्द अधिक होते थे। विदेश मंत्री

रहते हुए सुषमा स्वराज ने सितम्बर 2016 में संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी में ही भाषण दिया था और उनके इस भाषण की पूरे देश में चर्चा हुई थी। विश्व हिन्दी सम्मेलनों में तो वह बढ़ चढ़कर भाग लेतीं थीं। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए भी उन्होंने अनेक प्रयत्न किए।

संस्कृत से भी उन्हें खास लगाव था। वह सदा संस्कृत में शपथ लेतीं थीं। 2012 में 'साउथ इंडिया एजुकेशन सोसायटी' ने सुषमा जी को पुरस्कृत किया। यह कार्यक्रम मुंबई में आयोजित किया गया था। वहां संस्कृत के अनेक विद्वान मौजूद थे। सम्मान प्राप्ति के पश्चात उन्होंने अपना भाषण संस्कृत में ही दिया। सम्मान में जो धनराशि मिली थी, वह संस्था को लौटाते हुए कहा कि इस पैसे को संस्कृत के उत्थान में ही लगा दें। इसी प्रकार जून 2015 में 16वां विश्व संस्कृत सम्मेलन बैकाक में हुआ जिसकी मुख्य अतिथि के रूप में सुषमा स्वराज थीं। उन्होंने उद्घाटन भाषण संस्कृत में दिया था।

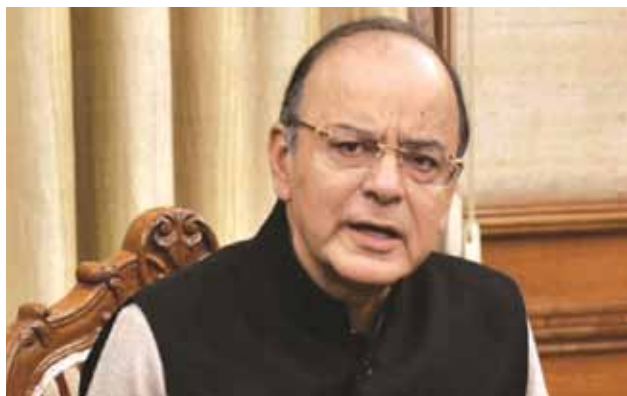
70 के दशक में ही स्वराज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ गयी थी। उनके पति, स्वराज कौशल, समाजवादी नेता जॉर्ज फ़र्नान्डिसके अच्छे मित्र थे, और इस कारण 1975 में वह भी श्री फ़र्नान्डिस की 'लीगल टीम' का हिस्सा बन गई थी। जनता पार्टी बनने पर वह जनता पार्टी की सदस्य बन गयीं और 1977 में उन्होंने अम्बाला छावनी से विधानसभा का चुनाव जीता और 25 साल की आयु में ही, 1977 में चौधरी देवी लाल की सरकार में श्रम मंत्री बनने का रिकार्ड बनाया था। 80 के दशक में भारतीय जनता पार्टी के गठन पर वह भी इसमें शामिल हो गयीं।

मार्च 1998 में उन्होंने दक्षिण दिल्ली संसदीय क्षेत्र से चुनाव जीता। वाजपेयी सरकार में उन्होंने दूरसंचार मंत्रालय के अतिरिक्त प्रभार के साथ सूचना एवं प्रसारण मंत्री का कार्य भार मिला। इस अवधि के दौरान उनका सबसे उल्लेखनीय निर्णय था, फिल्म निर्माण को एक उद्योग के रूप में घोषित करना क्योंकि इससे फिल्म उद्योग को भी बैंक से कर्ज़ मिल सकता था।

उनके निधन से देश को एक महिला राजनीतिज्ञ की कमी हो गई जिसे पूरा करने में काफी समय लगेगा। अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है।



अरुण जेटली



24 अगस्त 2019 को देश के पूर्व वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली का दिल्ली के एम्स में निधन हो गया। 1999 में, भाजपा की वाजपेयी सरकार के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सत्ता में आने के बाद उन्हें 13 अक्टूबर 1999 को सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नियुक्त किया गया। विश्व व्यापार संगठन के निदेशों के अनुसार, विनिवेश की नीति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए पहली बार एक नया मंत्रालय बनाया गया। उन्हें विनिवेश राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नियुक्त किया गया।

उनके पिता महाराज किशन जेटली भी जाने-माने वकील थे। अपनी 1973 में श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, नई दिल्ली से कॉमर्स में स्नातक करने के बाद उन्होंने 1977 में दिल्ली विश्व विद्यालय से विधि की डिग्री प्राप्त की। वह 1974 में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र संगठन के अध्यक्ष भी रहे। इसके अलावा वह बहुत समय तक 'यूनियन ऑफ सिविल लिबर्टीज' के अध्यक्ष रहे जिसके तहत जनसमस्याओं की ओर सरकार को ध्यान दिलाते रहे।

2014 में जेटली को मोदी सरकार में वित्त, कॉरपोरेट अफेयर्स और रक्षा मंत्री बनाया गया। 24 अगस्त 2019 को अरुण जेटली का दिल्ली के एम्स में निधन हो गया। **अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है।**

विद्या सिन्हा

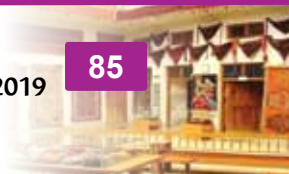
विद्या सिन्हा 1980 के दशक में हिन्दी फिल्मों की चर्चित अभिनेत्रियों में से एक थीं। विद्या को "रजनीगंधा", "छोटी सी बात" में अमोल पालेकर के साथ अभिनय और "पति-पत्नी और वो" समेत कई फिल्मों में उनके बेहतरीन अभिनय के लिये याद किया जाता है। कहा जाता है कि 'रजनीगंधा' और 'छोटी सी बात' जैसी उनकी फिल्म आज भी जब कभी टीवी पर दिखाई जाती है तो दर्शक रिमोट उठा कर किनारे रख देते हैं। दरअसल, इन फिल्मों में प्रेम को जिस तरह से दर्शाया गया है वो बरबस ही आपके जीवन का हिस्सा लगने लगने लगता है। ये फिल्में अमोल पालेकर और विद्या सिन्हा की यादगार फिल्मों में से हैं। इसके अलावा उन्होंने कुछ टीवी धारावाहिकों में भी अभिनय किया, जिनमें "काव्यांजलि", "कबूल है" और "कुल्फी कुमार बाजेवाला" शामिल हैं।



15 नवंबर 1947 को मुंबई के एक फिल्मी परिवार में जन्मी विद्या सिन्हा के पिता प्रताप राणा एक फिल्म प्रोड्यूसर थे। विद्या जब 18 साल की थीं, तभी उन्होंने मॉडलिंग शुरू कर दी।

फिल्मों से लम्बी दूरी के बाद हाल के वर्षों में विद्या छोटे पर्दे पर सक्रिय रही थीं। 15 अगस्त 2019 को समय ने उन्हें हमने दूर कर दिया। **अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है।**

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार





अतुल्य भारत अभियान को मिला पाटा स्वर्ण पुरस्कार-2019

17 जुलाई, 2019 को भारत के अतुल्य भारत अभियान को पाटा (पैसेफिक-एशिया ट्रैवल एसोसिएशन) स्वर्ण पुरस्कार 2019 का विजेता घोषित किया गया है। पर्यटन मंत्रालय ने 2018-19 के दौरान अतुल्य भारत "फाइंड द इन्क्रेडेबल यू" अभियान अतुल्य भारत 2.0 अभियान को सितंबर, 2017 में विश्व स्तर पर लांच किया था। इस अभियान को पाटा स्वर्ण पुरस्कार 2019 प्रदान किया गया है। इस वर्ष के पुरस्कार के लिए 78 संगठनों से 198 आवेदन प्राप्त हुए थे। पर्यटन मंत्रालय अतुल्य भारत ब्रांड के तहत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक वर्ष मीडिया अभियान चलाता है। इस अभियान को टेलीविजन, प्रिंट, डिजिटल और सोशल मीडिया में दिखाया जाता है। इस अभियान की मुख्य विशेषता संभावित बाजार को ध्यान में रखते हुए सूचनाएं तैयार करना था।

मंत्रालय के द्वारा पांच नए टेलीविजन कमर्शियल का निर्माण किया गया, जिन्हें टेलीविजन, डिजिटल और सोशल मीडिया पर पूरे विश्व में प्रसारित किया गया।

1. योग: "रेसट्रैक का योगी", 2. आरोग्य: "श्रीमान और श्रीमती जॉस का पुनर्जीवन", 3. विलासिता: "मैनहटन की महारानी", 4. खान-पान: "मसाला मास्टर शेफ", 5. वन्यजीवन: "पेरिस में वन्य संरक्षण क्षेत्र"

अभियान की रणनीति के तहत गंतव्य स्थलों के अनुभव के स्थान पर यात्रियों के अनुभव को विशेष महत्व दिया गया और यात्रियों के अनुभव को यात्रियों की आत्मकथा के रूप में सामने रखा गया। इसकी टैग लाइन थी। "फाइंड द इन्क्रेडेबल यू"।

एशिया.पैसेफिक क्षेत्र में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए पाटा स्वर्ण पुरस्कार दिए जाते हैं।

पर्यटन मंत्रियों का सम्मेलन 20 अगस्त

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 20 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्रियों के एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन में 19 राज्यों के पर्यटन मंत्रियों, पर्यटन सचिवों और राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया और पर्यटन क्षेत्र के विकास एवं संवर्धन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया।

इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने अपने सम्बोधन में देश में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए केन्द्र और राज्यों के बीच बेहतर सामंजस्य सुनिश्चित करने का अनुरोध किया और उन्होंने इस अवधारणा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विदेशी पर्यटकों के जेहन में भारत की जो छवि बनी हुई है उसे बदलने की जरूरत है। इससे पर्यटन को बढ़ावा देने के अच्छे नतीजे सामने आएंगे। उन्होंने राज्यों से अनुरोध किया कि वह अपने यहां सर्वेक्षण कर यह पता लगाएं कि भारत को लेकर विदेशी पर्यटकों की राय क्या है? उन्होंने राज्यों से आए प्रतिनिधियों से कहा कि भारत से जुड़ी किसी भी नकारात्मक धारणा को समाप्त करने के लिए मिल-जुलकर काम करना चाहिए। अगले पांच वर्षों के दौरान विदेशी एवं घरेलू पर्यटकों की संख्या दोगुनी करने संबंधी प्रधानमंत्री के सपने को साकार करने के लिए हम सभी को संगठित होकर ठोस प्रयास करने चाहिए।

पर्यटन मंत्री जी ने सम्मेलन के दौरान 'अतुल्य भारत' के नए पोर्टल के हिंदी संस्करण का प्रमोचन करते हुए घोषणा की कि अगले माह अतुल्य भारत की नई वेबसाइट के अरबी, चीनी और स्पैनिश संस्करण भी आरम्भ किए जाएंगे।

माननीय मंत्री जी ने सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से अनुरोध किया कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की मदद से अपने धरोहर स्थलों के





राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के पर्यटन मंत्रियों के साथ एक सामूहिक तस्वीर में माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री जी।

लिए प्रस्ताव बनाते वक्त यूनेस्को के मानकों का पालन करें। उन्होंने कहा कि हमारे प्राकृतिक स्थलों में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं तथा हमें इस क्षेत्र में और ज्यादा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए साहसिक पर्यटन पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हाल ही में रात्रिकालीन पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने देश भर में 10 ऐतिहासिक स्मारकों को रात्रि नौ बजे तक पर्यटकों तथा आगंतुकों के लिए खुला रखने का निर्णय लिया है। उन्होंने सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से भी अपने यहां के महत्वपूर्ण स्मारकों को आगंतुकों के लिए देर रात तक खुला रखने का अनुरोध किया। पर्यटन मंत्री ने सम्मेलन के दौरान अतुल्य भारत पर्यटक सुविधाप्रदाता प्रमाणन (IITFC) पोर्टल का भी विमोचन किया। अतुल्य भारत पर्यटक सुविधाप्रदाता प्रमाणपन कार्यक्रम देश के नागरिकों के लिए भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय की एक डिजिटल पहल है, ताकि वह तेजी से विकसित हो रहे पर्यटन उद्योग का एक हिस्सा बन सकें। यह एक ऑनलाइन कार्यक्रम है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति पर्यटन के बारे में अपने सुविधाजनक समय, स्थान एवं तरीके के अनुसार जानकारी प्राप्त कर सकता है। पर्यटन मंत्री ने सम्मेलन में संभावित 'स्मारक मित्रों' को तीन नए समझौता ज्ञापन और पांच नए सहमति पत्र सौंपे। इस सम्मेलन ने पर्यटन

मंत्रालय को राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को नई और भावी पहलों के बारे में जानकारी देने का मंच प्रदान किया है। इसके जरिए राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों से फीडबैक प्राप्त करने, उनके सक्रिय योगदान की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने तथा पर्यटन के विकास के लिए उनकी सरकारों द्वारा किए गए उपायों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर भी मिलता है।

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ निम्नलिखित विषयों पर फीडबैक के लिए चर्चा की गई:

1. वेब आधारित एप्लिकेशन तथा ट्वीटर और टूरिस्ट-हेल्पलाइन के जरिए शिकायत समाधान प्रणाली के माध्यम से पर्यटन संबंधी सेवाओं की सूचनाओं के लिए एकल केंद्र का विकास।
 2. राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा रोमांचक पर्यटन और बैड एवं ब्रेकफास्ट/होमस्टे योजना दिशा-निर्देशों को अपनाना।
 3. स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाओं के तहत स्वीकृत परियोजनाओं की स्थिति तथा सार्वजनिक वित्त प्रबंधन प्रणाली (PFMS) का क्रियान्वयन।
- चर्चा के बाद केरल और सिक्किम ने अपने यहां के पर्यटन क्षेत्र में होने वाले उत्कृष्ट व्यवहारों के विषय में प्रस्तुतियां दीं।





पर्वतारोहण एवं ट्रेकिंग हेतु चार राज्यों के 137 पर्वत शिखरों विदेशियों को अनुमति

21 अगस्त, 2019 को भारत सरकार ने पर्वतारोहण एवं ट्रेकिंग के लिए पर्वतारोहण वीजा प्राप्त करने के इच्छुक विदेशियों के लिए जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और सिक्किम में स्थित 137 पर्वत शिखरों को खोल दिया है। विदेशियों के लिए सबसे अधिक (51) शिखर उत्तराखंड में खोले गए हैं। इस सूची में जम्मू-कश्मीर के 15, सिक्किम के 24 तथा हिमाचल प्रदेश के 47 पर्वत शिखरों को भी शामिल किया गया है। पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने विदेशियों के लिए ज्यादा पर्वत शिखरों को खोलने के पर्यटन मंत्रालय के अनुरोध को स्वीकार करने के लिए गृहमंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया है। मंत्री जी ने कहा कि यह देश में साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है। इससे पहले, 20 अगस्त 2019 को नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय पर्यटन सम्मेलन के दौरान पर्यटन मंत्रियों को संबोधित करते हुए माननीय मंत्री जी ने साहसिक पर्यटन पर जाने वाले यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। उन्होंने राज्यों से अनुरोध किया कि साहसिक और रोमांचकारी पर्यटन ऑपरेटरों का पंजीकरण करते समय अत्यधिक सावधानी बरतें और यह भी सुनिश्चित करें कि राज्यों द्वारा साहसिक पर्यटन के दिशानिर्देशों का पालन किया जा रहा है। भारतीय साहसिक पर्यटन दिशानिर्देश 2018 के तहत जमीन, हवा और पानी में की जाने वाले कार्यकलाप आते हैं, जिनमें पर्वतारोहण, ट्रेकिंग, बंजी जंपिंग, पैरा ग्लाइडिंग, कयाकिंग, स्कूबा डाइविंग, स्नोरकेलिंग, रिवर रॉफ्टिंग और कई दूसरे खेल आते हैं।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा लद्दाख के पर्यटन क्षेत्र के लिए पूर्ण सहयोग।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने लद्दाख क्षेत्र में पर्यटन के अवसरों में वृद्धि का पता लगाने के लिए मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ 03 से 05 सितम्बर, 2019 तक लेह का दौरा किया और लद्दाख क्षेत्र में पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए योजना बनाने के बारे में स्थानीय प्रशासन तथा पर्यटन से जुड़े हितधारकों के साथ चर्चाएं की।

लेह पहुंचने के बाद माननीय मंत्री जी ने पर्यटन के अलग अलग क्षेत्रों में लगे हितधारकों के साथ कई बैठकें कीं और लद्दाख में सांस्कृतिक गतिविधियों तथा पर्यटन को प्रोत्साहित करने के प्रस्तावों पर चर्चा की। इस बैठक में लद्दाख के सांसद श्री जाम्यांग त्सेरिंग नामग्याल सहित लेह की सांस्कृतिक सोसायटी तथा यात्रा-कारोबार संघ के सदस्यगण भी उपस्थित थे। अलग-अलग हितधारकों ने अपनी समस्याओं के बारे, इस क्षेत्र में पर्यटन के अवसरों के विस्तार, साहसिक/रोमांचक पर्यटन, शीतकालीन पर्यटन आदि को प्रोत्साहित करने के साथ, देश के विभिन्न स्थानों से सभी मौसमों में लेह, कारगिल और नुब्रा घाटी तक आने जाने की सस्ती तथा बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने पर भी चर्चा की गई। प्रतिनिधियों ने मंत्री जी से यह भी अनुरोध किया कि स्थानीय प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए इस क्षेत्र में होटल प्रबंधन संस्थान और पर्वतारोहण संस्थान खोले जाएं।

मंत्री जी ने उन्हें आश्वासन दिया कि सरकार उनकी चिंताओं के बारे में बहुत सकारात्मक है और इस नए संघ शासित प्रदेश में पर्यटन के विकास के बारे में लद्दाख को पूर्ण सहायता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लोगों के सपनों को पूरा करने



के लिए केंद्र सरकार लद्दाख के दरवाजे पर पहुंची है। मंत्री जी ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि लद्दाख किसी भी पर्यटक के लिए घूमने के लिए सबसे अच्छा स्थान है क्योंकि यहां महान संस्कृति, प्राकृतिक सुंदरता और शांति है। लद्दाख में बहुत अवसर हैं और संघ शासित प्रदेश का दर्जा, लद्दाख को जल्दी समृद्ध होने का एक बड़ा मंच प्रदान करेगा और इससे केंद्र सरकार, विभिन्न एजेंसियों और पर्यटन उद्योग के हितधारकों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित होगा।

माननीय मंत्री जी लद्दाख महोत्सव, 2019 के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने लद्दाख को हाल ही में

जम्मू-कश्मीर पर्यटन विभाग के प्रधान सचिव श्री नवीन कुमार चौधरी तथा पर्यटन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं स्थानीय निकायों के अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय लद्दाख के लिए नई पर्यटन नीति बनाने में स्थानीय प्रशासन को पूर्ण सहयोग देगा और यदि जरूरत हुई, तो मंत्रालय के अधिकारी इस मामले में सहायता प्रदान करने के लिए प्रति महीने लद्दाख की यात्रा करेंगे।

बैठक में स्थानीय हितधारकों ने श्री पटेल की लद्दाख यात्रा की सराहना की। स्थानीय लोगों ने पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए बेहतर सम्पर्क,

बेहतर अवसंरचना, टैक्स में छूट आदि की भी मांग की। माननीय मंत्री जी ने उन्हें मंत्रालय तथा भारत सरकार के पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया।

बैठक में पर्यटक मंत्रालय के संयुक्त महानिदेशक श्री विकास रुस्तगी

ने लद्दाख क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने की कार्ययोजना विषय पर एक प्रस्तुति दी। इसमें यह दिखाया गया कि लद्दाख में पूरी दुनिया से पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता है। अतुल्य भारत अभियान में लद्दाख को विशेष स्थान दिया गया है।

मिले संघ शासित प्रदेश के दर्जे के लिए वहां की जनता को बधाई दी और महोत्सव के समापन समारोह के दौरान विभिन्न कलाकारों के सांस्कृतिक प्रदर्शन की सराहना की।

इन बैठकों में माननीय मंत्री जी के साथ, महानिदेशक (पर्यटन) श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, पर्यटन विभाग की अपर महानिदेशक सुश्री रुपिन्दर बरार,



भारत पर्यटन मार्ट 2019

सड़क परिवहन और राजमार्ग तथा सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री नितिन गडकरी और पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 23 सितम्बर, 2019 को नई दिल्ली में भारत पर्यटन मार्ट 2019 का उद्घाटन किया। इस मार्ट का आयोजन पर्यटन मंत्रालय और भारतीय पर्यटन एवं अतिथि सत्कार परिसंघ (FAITH) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है। आईटीएम के दूसरे भाग में 51

जो नए पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। उन्होंने कहा कि हम स्वच्छता एवं बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जिनसे पर्यटन क्षेत्र को भी बढ़ावा मिलेगा। पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं और यह हमारी सरकार के लिए सबसे महत्वपूर्ण एजेंडा है। उन्होंने विश्वास जताया कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा देश में पर्यटन और यात्रा को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के मद्देनजर महत्वपूर्ण परिणाम सामने आएंगे।



देशों के 240 से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों सहित देश भर के 160 प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, पर्यटन महानिदेशक श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, भारतीय पर्यटन एवं अतिथि सत्कार परिसंघ के अध्यक्ष श्री नकुल आनंद, भारत पर्यटन मार्ट 2019 के अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल और पर्यटन मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री नितिन गडकरी ने कहा कि इस सुव्यवस्थित मार्ट में जिस प्रकार के हितधारक हिस्सा ले रहे हैं, उसे देखते हुए इस आयोजन से काफी सकारात्मक परिणामों की अपेक्षा की जा सकती है। भारत के पास भाषा, संस्कृति एवं विविध व्यंजन हैं,

इस अवसर पर माननीय पर्यटन मंत्री जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि पर्यटन मंत्रालय तथा FAITH का सहयोग पर्यटकों के विश्वास में वृद्धि करेगा। भारत की संस्कृति में विविधता है और मैं प्रतिनिधियों से अनुरोध करता हूं कि इस मार्ट में हमारे राज्यों के मंडपों में अवश्य जाएं। इससे उन्हें हमारी संस्कृति की खूबसूरती को जानने का अवसर मिलेगा। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हमारे 'ब्रांड एंबेस्डर' हैं और हम 'हाउडी मोदी' आयोजन में इसकी झलक देख चुके हैं। उन्होंने कहा कि पर्यटन विश्व से जुड़ने का बेहतरीन तरीका है और हमारे प्रयास सही दिशा में हो रहे हैं।

इससे पहले संवाददाता सम्मेलन में मीडिया को



संबोधित करते हुए मंत्री जी ने कहा कि इस मार्ट का उद्देश्य व्यापार और अतिथि सत्कार सेवा प्रदाताओं को विदेशों में उनके समकक्षों के साथ संपर्क स्थापित करने और कारोबार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक मंच प्रदान करना है।

माननीय पर्यटन मंत्री जी ने हाल ही में जीएसटी छूट की घोषणाएं करने के लिए प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री का आभारी व्यक्त किया और कहा कि इस छूट से अतिथि सत्कार के क्षेत्र को लाभ पहुंचेगा तथा पर्यटन उद्योग के लिए और आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने आगे कहा कि भारत बहुत खूबसूरत और एक जीवंत देश है और उसके प्रति अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की धारणाओं में निश्चित रूप से परिवर्तन आया है, जिसके कारण अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। उन्होंने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे खुले दिल से अपने सुझाव दें।

FAITH देश के महत्वपूर्ण व्यापार और आतिथ्य संघों का शीर्ष संगठन है और यह पर्यटन मंत्रालय के समर्थन से देश के पर्यटन स्थलों और उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्रोत बाजारों में स्थापित करने के उद्देश्य से इस अभियान को आगे बढ़ाएगा।

यह मार्ट का दूसरा आयोजन था, जिसे विश्व के देशों में वार्षिक स्तर पर होने वाले प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय ट्रेवल माटर्स की तर्ज पर आयोजित किया गया था।

विदेशों के महत्वपूर्ण तथा संभावनाओं से भरपूर स्रोत बाजारों के प्रतिनिधियों को इस मार्ट में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस मार्ट में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, इंडोनेशिया, मलेशिया, मैक्सिको, न्यूजीलैंड, नॉर्वे, फिलीपीन्स, पोलैंड, रूस, दक्षिण कोरिया, स्पेन, स्वीडन, थाइलैंड, ब्रिटेन, अमेरिका जैसे महत्वपूर्ण 51 देशों के 240 से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय

प्रतिनिधियों ने अपनी भागीदारी दर्ज की थी।

अंतर्राष्ट्रीय शिष्टमंडलो में ऐसे टूर ऑपरेटर और ट्रेवल एजेंट भी शामिल थे, जो पहले से ही अपने अपने देशों के पर्यटकों के मध्य खासकर जो भारत में दिलचस्पी लेते हैं, भारत को एक पर्यटक स्थल के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कार्यक्रममें इन प्रतिनिधियों को भारत में उपलब्ध विश्वस्तरीय पर्यटन सुविधाओं जैसे कि हवाई अड्डे, होटल, पर्यटन स्थल और उत्पाद, MICE (अर्थात बैठक, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनीय सुविधाओं आदि के बारे जानने और देखने का अवसर मिला ताकि वह इन्हें अपने देश के भावी उपभोक्ताओं के बीच प्रचारित कर सकें।

मार्ट के प्रदर्शनी स्थल में लगभग 175 मंडप बनाए गए, जहां देश भर के टूर ऑपरेटर, होटल व्यवसायी और अन्य हितधारकों सहित विक्रेता प्रतिनिधियों को अंतर्राष्ट्रीय क्रेता प्रतिनिधियों के साथ बी2बी बैठकें करने का अवसर प्रदान किया गया। साथ ही राज्यों और संघशासित प्रदेशों को अपने विशिष्ट पर्यटक स्थलों और उत्पादों को प्रदर्शित करने का अवसर मिल पाया।

इस आईटीएम 2019 में गुजरात एक साझेदार राज्य था। अन्य राज्यों में, आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, दमन और दीव, गोवा, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, झारखंड, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश राज्यों ने भी इस मार्ट में भागीदारी की थी। 24 और 25 सितम्बर, 2019 को प्रतिनिधियों के बीच बी2बी बैठकें और नेटवर्किंग सत्र आयोजित किया गया। मार्ट के बाद प्रतिनिधियों को देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों के परिचय दौरे (फैमिलेराइजेशन टूरर्स) पर पर ले जाया गया।



उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने विश्व पर्यटन दिवस पर राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार 2017-18 प्रदान किए

उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर 27 सितम्बर, 2019 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार-2017-18 प्रदान किए। विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत कुल 76 पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल, संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) के महासचिव श्री जुरब पोलोलिकाशविली, पैराग्वे की पर्यटन मंत्री सुश्री सोफिया मोंटीएल दे अफरा, पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, महानिदेशक (पर्यटन) श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, पर्यटन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और 82 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपस्थित थे।

महामहिम उपराष्ट्रपति जी ने अपने सम्बोधन में पर्यटन उद्योग के सभी हितधारकों से उन्हें अपने इकोलॉजिकल फुटप्रिंट अर्थात् पारिस्थितिक दायित्वों के प्रति विशेष रूप से सावधान तथा अधिक जिम्मेदार एवं सतत पर्यटन प्रथाओं के प्रति सचेत रहने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए सुझाव कि घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 2022 तक भारत के कम से कम 15 पर्यटन स्थलों का दौरा करें, के बारे में बताते हुए श्री नायडू ने लोगों और खासकर युवाओं से, आग्रह किया कि भारत की संस्कृति, विरासत, भाषाओं और व्यंजनों के विभिन्न पक्षों के बारे में जानने और देश के अद्वितीय सांस्कृतिक इंद्रधनुष के बारे में अपनी समझ को बढ़ाने के लिए एक बार “भारत दर्शन” पर जरूर जाएं।

चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में भारत की जबरदस्त क्षमता को भी रेखांकित करते हुए उपराष्ट्रपति जी ने कहा कि भारत को आयुर्वेद और योग जैसे उपचारों की प्राचीन प्रथाओं का लाभ उठाना चाहिए ताकि पूर्ण

निरोगता चाहने वाले पर्यटकों को यहां अधिक संख्या में आकर्षित किया जा सके।



इस अवसर पर अपने सम्बोधन में माननीय पर्यटन मंत्री जी ने संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) द्वारा भारत को विश्व पर्यटन दिवस-2019 के उत्सव के लिए मेजबान देश के तौर पर चुनने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि हम “अतिथिदेवो भव” में यकीन करते हैं और इसीलिए हमारे पर्यटक हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार लगातार पर्यटकों के अनुकूल निर्णय ले रही है जैसे कि ई.टूरिस्ट वीजा शुल्क में कमी, एक विस्तारित ई.टूरिस्ट वीजा उपलब्ध कराना, होटल की दरों पर जीएसटी में कटौती, हाल ही में लिए गए कुछ

महत्वपूर्ण निर्णय हैं। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अभी और प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

मंत्री जी ने आगे कहा कि पर्यटन क्षेत्र राजस्व पैदा करने वाला क्षेत्र है। लेकिन राजस्व के अलावा भी हम इस धारणा को बदलना चाहते हैं। पिछले पांच वर्षों में विश्व यात्रा और प्रतिस्पर्धात्मक सूचकांक में भारत ने अपने स्थान में बहुत शानदार सुधार किया है जो 2013 में जहां 65वें स्थान पर था, वहीं 2019 में 34वें स्थान पर आ गया। इसका श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को जाता है जिन्होंने देश के ब्रांड एंबेसेडर के तौर पर भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ब्रांड के रूप में गर्व से पेश किया है।

श्री जुरब पोलोलिकाशविली ने कहा कि भारत एक तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है और वांछित सुधार भी हो रहे हैं, ऐसे सुधार जिनसे पर्यटन क्षेत्र को बहुत सारे अवसर प्राप्त होते हैं। और UNWTO पर्यटन से संबंधित अवसरों के लिए भारत के साथ सहयोग करके प्रसन्न है।



बाद में मीडिया को जानकारी देते हुए पर्यटन मंत्री जी तथा विश्व पर्यटन संगठन के महासचिव श्री जुरब पोलोलिकाशविली ने बताया कि UNWTO विश्व पर्यटन संगठन की ऑनलाइन अकादमी अपने अकादमी पोर्टल पर पर्यटन से संबंधित पाठ्यक्रम हिंदी में भी उपलब्ध कराएगी। माननीय मंत्री जी

ने भारत के लिए पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयासों हेतु को उन्हें धन्यवाद दिया और घोषणा की कि अगले साल से पर्यटन पुरस्कारों में एक नई विशेष श्रेणी शामिल होगी जिसमें असाधारण कार्यों, जैसे कि जीवन पर खतरे की स्थिति में किसी पर्यटक की जान बचाने वालों को भी पुरस्कृत किया जाएगा।

इस अवसर पर UNWTO द्वारा भारत में अपने संबद्ध सदस्य 'आउटलुक रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म इनिशिएटिव' के सहयोग से "भविष्य के पर्यटन रोजगार" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई ताकि यह पता लगाया जा सके कि कैसे भविष्य के पर्यटन रुझानों में समायोजित हुआ जाए, अपनी गतिविधियों और पर्यटन प्रथाओं को व्यवस्थित किया जाए और अपने समुदायों में अधिक रोजगार के अवसर पैदा किए जाएं।

'ज्यादा और बेहतर नौकरियां पैदा करने की पर्यटन की संभावना को अधिकतम करना' इस विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई और साथ ही UNWTO द्वारा 'भविष्य अभी है – UNWTO ऑनलाइन एकेडमी' पर एक प्रस्तुति भी दी गई।

पर्यटन मंत्रालय प्रति वर्ष यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार प्रदान करता है। यह पुरस्कार राज्य सरकारों/केंद्र शासित प्रदेशों, वर्गीकृत होटलों, विरासत होटलों, अनुमोदित ट्रेवल एजेंटों, टूर ऑपरेटरों, पर्यटक परिवहन ऑपरेटरों, व्यक्तियों और अन्य निजी संगठनों को संबंधित क्षेत्रों में उनके प्रदर्शन को मान्यता देने के लिए प्रदान किए जाते हैं। राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार पिछले कुछ वर्षों में यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य के क्षेत्रों में उपलब्धियों को मिलने वाली एक प्रतिष्ठित मान्यता के रूप में उभरे हैं।





रुस की संघीय पर्यटन एजेंसी की प्रमुख सुश्री जरीना डोगुजोवा ने 10 जुलाई, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से मुलाकात की। इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी तथा महानिदेशक(पर्यटन) सुश्री मीनाक्षी शर्मा भी उपस्थित हैं।



पुडुचेरी के मुख्य मंत्री श्री वी नारायणसामी ने 24 जुलाई, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल मुलाकात की।





इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉटिकल फेडरेशन के कार्यकारी निदेशक डॉ. क्रिश्चियन फेइचिंगर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 31 जुलाई, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल मुलाकात की।



असम के पर्यटन मंत्री श्री चन्दन ब्रह्मा 06 अगस्त 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट करते हुए।





आंध्र प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री मुथ्मशेट्टी श्रीनिवास राव और आंध्र प्रदेश से राज्य सभा सदस्य श्री वी.विजय साई रेड्डी ने 14 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की।



20 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में राज्यों के पर्यटन मंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल।





20 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में राज्यों के पर्यटन मंत्रियों के सम्मेलन के इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने अतुल्य भारत की वैबसाइट के हिंदी संस्करण का विमोचन किया।



15-16 सितम्बर, 2019 को कोवल्लम, तिरुवनंतपुरम में पर्यटन मंत्रियों के सम्मेलन, 2019 में केरल के मुख्यमंत्री श्री पिनाराई विजयन ने पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल को स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री पी. रामकृष्णन और केरल के पर्यटन मंत्री श्री के. सुरेन्द्रन भी उपस्थित थे।



पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल 23 सितंबर, 2019 को नई दिल्ली में दीप प्रज्ज्वलित कर इंडिया टूरिज्म मार्ट-2019 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी एवं अन्य गणमान्य अतिथि भी उपस्थित हैं।



23 सितम्बर, 2019 को इंडिया टूरिज्म मार्ट 2019 के उद्घाटन के अवसर पर सम्बोधित करते हुए माननीय मंत्री जी। इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, महानिदेशक (पर्यटन) श्रीमती मीनाक्षी शर्मा तथा अन्य गणमान्य भी मंच पर आसीन थे।





24 सितंबर, 2019 को नई दिल्ली में इंडिया टूरिज्म मार्ट-2019 के दौरान एक प्रदर्शनी के अवसर पर माननीय मंत्री जी, पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण।



27 सितंबर को नई दिल्ली में पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने के लिए भारत और पराग्वे के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर पराग्वे की पर्यटन मंत्री सुश्री मोंतिएल डे' अफरा और पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री जी ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए।



अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं, ब्लॉगर्स, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित हैं।

कृपया ध्यान दें

- ❖ लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- ❖ साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थिति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर अथवा पर्यटन गंतव्य, विशेषकर जिसके बारे में अधिक जानकारी नहीं हो, के लिए भेजे गए लेख में अधिकतम शब्दों का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरुचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र/रेखाचित्र (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- ❖ लेख सरल भाषा में लिखा हो।
- ❖ ई-मेल से भेजे जाने वाले लेख OPEN FILE में तथा फोटोग्राफ, यदि कोई हो, .jpg अथवा .png में ही भेजें। अन्यथा सामग्री स्वीकार नहीं की जा सकेगी।
- ❖ कोई भी लेख/सामग्री pdf में भेजने का कष्ट नहीं करें।
- ❖ WhatsApp के द्वारा भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं की जाएगी।
- ❖ कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित हो। टाइप किया लेख (फॉन्ट सहित) ई-मेल माध्यम से भेजें।
- ❖ लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी उत्तरदायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- ❖ लेख इस पते पर भेजें : प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय, कमरा नं० 18, सी-1 हटमेंट्स, दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली-110011, ई-मेल : editor.atulyabharat@gmail.com है।





समझदारी से काम लें : स्वच्छता अभियान में सहयोग दें ।





अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी-1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली-110011, ई-मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363

24x7